Only for Private Circulation

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ

गुलटेकडी, पुणे-४११०३७

दूरशिक्षण विद्याशाखा

अनुवाद विज्ञान

H-204

मार्गदर्शक पुस्तिका

एम. ए. हिंदी - भाग २

प्रस्तावना

दूर शिक्षा की व्याप्ती असीम है । इसने उन लोगों के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिये हैं, जिन्हे उच्च शिक्षा का मौका नकारा गया । आज जब कि ग्यान का लगातार बढना समय के साथ रहेने के लिए अनिवार्य है, दूर शिक्षा तेजी से होते तकनिकी विकास की सहायता से सभी सीमाएं लांघ रही है । छात्र भले ही दुरी पर हों हमारें विद्वान प्राध्यापकों द्वारा रचित अध्ययन साहित्य उनको शिक्षा का एक परिपूर्ण अनुभव देगा ।

एम. ए. हिंदी भाग २ में आप कुछ आधुनिक कवियों की रचनाओं को पढेंगे । इस के अलावा इस साल आप हिंदी साहित्य के इतिहास का अध्ययन करेंगे जो विविध काल में रचि सभी प्रकार के हिंदी साहित्य का ब्योरा लेगा । 'भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा' यह विषय आपको हिंदी भाषा के तत्त्व और घटकों से अवगत कराएगा । तथा 'अनुवाद विज्ञान' यह वैकल्पिक विषय आपको भाषा के एक नए पहेलू और कार्य से परिचित कराएगा ।

यह अध्ययन साहित्य परीक्षा में आपकी मदद करने के साथसाथ आपमें हिंदी के आधुनिक काव्य तथा हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रति रुचि निर्माण करे, आपको हिंदी भाषा के विविध तत्त्वों, घटकों तथा पहेलूओं के प्रति सजग बनाए इस आशा के साथ हम यह अध्ययन साहित्य आपको सौंप रहे हैं ।

हम विद्यापीठ के मा. कुलगुरू डॉ. दीपक तिलक, दूरशिक्षण विद्याशाखा के अधिष्ठाता श्री. रत्नाकर चांदेकर तथा कुलसचिव, डॉ. उमेश केसकर इनके आभारी हैं जिन्होंने हर कदम पर हमें प्रोत्साहित किया तथा हमारा मार्गदर्शन किया ।

अपनी व्यस्तता से समय निकालकर इस अध्ययन साहित्य को तय्यार करनेवाले डॉ. सु. मो. शहा के भी हम बहुत आभारी हैं ।

आप सभी को हार्दीक शुभकामनाएँ ।

प्रा. नीलिमा मेहता
विभागप्रमुख, दूरशिक्षण विद्याशाखा

प्रास्ताविक

आधुनिक युग अनुवाद का भी युग है। विज्ञान के कारण संसार के दूर-दूर के देश एक दूसरे के नजदीक आ रहे हैं। ज्ञान-विज्ञान विश्व की विभिन्न भाषाओं में भरा पड़ा है। समय और युग के साथ कदम मिलाकर चलने - ज्ञान प्राप्त करने से ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रगति, उन्नति हो सकती है। परंतु व्यक्ति को विश्व की विकसित सभी भाषाओं को जानना, पढ़ना और उनका प्रयोग करना असंभव है। अनुवाद ही विश्व में फैले हुए ज्ञान-विज्ञान को पाने का सबसे सरल मार्ग है। प्राचीन भाषाओं की शाश्वत गौरवपूर्ण कृतियों का, विश्व साहित्य के चिरंतन सार्वमौलिक ग्रंथों का तथा वर्तमान युग की सभी प्रकार की नवीनतम रचनाओं का अनुवाद किए बिना किसी भाषा की, उसके साहित्य की, राष्ट्र की समृद्धि संभव नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक, भावनिक आदान-प्रदान, विश्वबंधुता मानव प्रगति आदि के लिए अनुवाद अत्यंत उपयुक्त और महत्वपूर्ण है।

अनुवाद के इसी युगीन महत्व के कारण सभी विद्यापीठों ने इस विषय को अपने पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। 'टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ' ने भी अपने एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रम में इस महत्वपूर्ण विषय का अंतर्भाव किया है। छात्रों की सभी व्यावसायिक कठिनाइयों को पार करके ज्ञानप्राप्ति की इच्छा और उनकी भरसक सहायता करने के उद्देश्य से प्रस्तुत पुस्तक तैयार की गई है। 'अनुवाद विज्ञान' विषय पढ़ने के मूल उद्देश्य और परीक्षा के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम को सामने रखकर ही पुस्तक बनाई गई है। इसमें अनुवाद विधा के विभिन्न पहलुओं पर सरल शैली में प्रकाश डाला गया है। इसमें सभी मुद्दों के, प्रश्नों के उत्तर आसानी से मिल जाएँगे।

पुस्तक परीक्षा के लिए तो अत्यंत उपयुक्त है ही परंतु अनुवाद करना चाहने वाले नए अनुवादकों को भी इसमें उपयुक्त मार्गदर्शन मिलेगा। इस पुस्तक को मन से पढ़कर अनुवाद सिद्धांतों को जानकर समझकर प्रयोग करने वाले अच्छे अनुवादक बन सकेंगे।

छात्रों को चाहिए कि वे एक-एक अध्याय को मन से पढ़ें, उसमें निहित मुद्दों - भावों को जानें, समझें, उनपर थोड़ा मनन करें, फिर पुस्तक के अंत में दिए प्रश्नों को सामने रखकर उनका लेखन करे। अनावश्यक विस्तार, अस्पष्टता, संदर्भहीन लेखन को टाल दें। परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए स्थिरचित्त से वाचन-मनन-लेखन आवश्यक है।

पुस्तक में छात्रों की सुविधा के लिए विषय के उद्देश्य, प्रत्यक्ष पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम का आवश्यक सरल विवेचन, प्रश्नपत्र का स्वरूप और अंत में प्रश्नमंजूषा भी दी है। प्रश्नों की संख्या देखकर मत घबराइए। इसमें दिए गए एक ही भाव के प्रश्न अलग-अलग शब्दों में कैसे पूछे जाते हैं उसके ये नमूने हैं।

हमें विश्वास है कि यह पुस्तक दूर शिक्षण के सभी श्रेणी के छात्रों को निश्चित रूप से उपयुक्त साबित होगी। विषय की तथा जीवन की हर परीक्षा में आपको सफलता मिले।

प्राचार्य सु. मो. शाह

अनुक्रम

क्र.	पाठ	
1.	अनुवाद : स्वरूप, परिभाषा	5
2.	अनुवाद : व्याप्ति, आवश्यकता	9
3.	अनुवाद : कला, विज्ञान या शिल्प	12
4.	अनुवाद के प्रकार	15
5.	अनुवाद का लिखित तथा मौखिक स्वरूप	20
6.	अनुवाद का महत्व और उपयोगिता	25
7.	अनुवादक की योग्यता/गुण	30
8.	अनुवाद प्रक्रिया	34
9.	अनुवाद कार्य में सहायक साधन	39
10.	अनुवाद और लिप्यंतरण	43
11.	अनुवाद और भाषाविज्ञान	46
12.	अनुवाद और रूपविज्ञान	47
13.	अनुवाद और वाक्यविज्ञान	51
14.	अनुवाद और अर्थविज्ञान	56
15.	अनुवाद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष	60
16.	रचनात्मक साहित्य का अनुवाद	63
17.	वाणिज्य और व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद	66
18.	बैंकों में हिंदी अनुवाद	68
19.	वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद	72
20.	कंप्यूटर (यांत्रिक/मशीनी) अनुवाद	74
21.	मुहावरों का अनुवाद	78
22.	कहावतों या लोकोक्तियों का अनुवाद	84
23.	अलंकारों का अनुवाद	92
24.	काव्यानुवाद	95
25.	नाट्यानुवाद	98
26.	अनुवाद कार्य में शैली विचार	100
27.	दुभाषिया	103
28.	अनुवाद समीक्षा/मूल्यांकन	105
	अनुवाद प्रश्नमंजूषा	107
	संदर्भ ग्रंथ	110

1. अनुवाद : स्वरूप, परिभाषा

अनुवाद मनुष्य के जीवन के साथ जुड़ी हुई एक सहज एवं स्वाभाविक प्रक्रिया है। आज विज्ञान के प्रचार और प्रसार के कारण विश्व नजदीक आ गया है। विशाल विश्व में भिन्न-भिन्न प्रदेश और प्रकृति के कारण विविध भाषाओं का स्वाभाविक निर्माण हुआ है। भिन्न भाषी होने पर भी मनुष्य की एक दूसरे को समझने की तीव्र इच्छा, अन्य भाषी के सोच-विचार को जानने की जिज्ञासा तथा अपनी बातें दूसरों तक और दूसरों की अपने लोगों तक पहुँचाने की एक प्रबल कामना से ही अनुवाद का, अनूदित साहित्य का निर्माण हुआ।

अनुवाद की परंपरा बहुत प्राचीन है। अतीत में शिक्षा का स्वरूप मौखिक था। इसमें गुरु बोलते थे और शिष्य उसे दोहराते थे। इसे 'अनुवदति' कहा जाता था। अर्थात गुरु के पीछे-पीछे बोलना इतना ही उसका रूप सीमित था। इस दृष्टि से किसी बात को दुहराकर याद करना याने 'अनुवाद' कहा जा सकता है।

व्युत्पत्ति :

अनुवाद शब्द संस्कृत भाषा का है। उसका संबंध 'वद्' धातु से है। 'वद्' याने कहना या बोलना। इस 'वद्' धातु में प्रत्यय जुड़ने से 'वाद' शब्द बना और उसमें 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ। इस 'अनुवाद' शब्द का अर्थ है - 'पुनः कथन' या किसी के कहने के बाद कहना। संस्कृत साहित्य में अनुवाद का अर्थ था – 'प्राप्तस्य पुनः कथने' अर्थात 'पश्चात्कथन', 'पुनःकथन', 'ज्ञात को कहना', 'समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन', 'सार्थक आवृत्ति'। इन अर्थों में अनुवाद शब्द का प्रयोग होता था। आज अनुवाद का अर्थ 'पुनःकथन' ही है। "अनुवाद : एक भाषा में किसी के द्वारा कही गई बात का किसी दूसरी भाषा में 'पुनःकथन'।"

परिभाषाएँ :

अनुवाद की एक सर्वसामान्य परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है– "एक भाषा की किसी सामग्री का किसी दूसरी भाषा में रूपांतर ही अनुवाद है।" इससे स्पष्ट होता है कि स्रोत याने एक, मूल भाषा में व्यक्त विचारों को लक्ष्य अर्थात दूसरी, अभिप्रेत भाषा में व्यक्त करना अनुवाद है।

इसी आशय को व्यक्त करने वाली एक परिभाषा इस प्रकार है - "अनुवाद का मतलब है किसी एक बात को एक भाषा से दूसरी भाषा में उतारकर कहना।" - 'अनुवाद कला : कुछ विचार'।

'अच्छी हिंदी' में लिखा है - "एक भाषा में प्रकट किए गए विषय को दूसरी भाषा में रूपांतरित करने को अनुवाद कहते हैं।"

डॉ. महेंद्र चतुर्वेदी के शब्दों में "अनुवाद को हम दो भाषाओं का सन्निकटन अथवा निकटतम समतुल्यता कहते हैं।"

अज्ञेय जी के अनुसार – "हमारे विचारों तथा तात्पर्य को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करना ही अनुवाद है।"

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि स्रोत भाषा के विचार लक्ष्य भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है।

पाश्चात्य विद्वानों ने अनुवाद पर काफी विचार किया है। अनुवाद के लिए अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द है Translation ऑक्सफर्ड डिक्शनरी में इसका अर्थ इस प्रकार मिलता है 'The action of process of turning from one language into another.'

Random House Dictionary के अनुसार "Translation is a rendering of some ideas in a diffierent language from the oringinal." अर्थात स्रोत भाषा के विचारों को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करना ही अनुवाद है।

पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिक कैटफोर्ड Catford का कथन है – 'Translation is the replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language." अर्थात एक भाषा में व्यक्त सामग्री का दूसरी भाषा में समतुल्य प्रतिस्थापन या रूपांतरण ही अनुवाद है। दूसरे शब्दों में "अनुवाद एक भाषा के पाठपरक उपादानों को दूसरी भाषा में समतुल्यता के आधार पर प्रतिस्थापन है।"

Foresten के शब्दों में – "Translation is the transference of the content of a text from one language into another, bearing in mind that we can not always dissociate the content from the form. इस परिभाषा में भी ढाँचे को कायम रखते हुए समतुल्य अभिव्यक्ति पर ही बल दिया गया है।

यूजीन ए. नाइडा [E. A. Nida] अमरीकी विद्वान हैं। उन्होंने अनुवादक को एक विद्वान का पद दिलाया। अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष के विषय में वे एक प्रामाणिक आचार्य माने जाते हैं। उन्होंने अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार दी है - "Translation consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style." अर्थात अनुवाद का संबंध स्रोत भाषा के संदेश का पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा में निकटतम, स्वाभाविक तथा तुल्यार्थक उपादान प्रस्तुत करने से होता है।

स्वरूप :

इन सभी परिभाषाओं को देखने पर एक बात स्पष्ट होती है कि स्रोत भाषा में व्यक्त विचार, भाव लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करना ही अनुवाद है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा भिन्न-भिन्न होती है। दोनों की दृष्टियाँ भी अलग-अलग होती हैं। अनुवाद में कैटफोर्ड ने प्रतिस्थापन पर जोर दिया। प्रतिस्थापन या रूपांतर करते समय लक्ष्य भाषा की प्रवृत्तियों का ध्यान रखना पड़ता है। दोनों भाषाओं के मूलगत अंतर के कारण प्रतिस्थापन या रूपांतर शत-प्रतिशत नहीं हो सकता जैसा कि कार्बन कापी या फोटो हो। इसी लिए नाइडा ने निकटतम उपादान प्रस्तुत करने पर बल दिया था। इसमें भी पहले अर्थ में निकटता और बाद में शैली की निकटता आवश्यक है। उन्होंने अभिन्नार्थक की बात नहीं कही, अपितु तुल्यार्थक उपादान की बात कही है।

समतुल्य या समान अभिव्यक्ति की बात भी इतनी सरल या आसान नहीं है। इसके कारण हैं। प्रत्येक भाषा विशिष्ट परिवेश में पनपती है। ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्यरचना, मुहावरे, कहावतें आदि कई बातों में प्रत्येक

भाषा अपना अलग महत्व रखती है। आकृतिमूलक भिन्नता के अलावा भाषाओं के आर्य, सामी, द्रविड आदि अलग-अलग परिवार होते हैं। भिन्न परिवार की भाषाओं में अनुवाद कार्य सरल नहीं है। प्रादेशिक, सामाजिक, सांस्कृतिक भिन्नता भी एक बाधा है। जैसे 'यज्ञोपवीत संस्कार' का अंग्रेजी में अनुवाद होगा - 'थ्रेडिंग सेरिमनी'। उसका संबंध केवल 'जनेऊ' से है। संस्कार की धारणा उसमें नहीं आती। वैसे ही 'अक्षत' शब्द पावित्र्य, मांगल्य को व्यक्त करता है, उसका अंग्रेजी पर्याय 'Rice', वह भाव प्रकट नहीं करता। कभी-कभी कुछ शब्द भी ऐसे होते हैं जिनके प्रतिशब्द नहीं पाए जाते। जैसे, 'माँग भरना'। ऐसे समय सांकेतिक अर्थों को स्पष्ट करके ही अनुवाद करना पड़ता है। दो भाषाओं में पूर्णतः समानता नहीं होती। प्रत्येक शब्द का अर्थ प्रसंग, परिस्थिति आदि के अनुसार ध्वनित होता है।

समतुल्य अभिव्यक्ति की यह बात काव्यानुवाद के समय अड़चन पैदा करती है। कविता में अनेक प्रतीकात्मक, सांकेतिक-लाक्षणिक बातें होती हैं। कवि की प्रतिभा को अनुवाद में उतारना कठिन कार्य है। समान अभिव्यक्ति की बात उठाने से कभी-कभी अर्थ विस्तार अथवा अर्थ संकोच की संभावना भी रहती है। अभिव्यक्ति एवं अर्थ के स्तर पर स्रोत तथा लक्ष्य भाषा प्रायः समान नहीं होती। अनुवाद में दोनों की एक समानता समझौता मात्र है। परंतु यह समानता की निकटता जितनी अधिक होती है, अनुवाद उतना ही सफल होता है। जैसे - हिंदी में 'लड़का गिरा', 'लड़का गिर पड़ा', 'लड़का गिर गया' इन तीनों वाक्यों के अर्थ में सूक्ष्म अंतर है। परंतु अंग्रेजी में इसका अनुवाद केवल 'A boy fell' होगा। हिंदी की 'पड़ना', 'जाना' जैसी सहायक क्रियाओं का अर्थ अंग्रेजी में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

निकटतम अभिव्यक्ति के कारण और एक बात आदर्श अनुवाद में बाधक रहती है। अनुवादक कभी-कभी समान अभिव्यक्ति की खोज में घटिया अनुवाद कर देता है। वह स्रोत भाषा के कुछ ऐसे प्रयोग करता है जो लक्ष्यभाषा के प्रतिकूल हो। जैसे - 'The man who fell from the tree died in the hospital.' इसका अनुवाद : 'वह आदमी, जो पेड़ से गिरा था, अस्पताल में मर गया।' इसमें 'वह' ' The' का अनुवाद मात्र है, जिसके लिए हिंदी में कोई स्थान है।

समन्वित, समीचीन परिभाषा :

अनुवाद के इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए डॉ. भोलानाथ तिवारी जी ने कहा है - "एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।" इस परिभाषा में अनुवाद का स्वरूप स्पष्ट होता है। इसकी तीन विशेषताएँ भी स्पष्ट होती हैं –

1. अनुवाद का उद्देश्य : एक भाषा में व्यक्त भाव या विचार लक्ष्य भाषा में यथासंभव मूल रूप में लाना।
2. अनुवाद के लिए स्रोत भाषा में भावों या विचारों को व्यक्त करने के लिए जिस अभिव्यक्ति का प्रयोग किया गया है, उसके निकटतम अभिव्यक्ति की खोज लक्ष्य भाषा में होनी चाहिए।
3. स्रोत भाषा में व्यक्त विचारों को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करते समय उनकी अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल हो, सहज हो। उसपर किसी प्रकार से स्रोत भाषा का प्रभाव न हो।

शायद इसी को लक्ष्य कर अनुवाद को एक 'कस्टम हाऊस' कहा गया है जिससे होकर स्रोत भाषा के प्रयोग का विदेशी माल लक्ष्य भाषा में अन्य स्रोतों की तुलना में अधिक आ जाता है, यदि अनुवादक अपेक्षित सतर्कता न बरते।

डॉ. भोलानाथ तिवारी जी ने अनुवाद की और एक परिभाषा दी है। उनके मतानुसार - "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन है।" अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम, समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग करना अनुवाद है।

अनुवाद की कतिपय परिभाषाओं को तथा उसके स्वरूप को जानने के बाद अंत में हम कह सकते हैं कि स्रोत भाषा के विचारों-भावों को लक्ष्य भाषा में उसकी प्रकृति के अनुसार सहजता से निकटतम समतुल्यता के साथ अभिव्यक्त करना ही अनुवाद है।

2. अनुवाद : व्याप्ति, आवश्यकता

मनुष्य वह भाग्यवान प्राणी है जिसे वाणी का वरदान प्राप्त हुआ है। वाणी के बल पर वह अपनी प्रगति कर सका। इसी वाणी ने आगे चलकर भाषा का रूप धारण किया। प्रकृति भिन्नता के साथ उसकी भाषा भी अलग-अलग रूप धारण करती गई। बुद्धिमान प्राणी होने के नाते दूसरे को जानने, परखने की दुर्दम्य इच्छा यह मनुष्य की विशेषता रही, तथा विचारों के इस आदान-प्रदान के लिए भिन्न भाषा एक अड़चन बन गई। शायद तभी से मनुष्य को अनुवाद की आवश्यकता महसूस होने लगी।

अनुवाद एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतर है। इसे अधिक स्पष्ट करना हो तो कह सकते हैं कि एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है। परंतु स्रोत भाषा के व्यक्त भावों को लक्ष्य भाषा में व्यक्त करना बड़ा कठिन कार्य है, क्योंकि हर भाषा विशिष्ट परिवेश में पनपती है, और उसकी एक निजी संरचना होती है।

आधुनिक युग में मानव एक-दूसरे पर निर्भर है। मात्र किसी भी व्यक्ति के लिए सभी भाषाओं को आत्मसात करना संभव नहीं है। मानवजाति अपने पूर्वजों के भावों और विचारों से परिचित होने के लिए उन्हें अपनी वर्तमान भाषा में लाने की इच्छुक रहती है और यह प्रक्रिया अनुवाद के कारण ही सफल होती है।

अनुवाद की अनिवार्यता प्राचीन काल से ही महसूस हुई थी। बैबिलोन संस्कृति बहुभाषी थी और उनके प्रशासनिक कार्यकलापों में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान था। जर्मनी के दार्शनिक **शॉपेनहॉवर** ने उपनिषदों का अनुवाद किया था। आगे चलकर पाश्चात्य विद्वानों ने तो अनुवाद कार्य में बड़ी सफलता पाई। आधुनिक युग तो विज्ञान का है, प्रगति तथा विकास का है। अतः वर्तमान स्थिति में तो अनुवाद की आवश्यकता अधिक गहरी महसूस हो रही है।

अनुवाद की प्रक्रिया मनुष्य के जीवन से जुड़ी है। मनुष्य के आपसी बातचीत के लिए, एक-दूसरे के विचारों को समझने, समझाने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है। वास्तव में यह अनुवाद का बुनियादी उद्देश्य है। आज इस आवश्यकता की सीमा बढ़ रही है। प्रगति के नए-नए क्षेत्र निर्माण हो रहे हैं और हर पथ पर अनुवाद अपनी सफल भूमिका निभा रहा है। आपसी समन्वय, भावात्मक एकता, ज्ञानवृद्धि, संस्कृतिपरिचय, राष्ट्रीय एकता, शोधकार्य, व्यापारवृद्धि, विधि आदि क्षेत्रों में अनुवाद के बिना कार्य संभव नहीं है।

अनुवाद का सबसे बड़ा क्षेत्र बातचीत का है। हर व्यक्ति मातृभाषा में बोलता है। लेकिन अपने भिन्न भाषी साथियों से बातचीत करने की, उनके भावों को जानने की इच्छा रखता है। ऐसे समय अनुवाद का ही सहारा लेना पड़ता है। बातचीत के प्रसंग कई होते हैं। रोजी-रोटी कमाने लोग दूर-दूर तक जाते हैं, तब रोजमर्रा जिंदगी में भाषा की समस्या निर्माण होती है। इस समस्या का समाधान केवल अनुवाद ही है।

पत्राचार में भी अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती है। यह पत्राचार विविध क्षेत्रों में विविध स्तरों पर होता है जैसे कि व्यापार, व्यवसाय प्रशासन, न्यायालय, शोधकार्य आदि। अगर महाराष्ट्र का मनुष्य केरल में पत्र भेजे तो उसे समझने के लिए अनुवाद आवश्यक है। व्यापार में तो आए दिन पत्राचार का सहारा लेना पड़ता है।

अनेक विदेशी कंपनियों से संबंध रखना पड़ता है। अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच, जर्मन, जापानी जैसी भाषाओं में भी लिखा-पढ़ी करनी पड़ती है। ऐसी स्थिति में अनुवाद के बिना काम नहीं चल सकता।

भारत जैसे संघराज्य में आज भी अदालतों की भाषा प्रायः अंग्रेजी रही है। हमारे यहाँ के कानून भी अंग्रेजी भाषा में बनाए, लिखे, छपे तथा सुने-सुनाए जाते हैं। मुकदमों के आवश्यक प्रारंभिक कागजात प्रादेशिक भाषा में होते हैं तथा लोग उसी भाषा में अपनी बात प्रस्तुत करना या उसका निर्णय सुनना पसंद करते हैं। अतः उनका अनुवाद करना आवश्यक हो जाता है।

भारत के अधिकांश कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी है। वहाँ के कार्य, पत्र, परिपत्र सब अंग्रेजी में ही होते हैं। सामान्य जनता में अंग्रेजी का इतना प्रचार-प्रसार नहीं हुआ है। अतः जनतासंपर्क के लिए अनुवाद आवश्यक है।

शिक्षा के क्षेत्र में तो अनुवाद की बहुत बड़ी माँग है। शिक्षा के सभी क्षेत्रों में - विज्ञान, गणित, समाज विज्ञान इ.– विदेशी भाषाओं में उत्तम ग्रंथ लिखे गए हैं। उनका अनुवाद किए बिना ज्ञान की वृद्धि संभव नहीं है। पाश्चात्य विद्वान भी भारतीय संस्कृति तथा भारत में विकसित ज्ञान विधाओं का परिचय पाने के लिए अनुवाद का सहारा लेते हैं। सुश्रुत चार्वाक जैसे विद्वानों के आयुर्वेद ग्रंथों का अनुवाद इसका प्रमाण है।

आज विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में भारी प्रगति हुई है। विकासशील राष्ट्रों में इसका प्रचार और प्रसार केवल भाषा के माध्यम से ही होता है। आज सारी विश्वभाषाओं में प्राप्त वैज्ञानिक सामग्री का अनुवाद अंग्रेजी में किया जाता है। वही महत्व रूसी, जापानी भाषा को भी प्राप्त है। अगर इसे आत्मसात करना है तो अनुवाद के बिना आगे बढ़ नहीं सकते।

संचार के माध्यमों से विश्व नजदीक आ रहा है। इनमें मुख्य हैं - समाचारपत्र, रेडियो तथा दूरदर्शन। समाचारपत्रों के पास जो समाचार, सरकारी सूचना, न्यूज एजंसिज, प्रादेशिक संवाददाताओं द्वारा आते हैं, उनमें प्रादेशिक भाषा के समाचार छोड़ दे तो शेष सामग्री अन्य भाषा से अनूदित करनी पड़ती है।

रेडियो अथवा आकाशवाणी पर भारत में प्रचलित प्रमुख भाषाओं में वार्ता प्रसारित की जाती है। दूरदर्शन की भी यह स्थिति है। वहाँ भी भाषाओं में आदान-प्रदान का कार्य चलता है, अर्थात वहाँ अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती है।

साहित्य तो अनुवाद कार्य का एक प्रमुख क्षेत्र है। साहित्यकार की प्रतिभा देश और भाषा की सीमा के परे होती है। अनुवाद के सहारे ही हम अन्य भाषी प्रतिभाओं को जान सकते हैं। साहित्य के सभी क्षेत्रों में आज बड़े पैमाने पर अनुवाद हो रहे हैं। केवल पाश्चात्य ही नहीं तो संस्कृत, पाली, लैटिन जैसी मूल भाषाओं के ग्रंथों के भी अनुवाद हुए हैं, हो रहे हैं। इसी साहित्य को दूरदर्शन ने भी लोकाभिमुख किया है। कभी अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद करते हुए, तो कभी सब टायटल्स देते हुए विश्व भर का साहित्य लोगों के सामने आ गया है। विश्व की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृतियाँ, साहित्यिकों के विचार अनुवाद के माध्यम से ही हम जान पाते हैं। साहित्य कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन करने के हेतु भी आज अनुवाद की अनिवार्यता है।

साहित्य की समृद्धि के साथ-साथ भाषा की समृद्धि भी अनुवाद के कारण संभव होती है। कई बार अनुवाद करते समय स्रोत भाषा में समतुल्य शब्द न मिलने पर लक्ष्य भाषा के शब्द को उठाया जाता है। उदाहरणार्थ संस्कृत के 'मोक्ष','ब्रह्म', 'यज्ञ' जैसे शब्द पाश्चात्यों ने भी वैसे ही अपनाए हैं।

विश्व में शांति बनाए रखने हेतु आज अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर बल दिया जाता है। विभिन्न राजदूत अथवा प्रतिनिधियों का संवाद मौखिक अनुवाद के सहारे होता है। ऐसे वक्त दुभाषिया अथवा अनुवादक के माध्यम से उनकी चर्चा सफल कराने का प्रयास किया जाता है। आज तो ऐसी प्रगति हुई है कि वक्ता चाहे किसी भाषा में भाषण क्यों न दें, श्रोता वे विचार संगणक की सहायता से तुरंत अपनी भाषा में सुन सकता है।

धर्म का क्षेत्र भी अनुवाद से अछूता नहीं है। लोगों पर धर्म का, धर्म की भाषा का गहरा प्रभाव रहता है। धर्मग्रंथ भी उसी भाषा में होते हैं, जैसे हिंदुओं के संस्कृत में, बौद्धों के पाली में, मुसलमानों के अरबी-फारसी में आदि। विभिन्न धर्मों को जानने के लिए और विशेषतः सर्वधर्म समभाव की भावना को विकसित करने के लिए अनुवाद अनिवार्य है।

अनुवाद सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। धर्म, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, व्यवसाय, राजनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध है। विश्व के विभिन्न भौगोलिक खंडों में संस्कृति का जो विकास हुआ है वह एक दूसरे का पूरक है। विश्वसंस्कृति के निर्माण में विभिन्न संस्कृतियों में आदान-प्रदान आवश्यक है और यह काम केवल अनुवाद के सहारे ही संभव है। आज पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति की ओर झुक गई है। यह इसी बात का प्रमाण है। अनुवाद के सहारे विश्वसाहित्य का निर्माण हो रहा है। जर्मन कवि 'गटे' को विश्वसाहित्य की परिकल्पना को विकसित करने की प्रेरणा 'शाकुंतल' के अनुवाद को पढ़कर मिली थी।

भारत जैसे विकासशील, बहुभाषा भाषी संघराज्य में भावात्मक एकता बनाए रखने के लिए, विज्ञान को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए अनुवाद अनिवार्य है। जब भारत के छोटे-छोटे प्रदेशों में अनेकविध भाषाएँ, बोलियाँ उपयोग में हैं तब तो अनुवाद का क्रम अग्रणी है।

जिस प्रकार किसी देश की अंतर्गत प्रगति के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण और आवश्यक है, उसी प्रकार पूरे मानव समाज की प्रगति के लिए भी वह अनिवार्य है। आज तो मानव बहुत कुछ प्रगति कर चुका है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना साकार हो रही है। इस कल्पना को प्रत्यक्ष में लाने का काम अनुवाद कर रहा है। 'अनुवाद' एक ऐसा सेतुबंधन का कार्य है जिसके बिना विश्व संस्कृति का विकास संभव नहीं है। अनुवाद के द्वारा ही मानव इस विश्व कुटुंब में एकता तथा भाईचारे को विकसित करके मानवता के मूल बिंदु तक पहुँचा सकता है। मनुष्य-मनुष्य में निकटता स्थापित करने के लिए आज तो अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण है, उसकी बहुत बड़ी आवश्यकता है। वह इस युग की माँग है।

3. अनुवाद : कला, विज्ञान या शिल्प

साहित्य के निर्माण के कारण, प्रेरणाएँ और साहित्य निर्माण की प्रक्रिया के संबंध में जनसाधारण में जिज्ञासा, नवीनता, श्रद्धामय आदर के भाव पाए जाते हैं। साथ ही साहित्य सर्जकों में इस उद्यम के संबंध में भी जिज्ञासामय प्रवृत्ति का पाया जाना इस उद्यम को अलौकिक के धरातल पर पहुँचा देता है। प्रतिभा, प्रेरणा, सतत अभ्यास, विवेचनशक्ति, सूक्ष्म निरीक्षण प्रवृत्ति, चिंतनशीलता तथा तादात्म्य प्रवृत्ति आदि विशेषताओं का होना साहित्यकार या कलाकार के सुयोग्य परिचायक है।

कलाकारों की या साहित्यकारों की अपनी-अपनी अलग-अलग पहचानें होती हैं। मूलतः कला की स्वतंत्रता का स्वीकार करने पर भी प्रभूत चिंतन के पश्चात कला सर्जन में एक सुनिश्चित पद्धति का होना जाना जा सकता है। यह कथन कि कला व्यक्तिसापेक्ष है, कुछ सीमा तक साहस का परिचायक है। विश्व की विभिन्न साहित्यिक विधाओं का परिशीलन करने पर यह प्रतीत हुआ है कि कला मुक्त है। साहित्यकारों की स्वतंत्र बोधशक्ति और आत्माभिव्यंजन शक्ति अत्यंत निरंकुश है। संस्कृत के प्राचीन काल में उद्घोषित 'निरंकुशयः कवयः' यह उक्ति कला की स्वतंत्रतापरक होने का साक्षी है।

साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ ललित कलाओं के भिन्न-भिन्न प्रकारों के निर्माण में भी यह तत्व काम करता है। चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला, वादनकला, शिल्पकला का इतिहास इसी कारण अनेक विशेषताओं से भरा पड़ा है। कलाकार की प्रवृत्ति कला के निर्माण में उसकी प्रस्तुति व्यक्तिगत आनंद, सुख और संतुष्टि होने पर भी कलाकार के स्वांतःसुखाय का विस्तार देखा जा सकता है।

अनुवाद कार्य में अनुवादक का इस दिशा में प्रवृत्त होना ही उसकी अंतःप्रेरणा का साक्षी है। अनुवादक के द्वारा स्रोतभाषा की सामग्री का लक्ष्यभाषा में रूपांतरण करते समय इसी सुखद अनुभव का उसे लाभ होता है।

अनूदित रचना एक नया सर्जन ही होती है। अनुवाद कार्य की प्रेरणा भी अनुवादक को कुछ हद तक मूल सर्जक के समान ही प्रेरित करती है। जहाँ अनुवाद कार्य में कलाकार की वृत्ति के दर्शन होते हैं वहाँ यह कार्य निःसंशय कला ही है। अनुवादक के द्वारा अनुवाद का प्रस्तुतीकरण भी कुशल कलात्मकता की माँग करता है। अन्य सभी कलात्मक सर्जक प्रकारों के समकक्ष यद्यपि अनुवाद पूर्णतः कला न होने पर भी अनेक कलात्मक गुणों से समन्वित होता है।

कुछ विद्वानों के अनुसार साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद अपनी एक विशिष्ट अभिव्यक्ति से व्यक्त होता है तब उसे निर्विवाद रूप से कला ही मानकर स्वीकार करना चाहिए। स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में अवतरण आकर्षक, लुभावना, सुशोभक बनाने में कला का तत्व ही महत्वपूर्ण कार्य करता है।

विज्ञान :

विज्ञान किसी भी विषय का व्यवस्थित तथा विशिष्ट ज्ञान है। इसी अर्थ में राजनीति विज्ञान, मानव विज्ञान, भाषा विज्ञान आदि विषयों को विज्ञान माना जाता है। 'अनुवाद विज्ञान' यह शीर्षक ही अपने आपमें सुस्पष्ट, योग्य

बोधक है। अनुवाद प्रक्रिया के अंतर्गत स्रोत भाषा की किसी भी सामग्री का निश्चित चयन, उसका सुयोग्य बोधन, विश्लेषण आदि विशुद्ध वैज्ञानिक प्रक्रिया है। नाइडा के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया की पहली सीढ़ी पाठ विश्लेषण है। पाठविश्लेषण के अंतर्गत पाठपठन के महत्व के साथ-साथ पाठ विश्लेषण का महत्व भी डॉ.भोलानाथ तिवारी ने स्वीकृत किया है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनूद्य सामग्री का पठन भाषिक और वैषयिक अर्थ ग्रहण महत्वपूर्ण होते हैं। आवश्यक होने पर अनूद्य होने वाली सामग्री का सुयोग्य बोधन करा लेने के लिए जानकार से, कोश से सहायता ली जा सकती है। दुरूहता को दूर करके सामग्री के सही आकलन हेतु प्रामाणिक पुस्तकों का सहारा लिया जा सकता है। अर्थ का निश्चित निर्धारण करने के लिए भाषिक, व्याकरणिक (काल, लिंग, वचन आदि), वाक्य गठन के नियमों का योग्य विश्लेषण करना पड़ता है। देश, काल, प्रसंग, संदर्भ आदि को पूर्ण रूप से समझकर अनूद्य सामग्री को ग्रहण किया जाता है। पाठ विश्लेषण के प्रसंग में शब्दों का सम्यक ज्ञान, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य, कथन हेतु तथा कथन शैली का पूरा-पूरा विचार करना होता है। अनुवाद पूर्व की इस चिंतन की प्रक्रिया विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक है।

एक विशिष्ट दृष्टिकोण से अनुवाद विज्ञान अनुप्रयुक्त 'एप्लाइड' भाषा विज्ञान का ही एक अंग है। अनुवाद कार्य में चाहे वह साहित्यिक अनुवाद हो या विषयप्रधान, सूचक 'इन्फरमेटिव' हो एक वैज्ञानिक तटस्थता की आवश्यकता होती है। सूचक साहित्य प्रकार, वैज्ञानिक और तकनीकी आदि के अनुवादों में यह तटस्थता सबकी भलाई के लिए अपेक्षित है।

नाइडा के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण होते हैं। परंतु विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन ये तीनों चरण विशुद्ध रूप से विज्ञानात्मक कार्य के परिचायक हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के पाँच चरण हैं - 1. पाठ पठन, 2. पाठ विश्लेषण, 3. भाषांतरण, 4. समायोजन, 5. मूल से तुलना। इनमें से प्रथम तीन के पालन में विशुद्ध विज्ञानात्मक प्रक्रिया का अधिक समावेश है जबकि समायोजन में मूल से तुलना में अनुवाद की कला के अंश का अधिक समावेश है।

अनुवाद कार्य का अधिकांश अंश वैज्ञानिक प्रक्रिया पर आधारित होने के कारण इसे वैज्ञानिक मानना : अनुवाद विज्ञान मानना अधिक योग्य होगा। इसी संदर्भ में यह कथन विचारणीय लगता है कि हमने अनुवाद को विज्ञान माना तो भी हम मशीनी अनुवाद में पूर्ण सफल हो न पाए।

शिल्प :

अव्यक्त को अधिक सुस्पष्ट एवं प्रभावपूर्ण रूप में प्रस्तुत करने के हेतु विविध कलाओं में, विज्ञान के क्षेत्र में शिल्प का अपना असाधारण महत्व है। विशेषतः साहित्य के क्षेत्र में स्थूल से सूक्ष्म की ओर जब प्रकटीकरण होता है तो उसे समझने, बूझने के लिए शिल्प का ही सहारा लिया जाता है। शिल्प किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति का प्रकट बाह्य अंग है। वैज्ञानिक, तकनीकी तथा व्यावहारिक भौतिक समग्र तर्कनिष्ठ सामग्री के प्रकटीकरण में भी शिल्प का अपना महत्व है। मूर्तिकला, नृत्यकला और स्थापत्यशास्त्र में सौंदर्य तथा उसके अनुपात का जो महत्व होता है वही महत्व साहित्यिक तथा सूचक सामग्री में शिल्प का होता है।

अनूद्य सामग्री में स्रोत भाषा में शिल्प का जो प्रभावपूर्ण स्थान होता है वही अक्षुण्ण साहित्यिक रचनाओं की लक्ष्य भाषा में अनूदित होने पर भी बना रहता है। अनुवाद का स्वरूप चाहे कलात्मक हो चाहे विज्ञान ात्मक, शिल्प के बिना उनका अस्तित्व होता ही नहीं। अनुवाद के क्षेत्र में अनुवाद का कुछ स्वरूप कला है, कुछ शिल्पमय। इस संदर्भ में कुछ द्रष्टव्य बातें :-

1. 19 वीं शताब्दी में पाश्चात्य लेखकों ने अनुवाद कला या विज्ञान इस विषय को लेकर बहुत विचारमंथन किया। उनका उद्देश्य था अनुवाद के स्वरूप का निश्चित निर्धारण। एक ख्यातनाम अंग्रेजी लेखक थिओडर साँवरी ने अनुवाद को कला के रूप में स्वीकार किया। ऐरिक जा बसन ने अनुवाद को क्राफ्ट कौशल माना। अन्य विद्वानों ने अनुवाद को अनुवाद विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। हार्स्ट फ्रेंज का कथन इस संदर्भ में द्रष्टव्य है : भाषांतर - 'ट्रांसलेशन' यह कला है। पर वह सृजनशील कला नहीं है। साथ ही वह अनुकरणात्मक कला भी नहीं है। अनुवाद इन दोनों के बीच में से कहीं कुछ है। अर्थात इन दोनों के बीच में है। ललितेतर सामग्री का अनुवाद केवल शास्त्र है, विज्ञान है। ललितेतर कलाकृतियों का आशय निश्चित किया जाता है। ललित कला कृतियों के निर्माण में सर्जनशील भाषिक ज्ञान या कलात्मक दृष्टि इनको परखने के सुनिश्चित मापदंड नहीं है। इसी कारण ललित सामग्री के अनुवाद कला ही माने जाते हैं।

2. रूपवादी आचार्यों के अनुसार अनूदित कला नया रूप है।

3. अनुवाद कार्य किसी प्रेरणा से प्रेरित होता है - कलाकार की वृत्ति के दर्शन अनुवाद में होते हैं। प्रस्तुतीकरण में कला का समावेश होता है।

4. वस्तुतः सभी अनुवाद में पुनःसर्जन होता ही है। लेकिन शास्त्र साहित्य - वैज्ञानिक साहित्य के बारे में इस मत को कुछ विद्वान ग्राह्य नहीं मानते।

5. अंग्रेजी कवि, पत्रकार एजरा पाउण्ड के अनुसार साहित्यिक अनुवाद एक साहित्यिक पुनर्सर्जन ही होता है।

प्रत्येक कला के लिए प्रायः कुछ शिल्प की तथा प्रत्येक शिल्प के लिए कुछ कला की अपेक्षा होती है। उसी तरह प्रायः अनुवाद में एक सीमा तक शिल्प तथा कला दोनों की अपेक्षा होती है। अतः कलाकार अनुवादक, शिल्पी भी होता है और शिल्पी अनुवादक, एक सीमा तक कलाकार भी होता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है और शिल्प भी है।

4. अनुवाद के प्रकार
प्रक्रिया, गद्य-पद्य तथा विधा के आधार पर

अनुवाद के अनेक प्रकार हो सकते हैं। इन प्रकारों के प्रमुख चार आधार हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद का वर्गीकरण इस प्रकार किया है :-

(1) गद्य-पद्य के आधार पर।

(2) साहित्यिक विधाओं के आधार पर।

(3) विषय के आधार पर।

(4) अनुवाद की प्रकृति के आधार पर।

उपर्युक्त अनुवाद के प्रकारों में प्रारंभिक तीन प्रकार बाह्याधार हैं तो चौथा प्रकार आंतरिक है। इनमें अंतिम प्रकार अधिक सार्थक है। इन आधारों पर अनुवाद के अनेक प्रकार किए जा सकते हैं।

1. गद्य-पद्य होने के आधार पर अनुवाद :

(1) गद्यानुवाद, (2) पद्यानुवाद, (3) मुक्त छंदानुवाद।

(1) **गद्यानुवाद** - नाम से स्पष्ट है कि यह अनुवाद गद्य में होता है। अधिकतर मूल गद्य का गद्य में ही अनुवाद किया जाता है, किंतु यह अनिवार्य भी नहीं है। मूल गद्य का पद्य या मूल पद्य का गद्य में अनुवाद किया जा सकता है। ऐसे अनुवाद अनेक भाषाओं में हुए हैं।

(2) **पद्यानुवाद** - मूल पद्य या गद्य का पद्य में अनुवाद करना। इसे ही छंदबद्ध अनुवाद या छंदानुवाद भी कहते हैं।

(3) **मुक्त छंदानुवाद** - यह अनुवाद मुक्त छंद में होता है। मूल सामग्री छंदबद्ध या मुक्त छंद में होने पर 'मुक्त छंदानुवाद' किया जा सकता है।

2. साहित्यिक विधाओं के आधार पर अनुवाद :

(1) काव्यानुवाद, (2) नाटकानुवाद, (3) कथानुवाद, (4) अन्य विधाएँ।

(1) काव्यानुवाद - काव्य रचना का अनुवाद इसके अंतर्गत आता है। यह अनुवाद गद्य, पद्य या मुक्त छंद में भी हो सकता है। अधिकतर काव्य का अनुवाद पद्य में ही किया जाता है। काव्य का अनुवाद हो सकता है या नहीं, इस बात को लेकर विवाद है किंतु काव्यानुवाद हुए हैं, होते रहे हैं और हो सकते हैं। अवश्य उसमें अनंत कठिनाइयाँ निर्माण होती हैं ।

(2) नाटकानुवाद - किसी नाट्य का नाट्य रूप में अनुवाद इसके अंतर्गत आता है। आजकल साहित्य के अन्य प्रकारों से भी नाटक के रूप में अनुवाद या रूपांतरण हो सकता है। किसी कहानी या उपन्यास

की कथा के आधार पर नाटक के रूप में अनुवाद होते हैं। प्रेमचंद की कुछ कथाओं का नाटक के रूप में अनुवाद हुआ है। स्वयं लेखिका मन्नू भंडारी ने अपने 'महाभोज' उपन्यास का नाट्यरूपांतर किया है। नाटक का नाटक के रूप में अनुवाद करना कठिन होता है, क्योंकि उसे पठनीय होने के साथ-साथ रंगमंच के अनुकूल भी होना आवश्यक है। इसी कारण रंगमंच की पूर्णरूपेण जानकारी रखने वाला ही सफल नाटकानुवाद कर सकता है।

(3) कथानुवाद - कथा साहित्य का अर्थात् उपन्यास और कहानी का कथा साहित्य में याने उपन्यास और कहानी में अनुवाद। उपन्यास या कहानी का उपन्यास या कहानी में अनुवाद काव्यानुवाद या नाटकानुवाद की तुलना में सरल होता है।

(4) अन्य विधाएँ - इस दृष्टि से साहित्य की अन्य विधाओं के आधार पर भी अनुवाद के भेद किए जा सकते हैं। जैसे निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज, यात्रावर्णन, समीक्षा आदि के अनुवाद।

3. **विषय के आधार पर अनुवाद -** विषय के आधार पर अनुवाद के अनेक भेद हो सकते हैं। जैसे -

- ललित साहित्य का अनुवाद,
- विधि साहित्य का अनुवाद,
- धार्मिक एवं पौराणिक साहित्य का अनुवाद,
- प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद,
- समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद,
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का अनुवाद,
- पत्रकारिता से संबद्ध अनुवाद,
- ऐतिहासिक – (अभिलेख आदि) साहित्य का अनुवाद,
- गणित - संख्याशास्त्र का अनुवाद।

4. **अनुवाद की प्रकृति के आधार पर :** अनुवाद का इस प्रकार का आधार आंतरिक होने से यह प्रकार सार्थक है। मूलतः इसके दो भेद है :-

अ) मूलनिष्ठ अनुवाद - विचार याने कथ्य और अभिव्यक्ति याने कथन पद्धति, दोनों ही दृष्टियों से यह अनुवाद मूल के निकट होता है।

आ) मूलमुक्त (मूलाधारित, मूलाधृत) अनुवाद - विचार या कथ्य को कायम रखकर इसमें अभिव्यक्ति-कथनपद्धति, शैली में आवश्यकता, सुविधा, उपयुक्तता की दृष्टि से परिवर्तन - परिवर्धन करके अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है।

प्रायः अनुवाद में इन दोनों में से किसी एक का या दोनों के मिश्रित रूप का प्रयोग किया जाता है।

- **प्रकृति के आधार पर अन्य महत्वपूर्ण प्रकार :**

(1) शब्दानुवाद, (2) भावानुवाद, (3) छायानुवाद, (4) सारानुवाद, (5) व्याख्यानुवाद, (6) आदर्श अनुवाद, (7) रूपांतरण [Adoptation], (8) भाषांतर।

(1) शब्दानुवाद - शब्दानुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति को दृष्टि में न रखकर 'शब्दशः' अनुवाद किया जाता है। स्रोत भाषा के हर शब्द पर अनुवादक का ध्यान जाता है।

शब्दानुवाद के तीन उपभेद हो सकते हैं -

(क) इसमें मूल अनुवाद पाठ की हर शब्दाभिव्यक्ति का प्रायः उसी क्रम में अनुवाद किया जाता है। जैसे - I am going to college. 'मैं हूँ जा रहा ओर कॉलेज की'। अर्थात अनुवाद का यह निकृष्टतम रूप है। अनेक बार शब्दानुवाद पूर्णतः अबोधगम्य हो जाता है। क्योंकि हर भाषा में शब्दक्रम समान नहीं होता। शब्दानुवाद का सूत्र है शब्द के स्थान पर शब्द; जैसे, I am reading a novel का अनुवाद "मैं पढ़ रहा हूँ एक उपन्यास" किया जाना। यहाँ शब्दों के क्रमानुसार अनुवाद है और लक्ष्यभाषा की प्रकृति पर ध्यान नहीं रखा गया है। प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना या अपना वाक्यविन्यास होता है। अतः ऐसे शब्दशः अनुवाद गलत और हास्यास्पद होते हैं।

(ख) इस प्रकार के अनुवाद में क्रम आदि तो मूल का नहीं रखते किंतु मूल के हर शब्द का अनुवाद में पूरा ध्यान रखा जाता है। इसमें मूल का शब्द क्रम नहीं परंतु मूल की शैली अनुवाद में स्पष्ट झलकती है। अंग्रेजी अखबारों से हिंदी अखबारों में ऐसे अनुवाद दिखाई देते हैं। पहले प्रकार के अनुवाद से यह प्रकार कुछ स्पष्ट रहता है।

(ग) शब्दानुवाद का तीसरा रूप है जिसे आदर्श शब्दानुवाद का कहा जाएगा। इसमें मूल के प्रत्येक अभिव्यक्ति इकाई को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित किया जाता है। शब्दानुवाद के लिए डॉ.भोलानाथ तिवारी ने जो सूत्र दिया है वह उल्लेखनीय है - "मत छोड़ो, मत जोड़ो" - विशेषकर विज्ञान, तकनीकी, विधि, गणित, संगीत आदि के लिए शब्दानुवाद ही आदर्श रूप में ग्राह्य होता है।

(2) भावानुवाद - शब्द भावों के वाहक होते हैं। इसी लिए इस प्रकार का अनुवाद करते समय उस शब्द के अस्तित्व से अधिक उसमें निहित भाव को ध्यान में रखा जाता है। भावानुवाद में मूल रचना के भावार्थ को प्रस्तुत करने का प्रयत्न रहता है। भावानुवाद कभी अनुच्छेद, पूरे वाक्य या कभी पूरे पाठ का भी होता है।

भावानुवाद में लक्ष्य भाषा की अपनी-अपनी शब्दरचना, वाक्यविन्यास, मुहावरा आदि की योजना अधिक रहती है। इसमें भाव संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार के अनुवाद में हम अनुवादक का व्यक्तित्व ही अधिक पाते हैं। उमर खैयाम की रुबाइयों का फिट्जजेराल्ड द्वारा अनुवाद इसी प्रकार का है। सामान्यतः मूल सामग्री यदि सूक्ष्म भावों वाली है, तो उसका भावानुवाद करते हैं, और यदि वह तथ्यात्मक, वैज्ञानिक या विचारप्रधान है तो उसका शब्दानुवाद करते हैं। आदर्श अनुवाद वह है जो

शब्दानुवाद और भावानुवाद दोनों पद्धतियों को यथावसर अपनाते हुए मूल भाव के साथ-साथ यथाशक्ति मूल शैली को भी अपने में उतार लेता है और साथ ही लक्ष्य भाषा की सहज प्रकृति को भी अक्षुण्ण बनाए रखता है।

(3) छायानुवाद - छायानुवाद में किसी रचना को पढ़कर, उसे जो समझा या अनुभव किया जाए, उसके प्रभाव को ग्रहण कर स्वतंत्र रूप से मूल पाठ का लक्ष्य भाषा में रूपांतरण किया जाता है। इसमें अनुवादक को पूरी स्वतंत्रता रहती है कि वह मुख्य भाव को ग्रहण कर पाठ रचना करे। इस संदर्भ में डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते हैं - "छायानुवाद ऐसे अनुवाद को कहा जाना चाहिए जो शब्दानुवाद की तरह मूल के शब्दों का अनुसरण न करे, अपितु दोनों दृष्टियों से मूल से शब्दतः और भावतः मुक्त होकर अर्थात बिना मूल से विशेष बँधे उसकी छाया लेकर चले।"

(4) सारानुवाद - सारानुवाद में अनुवादक मूल रचना का कथानक मात्र अपनी भाषा में लिखते हैं और अनेक बार इसे संक्षिप्त भी कर देते हैं। लोकसभा के वाद-विवाद के अनुवाद प्रायः ऐसे होते हैं। मूल के गद्य को पद्य में या पद्य को गद्य में भी परिवर्तित किया जाता है। संस्कृत और अंग्रेजी से ऐसे अनुवाद हिंदी में बहुत हुए हैं। रामायण, महाभारत, शाकुंतल जैसी रचनाओं के अन्य भाषाओं में हुए अनुवाद सारानुवाद में आते हैं। संक्षिप्तता, सरलता, स्पष्टता और लक्ष्य भाषा के स्वाभाविक सहज प्रवाह के कारण सारानुवाद अधिक उपयोगी होते हैं। लंबे भाषणों के सद्यः अनुवाद करने वाले दुभाषिए, समाचारपत्रों के संवाददाता प्रायः इसी का प्रयोग करते हैं।

(5) व्याख्यानुवाद - व्याख्यानुवाद में मूल सामग्री का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय मूल की व्याख्या की जाती है। इसे 'भाष्य' भी कहा जाएगा। इसमें कथ्य के स्पष्टीकरण, अतिरिक्त उदाहरण, उद्धरण आदि जोड़े जाते हैं। व्याख्यानुवाद में अनुवादक महत्वपूर्ण हो जाता है। उसके व्यक्तित्व, विचारधारा, शैली, ज्ञान का सीधा प्रभाव अनूदित साहित्य में व्यक्त होता है। अनुवादक यहाँ 'व्याख्याकार' के रूप में होता है। सूक्त, सूक्ति, विधि आदि के भाष्य, पतंजलि महाभाष्य, ज्ञानेश्वरी आदि इसके उदाहरण हैं।

(6) आदर्श अनुवाद - यह अनुवाद का आदर्श प्रकार है। इसमें अनुवादक स्रोत भाषा से मूल सामग्री का शब्दतः और अर्थतः लक्ष्य भाषा में निकटतम और स्वाभाविक समानकों द्वारा अनुवाद करता है। अनुवाद मूल जैसा होता है। इसे स्वाभाविक सटीक अनुवाद भी कहते हैं। अनुवादक यथासाध्य न तो मूल का अर्थतः और अभिव्यक्तितः कुछ छोड़े और न ही अपनी ओर से कुछ जोड़े । आदर्श अनुवादक सिरिंज की वह सुई है, जो सिरिंज की दवा को ज्यों-की-त्यों मरीज के शरीर में पहुँचा देती है।

(7) रूपांतरण - रूपांतर का अर्थ है, बाह्य रूप में कुछ अंतर कर देना, किंतु रचना का भीतरी रूप सुरक्षित रखना। रूपांतर करने का कारण यह होता है कि मूल रचना देश-काल-वातावरण आदि की दृष्टि से पाठक को अच्छी लगे। अनुवादक आवश्यक हेर-फेर करते हैं। जैसे, भारतेंदु का 'दुर्लभ बंधु' या 'वंशपुर का महाजन' (मर्चेन्ट ऑफ बेनिस का अनुवाद)। रेडियो-टी.वी. पर भिन्न-भिन्न भाषाओं से रूपांतरित कार्यक्रम आते रहते हैं।

रूपांतर करते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है। रूपांतरकार को इस बात का ध्यान

रखना चाहिए कि मूल रचना की कोई बात बदलने से सारी रचना का स्वरूप ही विकृत न हो। रूपांतर में सबसे महत्वपूर्ण बात यही है कि उसमें मूल रचना की आत्मा सुरक्षित रहे और हेर-फेर केवल बाहरी बातों में हो।

(8) भाषांतर - भाषांतर ही वास्तविक अनुवाद है। इसका अभिप्राय यह है कि मूल लेखक के शब्दों के स्थान पर अपनी लक्ष्य भाषा के शब्दों का प्रयोग कर उसके वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ को पूरी तरह प्रस्तुत किया जाए। डॉ.देवेंद्र कुमार के अनुसार - "भाषांतर अनुवादों में श्रेष्ठ अनुवाद वही है जो मूल लेखक की रचना के पूरे स्वरूप को प्रस्तुत करता है। वह मूल रचना के काव्य, नाटकत्व आदि को भी वैसे ही पूरी तरह प्रस्तुत करता है जैसे उसके सामान्य अर्थ को।" अनुवादों के प्रकारों में 'भाषांतरण' ही सर्वोत्कृष्ट प्रकार है; क्योंकि यह रचना ही मूल लेखक की रचना का पुनः सृजन करती है और पाठक को उस रस का आस्वादन कराती है जिसका आस्वादन अपने पाठकों को कराने के लिए मूल लेखक ने अपनी रचना की थी।

(9) वार्तानुवाद - आशु अनुवाद या अनुवचन - दुभाषिए द्वारा किया जाने वाला बातचीत या समाचार संवाद का शीघ्र अनुवाद ही वार्तानुवाद है। इसे आशु याने तत्काल अनुवाद अथवा अनुवचन अर्थात किसी के एक भाषा में किए कथन या बात को सुनकर तुरंत दूसरी भाषा में किया जाने वाला अनुवाद भी कहा जाता है।

(10) अन्य - इसके अलावा पूर्ण, आंशिक, समस्त, सीमित, मुक्त, शाब्दिक, मध्यवर्गी, प्रत्यक्ष, परोक्ष, भाषापरक, तथ्यपरक, संस्कृतिपरक, सौंदर्यपरक, मौखिक, लिखित, मनुष्यद्वारा, यंत्रद्वारा, एक दल (सहयोगज) या एक व्यक्ति द्वारा किया गया अनुवाद आदि प्रकार गिनाए जा सकते हैं। पर वे ऊपरी प्रकारों में समाए जा सकते हैं।

5. अनुवाद का लिखित तथा मौखिक स्वरूप

अनुवाद के लिखित और मौखिक दोनों ही रूप महत्वपूर्ण हैं। इन दोनों प्रकारों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। इन दोनों का स्वरूप इनके नाम से ही स्पष्ट होता है। लिखित अनुवाद लिखकर प्रस्तुत किया जाता है तो मौखिक अनुवाद मुख से बोलकर किया जाता है।

लिखित अनुवाद –

लिखित अनुवाद चिरकालीन माना जाता है। इसकी आयु निश्चित रूप से अधिक होती है। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, यह लिखकर किया जाता है। इस प्रकार का अनुवाद कितना ही समय क्यों न ले लेकिन यह शुद्ध और सटीक ही होना चाहिए। मूल भाषा पाठ से इसकी तुलना कभी भी की जा सकती है, अतः अनुवादक पर भी अधिक जिम्मेदारी होती है। इसका अच्छी तरह से निर्वाह करने हेतु अनुवादक को कोशों, विशेषज्ञों से यथोचित सहायता ले लेनी चाहिए। अनुवादक विद्वानों द्वारा दिए गए सुझावों से अनुवाद में सुधार लाता है तो लिखित अनुवाद निश्चित रूप से चिरस्थायी बन सकता है।

लिखित अनुवाद करने वाला अनुवादक अनुवाद की सारी प्रक्रिया से होकर गुजरता है। उसे पाठपठन, विश्लेषण, अंतरण, समायोजन आदि सोपानों से होकर जाना पड़ता है। इतनी लंबी प्रक्रिया के बाद ही लिखित अनुवाद अंतिम रूप धारण करता है। इस प्रकार का अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसकी कुछ विशेताएँ हैं। इस संदर्भ में कुछेक मुद्दे महत्वपूर्ण हैं -

स्थायित्व –

स्थायित्व लिखित अनुवाद की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह चिरकालीन होता है। अनुवाद हो चुकने के पश्चात, वर्षों बाद भी लोग अनुवाद को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। वर्षों तक इसे सुरक्षित रखना भी आसान है। आधुनिक युग में तो लिखित अनुवाद चिरंजीवी बन चुका है। विविध वैज्ञानिक खोजों के चलते बड़े-से-बड़े ग्रंथ को छोटी-सी माइक्रो फिल्म में बंद करना संभव हो चुका है। इसे कंप्यूटर की मेमोरी या फ्लॉपी में रखना भी सहज संभव हो चुका है।

प्रेरणास्त्रोत –

स्त्रोतभाषा में विद्यमान सामग्री का लक्ष्यभाषा में किया गया रूपांतरण समकालीन और भविष्यकालीन अनुवादकों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बन जाता है। किसी भाषा में हुआ सुंदर अनुवाद अन्य भाषा के अनुवादकों को लिखित रूप में अनुवाद करने की प्रेरणा देता है।

लिखित अनुवाद का शिल्प –

वही अनुवाद अच्छा कहलाता है जो कथ्य को सही ढंग से अंतरित कर दे। कथ्य के साथ यदि शिल्प भी परिवर्तित हुए बिना लक्ष्यभाषा में पहुँच जाता है तो 'सोने में सुगंध' वाली बात हो जाती है। एक अच्छा अनुवाद सहज होता है, निकटतम अनुवाद बहुत कम बार संभव हो पाता है। शिल्प अनुवाद में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

कई बार अनुवादक दोनों भाषाओं में सही सूत्र नहीं जुटा पाता। इस स्थिति में लिखित अनुवाद करते समय अनुवाद का शिल्प भी गद्य, पद्य, ललित आदि के रूप में परिवर्तित किया जाता है। इससे लिखित अनुवाद में चार चाँद लग जाते हैं।

नवनिर्माण –

एक अच्छा अनुवादक यही प्रयास करता रहता है कि स्रोतभाषा पाठ की अनूदित सामग्री में समतुल्यता बनी रहे। मूल पाठ का संदेश पक्ष और जहाँ तक संभव हो, गठन पक्ष भी लक्ष्यभाषा के पाठकों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी अनुवादक की होती है। फिर भी जब अनुवादक को स्पष्टता या समतुल्यता का अभाव खटकने लगता है तो वह लक्ष्यभाषा पाठ में कुछ ऐसे तत्वों का निर्माण करता है, जो मूलभाषा पाठ में नहीं हैं। इसके लिए कई बार उसे विदेशी ध्वनियों को अपनाना पड़ता है। कई नए शब्दों का निर्माण करना पड़ता है। यही नवनिर्माण लिखित अनुवाद की महत्वपूर्ण विशेषता है।

मौखिक अनुवाद –

अनुवाद क्षेत्र में लिखित अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी के अंतर्गत दूसरा अनुवाद मौखिक अनुवाद है।

अनुवाद जब लिखने के स्थान पर बोलकर किया जाए तो वह मौखिक अनुवाद कहलाता है। स्रोतभाषा में कही गई बात लक्ष्यभाषा के श्रोताओं को सुनाने के लिए ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाएँ अच्छी तरह जानता हो। इस प्रकार का अनुवाद भाषांतरण भी कहलाता है। दो भाषा-भाषियों के बीच यह सेतु का काम करता है। इस दृष्टि से इसका महत्व वादातीत है।

मौखिक अनुवाद उतना ही प्राचीन है जितनी मानवी सभ्यता प्राचीन है। औपचारिक रूप से, बीसवीं सदी के दूसरे दशक में (1919) पेरिस में संपन्न एक शांति सम्मेलन में मौखिक अनुवाद का आरंभ हुआ। लिखित अनुवाद के मुकाबले मौखिक अनुवाद का स्वरूप बड़ा ही भिन्न होता है। 'एक भाषा प्रतीकों को दूसरे भाषा प्रतीकों में ढालना' इस एकमात्र समान बिंदु के अलावा कोई दूसरी बात इनमें समान नहीं है। मौखिक अनुवाद आसान नहीं है। लिखित अनुवाद में अनुवादक इच्छानुसार विकल्प ढूँढ सकता है लेकिन मौखिक अनुवाद में अनुवादक के पास ऐसी कोई सुविधा उपलब्ध नहीं होती। वह न शब्द कोशों से मदद ले सकता है, न ही किसी से सहायता माँग सकता है। वक्ता के विचारों को तत्काल अनूदित कर श्रोताओं तक पहुँचाना उसका काम होता है। वक्ता के विचार यथासंभव सरलता और सटीकता के साथ प्रस्तुत करने के लिए अनुवादक तत्काल उपयुक्त शब्द खोजे। यह संभव नहीं हुआ तो भावानुवाद करे। आवश्यकता के अनुसार वह वक्ता द्वारा अभिव्यक्त सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों को अपनी आवाज में यथोचित उतार-चढ़ाव लाकर प्रस्तुत कर दे। इस तरह का अनुवाद अत्यंत कठिन काम है। इसके मुख्यतः तीन सोपान हैं -

1. वक्ता द्वारा कही गई बातों को समझना।

2. मन-ही-मन उसका अनुवाद करना।

3. लक्ष्यभाषा में उसे अभिव्यक्त कर देना।

इनका विवरण संक्षेप में इस प्रकार दिया जा सकता है–

1. वक्ता द्वारा कही गई बातों को समझना -

वक्ता द्वारा कही गई बात को समझ लेना मौखिक अनुवादक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। इसके लिए ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि छोटी-से-छोटी बात भी अनुवादक आसानी से सुन सके। कई बार बोलने वाला वाणी से कम और भाव-भंगिमा से अधिक बोलता है। इस स्थिति में बैठक व्यवस्था ऐसी हो कि अनुवादक वक्ता तथा अन्य सभासदों को अच्छी तरह देख सके। वक्ता माइक से सही दूरी पर रहे, ताकि अनुवादक सही सुन सके और सही-सही अनुवाद कर सके। यह सारी तकनीकी बातें हैं। इनके अलावा एक अनुवादक को सभा में चल रही प्रत्येक चर्चा के विषय का ज्ञान होना चाहिए। इसके लिए अनुवादक पहले से ही संबंधित बिलों, व्याख्यात्मक नोट, प्रवर, स्थायी समितियों की रिपोर्ट, वार्षिक रिपोर्ट, ज्ञापनों, श्वेतपत्रों आदि अच्छी तरह से पढ़ ले। अनुवादक के लिए विषयवस्तु का ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक है, ताकि वह चर्चा के विशिष्ट मुद्दों को समझ सके और पारिभाषिक शब्दों के विकल्प पहले से ही तैयार रख सके। विषयज्ञान के अभाव में अनुवादक अनुवाद कर ही नहीं सकता।

वक्ता द्वारा कही गई बात को समझने के लिए सामान्य ज्ञान भी अत्यंत आवश्यक है। सभा में जिन विषयों पर बातचीत होने वाली है, उन विषयों की सूची पहले से ही अनुवादक के पास दे दी जाती है। इससे चर्चा से संबंधित ज्ञान अनुवादक पहले से ही प्राप्त कर लेता है। लेकिन हर बात योजनानुसार नहीं चलती। कई बार सभा में पूर्व सूचना के बिना या अल्पसूचना देकर भिन्न विषयों पर बातचीत शुरू हो जाती है। सभा में प्रश्नकाल के बाद स्थगन प्रस्ताव, सूचनाएँ, विशेषाधिकार के प्रश्न भी उठाए जाते हैं, जिनकी पूर्व सूचना न दी गई हो। अतः एक अनुवादक के पास सभी प्रकार के ज्ञान का, विशेषतः सामान्यज्ञान का भंडार हो ताकि किसी भी अप्रत्याशित मामले का वह बेहिचक अनुवाद कर सके। अनुवादक को स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा दोनों का केवल व्याकरण तक ही सीमित ज्ञान न हो बल्कि उनके सामाजिक सांस्कृतिक पक्ष का भी ज्ञान हो।

मौखिक अनुवादक के लिए अत्यंत आवश्यक है कि भाषण अच्छी तरह से उसकी समझ में आ सके। माइक की खराबी, कर्कश फटी हुई आवाज, व्याकरणिक गलतियाँ, गलत उच्चारण, अस्पष्ट अभिव्यक्ति आदि किसी कारण से कई बार अनुवादक भाषण को समझ ही नहीं पाता। कई बार सभा में नोंक-झोंक, बहस, विवाद, लड़ाई-झगड़ा आदि हो रहा हो तो इस स्थिति में अनुवादक भाषण को समझ ही नहीं पाता। ऐसी स्थिति में अनुवादक गहराई में न जाकर केवल भाषण का सार बता दे या फिर प्रमुख वाक्यों का अनुवाद कर दे ताकि गलत अनुवाद या उसके परिणाम से बचा जा सके।

2. मन-ही-मन अनुवाद करना -

यह मौखिक अनुवाद की प्रक्रिया का अगला सोपान है। मूल वक्ता का भाषण सुनना-समझना और अपेक्षित भाषा में अभिव्यक्ति करना, इन बातों के बीच जो समय मिलता है, उसी समय में अनुवादक के मन में अनुवाद हो जाना चाहिए। एक अच्छा अनुवादक सुनता है, सोचता है, अनुवाद कर देता है और बोल भी देता है। मन-ही-मन अनुवादकार्य चल रहा हो तो अनुवादक को चाहिए कि वह कुछ बातों का विशेष ध्यान रखे।

यदि अनुवादक शब्द के स्थान पर शब्द ही रख दे तो ऐसा अनुवाद शब्दशः अनुवाद मात्र बनकर रह जाएगा। इससे प्रभाव नष्ट हो सकता है। अतः अनुवादक शब्द की जगह शब्द रखने की अपेक्षा अर्थ की जगह अर्थ रख दे। अपने काम की शुरुआत करने से पहले अनुवादक चर्चा के विषयों की सूची प्राप्त करे। अनुवादक आवश्यक तकनीकी और पारिभाषिक शब्दों को याद करे। इससे मौखिक अनुवाद अपेक्षाकृत सरल बन जाएगा। ऐसा शब्दसंग्रह मौखिक अनुवादक के लिए आवश्यक है। इसके बावजूद यदि अनुवादक को ऐन मौके पर सही विकल्प नहीं सूझता है तो उस अर्थ से मिलते-जुलते शब्द का प्रयोग करे या बात को दो-तीन शब्दों से स्पष्ट करे।

शब्द के अनुवाद की अपेक्षा मुहावरों, कहावतों का अनुवाद करना बड़ा ही जटिल काम है। अनुवादक को सोचने-समझने के लिए पर्याप्त समय भी नहीं मिलता। उसे इस स्थिति के लिए पहले से ही तैयार रहना चाहिए। सभी क्षेत्रीय बोलियाँ, उसकी सारी बारीकियाँ, उनके मुहावरों, कहावतों आदि का ज्ञान उसे होना ही चाहिए। यदि कोई वैकल्पिक मुहावरा याद न आए तो अनुवादक उससे मिलते-जुलते मुहावरे की अभिव्यक्ति कर दे अथवा भाषण का रुख समझकर केवल आशय को अभिव्यक्त कर दे। अनुवाद के काम में आने वाली बहुत बड़ी रुकावट भाषण की अस्पष्टता है। इसके दो कारण हो सकते हैं -

1. वक्ता अपने विचारों की सटीक अभिव्यक्ति न कर पा रहा हो।

2. वक्ता जानबूझकर अपनी बातों को गोलमाल बनाकर प्रस्तुत कर रहा हो।

अनुवादक में इतनी शक्ति तो होनी चाहिए कि वह अस्पष्ट भाषण का कारण समझ पाए। यदि वक्ता के विचार अपनी जगह स्पष्ट हैं लेकिन अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप में नहीं हो पा रही है तो अनुवादक अस्पष्टता हटाकर अनूदित भाषण को स्पष्टता प्रदान कर सकता है। यदि वक्ता जानबूझकर अपने भाषण को अस्पष्ट बनाए रख रहा है तो उसे भी अनूदित भाषण उतना ही अस्पष्ट रखना पड़ेगा।

वक्ता अपने भाषण में लंबे-चौड़े आँकड़ों का विवरण दे रहा हो तो अनुवादक को उन आँकड़ों को समझने में अधिक समय नहीं गँवाना चाहिए। या तो वह आँकड़ों को सही-सही याद करें या गलत बोलने की अपेक्षा मोटे तौर पर आँकड़े बोल दे। लेकिन ऐसा करने से पहले 'अनुमानतः', 'संभवतः', 'लगभग', 'मोटे तौर पर' जैसे शब्दों को जोड़ दें।

सभा में बोलते समय वक्ता कई बार लंबे-चौड़े उद्धरण प्रस्तुत करता है। अनुवादक को तुरंत पूरा अनुवाद प्रस्तुत करना बहुत बार असंभव हो जाता है। इस स्थिति में अनुवादक उसका सार ही बता दें। कई बार वक्ता धार्मिक ग्रंथों से बड़े-बड़े उद्धरण देता है। यदि अनुवादक को उसके समतुल्य उक्ति पता है तो वह कह दे, यदि अर्थ पता हो तो वह अर्थ ही बता दे। यदि उसे न वह उद्धरण पता है, न ही अर्थ पता है तो वह तत्काल अपना माइक बंद कर दे ताकि लोग वक्ता द्वारा कथित मूल उद्धरण सुन पाए।

सभा में जब कोई नोंक-झोंक या हँसी-मजाक हो, उसके कारण सभा में बड़ा ही सुखद वातावरण छा जाता है लेकिन अनुवादक के लिए यह परीक्षा की घड़ी होती है। कई बार तो इतना हल्ला-गुल्ला मच जाता है कि वह न कुछ सुन पाता है, न बोल पाता है। मूल बात जितनी चटपटी है, अनुवाद भी उतना ही चटपटा होना चाहिए। इस बात का ध्यान भी रखा जाना जरूरी है।

3. अनुवाद की अभिव्यक्ति :-

बात को प्रस्तुत करने का ढंग निश्चित रूप से बात का प्रभाव बढ़ा देता है। वक्ता के पास बढ़िया सामग्री होने के बावजूद प्रभावक्षम कथन के अभाव में बात फीकी लग सकती है। अभिव्यक्ति एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसका सफलतापूर्वक निर्वाह करना एक अनुवादक का काम है। वक्ता द्वारा हुई गलतियाँ, उसका हकलाना या अभिव्यक्ति का बेतुका ढंग श्रोताओं द्वारा माफ किया जा सकता है। लेकिन अनुवादक को ऐसी माफी नहीं मिलती। अनुवादक की ओर से अभिव्यक्ति की शुद्धता और सटीकता की उम्मीद की जाती है। इसके लिए अनुवादक को कुछ बातों का ध्यान रखना पड़ता है।

अनुवादक की भाषा 'लिखित' जैसी कठिन, शैली प्रधान या विशिष्ट नहीं, बल्कि सहज स्वाभाविक होनी चाहिए। लिखित भाषा में कई बार विचार दब जाते हैं अतः उसे 'लिखित भाषा' के स्थान पर 'बोलचाल की भाषा' का प्रयोग करना चाहिए। लेकिन इस भाषा में देशज या गँवारू शब्द न हों इसका ध्यान भी रखना चाहिए। गति एक अनुवादक के लिए आवश्यक बात है। उस वक्ता की बात सुनने के साथ-साथ समझनी है, मन-ही-मन उसका अनुवाद करना है और उसकी अभिव्यक्ति भी करनी है। वक्ता यदि तीव्र गति से बोल रहा हो तो अनुवादक को भी तीव्र गति से अनुवाद कर देना होता है। यदि वक्ता आवश्यकता से अधिक धीमी गति से बोल रहा हो, तो उसे भी धीमी गति से ही बोलना चाहिए। वक्ता का वक्तव्य यदि जोरदार है, तो अनुवादक को भी जोश के साथ जोरदार अनुवाद करना चाहिए। लेकिन गति का ध्यान रखते-रखते यह भी देखना चाहिए कि वह जो कुछ भी बोले, श्रोताओं की समझ में आ जाए।

स्पष्ट है, लिखित अनुवाद की तुलना में मौखिक अनुवाद आसान नहीं है।

6. अनुवाद का महत्व और उपयोगिता

अनुवाद का महत्व :

अनुवाद आधुनिक युग की अनिवार्य आवश्यकता है। आधुनिक युग की कोई बात अनुवाद के प्रभाव से मुक्त नहीं है।

दो भिन्न भाषा-भाषियों के बीच संवाद कराने की क्षमता केवल अनुवाद में ही है। साथ ही एक भाषा का साहित्य और ज्ञान दूसरी भाषा जानने वाले लोग केवल अनुवाद के जरिए ही पा सकते हैं।

आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व बढ़ा है क्योंकि बात केवल साहित्य तक सीमित नहीं रही। ज्ञान विविध धाराओं में बहने लगा। इस ज्ञान को एक भाषा से दूसरी भाषा में केवल अनुवाद ही पहुँचा सकता है। अनुवाद के कारण कोई ज्ञान विशिष्ट देश, प्रदेश या भाषा की सीमा में बंद नहीं है। विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, उपग्रह विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान के साथ ही विधि, न्याय, प्रशासन, बैंक, मीड़िया, तकनीकी, मानविकी, वाणिज्य आदि कई क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें स्थित ज्ञान हरेक व्यक्ति तक पहुँचना आवश्यक है। यह केवल अनुवाद से ही संभव हो सकता है।

आज के युग में अनुवाद का महत्व किसी भी अन्य विषय की तुलना में अधिक है। अनुवाद की व्याप्ति, अनुवाद के बढ़ते क्षेत्र देखकर ही हम इसके महत्व का अनुमान लगा सकते हैं। अनुवाद कई क्षेत्रों में फैला हुआ है। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी व्यापकता और व्यापकता से उभरता महत्व स्पष्ट रूप से झलकता है। मीड़िया के सभी माध्यमों, पत्र-पत्रिकाओं, फिल्मों, रेडियों, दूरदर्शनों आदि के जरिए दूरदराज में होने वाली घटनाएँ हम तक पहुँचती हैं। इन सभी की भाषा हमारी राजभाषा या मातृभाषा तो नहीं हो सकती। इनकी भाषा वह भी हो सकती है जिसके हम जानकार नहीं हैं। यदि अनुवाद न होता तो ये बातें हम तक पहुँचती ही नहीं।

अनुवाद के कई लोकहितैषी आयाम भी हैं। संचार माध्यमों के द्वारा राष्ट्रीय भाषा में जनजागरण का काम किया जाता है। जिन लोगों के लिए यह जागृति जरूरी है ऐसे लोग या ग्रामीण जनता भाषा के अज्ञान के कारण इसे समझ ही नहीं पाती। इस स्थिति में अनुवाद के जरिए स्वास्थ्य, जनकल्याण, समाजकल्याण, कुटुंब कल्याण आदि योजनाएँ देश के कोने-कोने में पहुँचाई जाती हैं। बात चाहे विश्वभर में हो रहे अनुसंधानकार्य की हो, राजनीतिक उथल-पथल की हो या सामाजिक-सांस्कृतिक-साहित्यिक दृष्टिकोण तथा विचारधाराओं की हो, अनुवाद प्रतिक्षण यह जानकारी हम तक पहुँचाता है। डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया के मतानुसार अनुवाद के माध्यम से दूर-दूर सीमाओं में बैठी मानवजाति समीप आई है। अनुवाद के माध्यम से कुछ क्षेत्र ही समीप नहीं आए बल्कि अखिल मानव जाति समीप आई है।

डॉ. जी. गोपीनाथन अनुवाद को 'सांस्कृतिक सेतु' मानते हैं। अनुवाद मानवी सभ्यता के साथ विकसित हुई एक ऐसी विशिष्ट कला है जिसका आविष्कार मनुष्य ने बहुभाषिक स्थिति की विडंबनाओं से बचने के लिए किया था।

डॉ. रीतारानी पालीवाल का मानना है कि "मानव के पास आयु, समय और साधन की एक सीमा रहती है। हर व्यक्ति संसार की प्रत्येक भाषा नहीं सीख सकता। ऐसी स्थिति में अनुवाद ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम सभी भाषाओं से संपर्क स्थापित कर सकते हैं। वस्तुतः अनुवाद के माध्यम से ही विभिन्न भाषा-भाषी समाजों के बीच संवाद स्थापित होता है। विश्व सभ्यताओं के विकास में अनुवाद का अमूल्य योगदान रहा है। अनुवाद के अभाव में विश्व की सभ्यताएँ 'नदी के द्वीपों' की तरह एक-दूसरे से अलग-अलग हो जाती हैं। वसुधैव कुटुंबकम् की भावना चरितार्थ करता है अनुवाद।"

जॉर्ज स्टीनर बताते हैं कि अनुवाद के कारण ही हम मानव की उस आधारभूत सार्वभौमिक, वंशजीय, ऐतिहासिक तथा सामाजिक एकता को अनुभव करते हैं जो भाषाओं के बाह्य भेद के बावजूद मानवीय भाषा के प्रत्येक मुहावरे की तह में निहित है। अनुवाद कार्य का आशय है कि दो भाषाओं की बाह्य अंतरों की तह में प्रवेश कर मानवीय अस्तित्व के समान तत्वों को प्रकाश में लाना। मानव की खोई हुई सार्वभौमिक सामान्य भाषा की मिथकीय कल्पना यहाँ चरितार्थ होती है।

अनुवाद का महत्व शब्दातीत है। वसुधैव कुटुंबकम् की उपनिषदीय कल्पना अनुवाद के द्वारा ही साकार होगी। अनुवाद आज विश्व में केंद्रीय स्थान प्राप्त करता जा रहा है। दिन-प्रति-दिन इसकी आवश्यकता बढ़ती ही जा रही है। अनुवाद के माध्यम से प्राप्त ज्ञान हमारे विकास में अनमोल योगदान दे रहा है। विश्व में अनुवाद एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

अनुवाद की उपयोगिता –

अनुवाद आज के युग का सर्वाधिक चर्चित मुद्दा है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहाँ अनुवाद की आवश्यकता नहीं है। अनुवाद के द्वारा हम केवल दूसरे देश के साहित्य से ही परिचित नहीं होते बल्कि विभिन्न तरह की प्रशासनिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक, धार्मिक आदि जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जहाँ उसकी उपयोगिता है।

अनुवाद का सबसे बड़ा क्षेत्र मौखिक है। विश्व में सर्वाधिक मात्रा में मौखिक अनुवाद ही किया जाता है। बातचीत के क्षेत्र में अनुवाद का सबसे अधिक प्रयोग मिलता है। दो भिन्न भाषा-भाषाई जब एक-दूसरे से मिलते हैं तो अनुवाद के माध्यम से वे एक दूसरे से संपर्क स्थापित करते हैं, एक-दूसरे के विचार जान सकते हैं। उनको एक-दूसरे से परिचित कराने का काम एक दुभाषिया ही कर सकता है। आजकल तो दुनिया 'ग्लोबल विलेज' बन चुकी है। कदम-कदम पर हम ऐसे लोगों से टकराते हैं जिनकी भाषा हमसे भिन्न है। इस स्थिति में केवल अनुवाद ही हमारी मदद कर सकता है।

अनुवाद का दूसरा क्षेत्र है पत्राचार। पत्राचार चाहे बिलकुल अगल-बगल में स्थित दो कार्यालयों में हों या एक-दूसरे से हजारों मील दूर दो देशों में हों, जहाँ दो भाषाएँ हैं, वहाँ अनुवाद की आवश्यकता है। पत्राचार तो जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। व्यापार में, कार्यालयों में, बैंकों में, न्यायालय आदि क्षेत्रों में पत्राचार का महत्व अनन्यसाधारण है। भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कार्यालयों में हमेशा अनुवादकों की आवश्यकता होती है। ये कंपनियाँ अपनी भाषा को लेकर अत्यधिक कट्टर होती हैं और केवल अपनी ही भाषा में पत्रव्यवहार करना पसंद करती हैं। चीन, जापान, जर्मनी जैसे देशों में तो उनकी भाषा के अलावा कोई अन्य भाषा पसंद ही नहीं की जाती।

अनुवाद का अगला महत्वपूर्ण क्षेत्र विज्ञान का है। विज्ञान, तकनीकी और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुवाद निरंतर महत्वपूर्ण सिद्ध होता जा रहा है। भारत एक विकासशील देश है। विकसित देशों की प्रगति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का होता है। इंग्लैंड, अमेरिका, रूस जैसे देश विज्ञान, तकनीकी और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अत्यधिक विकास कर चुके हैं। भारत जैसा देश अपने विकास के लिए इन देशों से वैज्ञानिक, तकनीकी ज्ञान चाहता है। विकसित देशों की विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित नित नवीन उपलब्धियों एवं विकास की जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुवाद के अलावा कोई चारा नहीं है। इस सामग्री का अनुवाद अंग्रेजी में अधिक मात्रा में होता है। शायद इसी लिए आजकल अंग्रेजी का महत्व बढ़ता जा रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में रूस भी काफी विकास कर चुका है। इससे संबंधित सारी सामग्री वे रूसी भाषा में ही संगृहीत किए रखते हैं। इसी लिए रूसी भाषा का महत्व भी विशेष रूप से उभर रहा है। अंग्रेजी या रूसी में स्थित सामग्री अनुवाद की ही मदद से हिंदी या अन्य भाषा में आ सकती है।

अनुवाद की अनिवार्य आवश्यकता वाला क्षेत्र विधि और न्याय का क्षेत्र है। न्यायालयों में अनुवाद अनिवार्य होता है। उच्च तथा उच्चतम न्यायालय की भाषा अंग्रेजी होती है। मुकदमे के सारे कागज प्रादेशिक भाषाओं में होते हैं। निचले न्यायालय की भाषा भी प्रादेशिक ही होती है। कागज प्रादेशिक भाषा में, पैरवी अंग्रेजी में और निर्णय भी अंग्रेजी में। इस स्थिति में अंग्रेजी तथा प्रादेशिक भाषा का बारी-बारी से परस्पर अनुवाद किया जाता है। कभी-कभार कोई मुकदमा निचले न्यायालय से उच्च या उच्चतम न्यायालय में चला जाता है तब सारे कागजात प्रादेशिक भाषा से अंग्रेजी में अनूदित करने पड़ते हैं। यदि अनुवाद न हो तो यह सारी प्रक्रियाएक सिरदर्द बन जाएगी।

शिक्षा का क्षेत्र अनुवाद का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व वर्णनातीत है। पहले के मुकाबले आज शिक्षा का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो चुका है। इसके विषय पहले की भाँति गिने-चुने नहीं रहे। भाषा-साहित्य के अलावा विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, लोकप्रशासन, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान आदि कई विषय सीखे और सिखाए जाते हैं। शिक्षा का स्तर भी विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि के दायरे में सिमटकर नहीं रहा है। शिक्षा के कई स्तर हैं, कई विषय हैं। उच्च शिक्षा का माध्यम आजकल हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को बनाया जा रहा है और दूसरी ओर पाया जाता है कि विषय विशेष के सारे उत्कृष्ट ग्रंथ अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में ही उपलब्ध हैं। इन विदेशी भाषाओं की जानकारी के अभाव में हमारा ज्ञान अधूरा रहने का खतरा ही अधिक मात्रा में होता है। विदेशी भाषाएँ सीखना बड़ा कठिन काम है। इस स्थिति में केवल अनुवाद ही हमारी मदद कर सकता है। भारतीय भाषाओं के शिक्षा का माध्यम बन जाने से शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता अनिवार्यता के साथ बढ़ी है। यह आवश्यकता इकतरफा नहीं है। जिन विदेशियों को भारतीय संस्कृति या साहित्य से संबंधित जानकारी चाहिए उन्हें भी अनुवाद के अलावा कोई चारा नहीं है।

संचार-माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग नितांत आवश्यक है। समाचारपत्र, रेडियो (आकाशवाणी) और दूरदर्शन संचार के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। पत्रकारिता का क्षेत्र आज काफी विकसित माना जाता है। आज भी हिंदी समाचारपत्रों को अंग्रेजी समाचार एजंसियों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। विदेशी समाचारपत्रों में छपा समाचार भारतीय समाचारपत्रों में छापना आवश्यक होता है। अतः विदेशी भाषा के उस समाचार को अनूदित करके ही हिंदी भाषा

में उतारा जा सकता है। विदेशी भाषाएँ विशेषतः अंग्रेजी से समाचार हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित होते रहते हैं। अनुवाद न हो,तो कोई विदेशी समाचार चाहे वह कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो, हम तक पहुँच ही नहीं पाएगा। पत्रकारिता में अनुवाद का महत्व केवल विदेशी भाषा या अंग्रेजी से हिंदी तक सीमित नहीं है अपितु इसका दायरा बहुत विस्तृत है।

कई महत्वपूर्ण प्रादेशिक समाचार, प्रादेशिक समाचारपत्रों में प्रादेशिक भाषा में छाप दिए जाते हैं। इस स्थिति में प्रादेशिक समाचार हिंदी में अनूदित होकर ही हम तक पहुँच सकते हैं। एक प्रादेशिक भाषा से दूसरी प्रादेशिक भाषा में अनुवाद कार्य चलता रहता है। भाषा चाहे विदेशी हो, चाहे अंग्रेजी हो या कोई भारतीय भाषा हो, अनुवाद के अलावा कोई ऐसी चीज नहीं जो मददगार सिद्ध हो सके।

रेडियो संचार का दूसरा महत्वपूर्ण माध्यम है। हमारे देश में यह माध्यम 'आकाशवाणी' के नाम से जाना जाता है। यह माध्यम भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं में वार्ताएँ तथा विभिन्न कार्यक्रम प्रसारित करता है। अनुवाद के बिना यहाँ पत्ता भी नहीं हिल सकता। एक प्रादेशिक भाषा का कोई महत्वपूर्ण समाचार यदि तत्परता के साथ दूसरी प्रादेशिक भाषा में पहुँचाना है तो केवल अनुवाद ही यह संभव बना सकता है।

दूरदर्शन संचार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम है। इस माध्यम में अनुवाद की आवश्यकता सर्वाधिक मात्रा में महसूस होती है। आजकल चौबीस घंटे दूरदर्शन का प्रक्षेपण चलता ही रहता है। अलग-अलग चैनल्स आ चुके हैं। एक चैनल की बीसियों शाखाएँ हैं। प्रत्येक चैनल अपना स्वतंत्र समाचार चैनल, स्पोर्ट चैनल, मूवी चैनल निकाल रहा है। कई मुख्य चैनलों ने अपने प्रादेशिक चैनल खोल दिए हैं। मुख्य भाषा हिंदी में प्रक्षेपित हुए कार्यक्रम ही कई बार अनूदित होकर प्रादेशिक भाषाओं में दुबारा प्रक्षेपित किए जाते हैं। जैसे- कभी दूरदर्शन के राष्ट्रीय प्रसारण में चरम लोकप्रियता हासिल कर चुके धारावाहिक रामायण, महाभारत, विक्रम-बेताल जैसे हिंदी कार्यक्रम। यह केवल अनुवाद के कारण ही संभव हो पाया है। समाचारों की तत्परता के मामले में अपनी छाप सारे विश्व में कायम करने वाले बी.बी.सी., सी.एन.एन. जैसे चैनल अंग्रेजी में अपने समाचार प्रसारित करते हैं। किसी महत्वपूर्ण समाचार का तत्परता के साथ किया गया अनुवाद ही वह समाचार हम तक पहुँचा सकता है। डिस्कवरी, नेशनल जॉग्राफिक, ऐनिमल प्लैनेट जैसे चैनल्स कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ और वृत्तचित्र प्रसारित करते हैं। भारत में इनका प्रसारण हिंदी भाषा में होता है। कार्टून नेटवर्क, पोगो, हंगामा आदि के कुछ कार्यक्रम भी हिंदी में प्रस्तुत होते हैं। यह अनुवाद के कारण ही संभव हुआ है।

फिल्में संचार का अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम हैं। यह मनोरंजन का एक साधन माना जाता है लेकिन इसके माध्यम से लोकशिक्षण का काम भी बड़े जबरदस्त तरीके से किया जा सकता है, किया जाता है। एक भाषा में खूब लोकप्रियता हासिल कर चुकी फिल्म कितनी ही मनोरंजक क्यों न हो, उस भाषा से अनजान लोग उसका आनंद नहीं उठा सकते। अनुवाद के कारण उस फिल्म का आनंद अन्य भाषाभाषी भी उठा सकते हैं। यही बात किसी शिक्षाप्रदेय फिल्म के साथ भी लागू है। अनुवाद के कारण ही व्यापक लोकशिक्षण सिद्ध हो सकता है।

फिल्मों से प्राप्त उत्पादन भारत की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत ही क्या फिल्मों का उत्पादन वैश्विक अर्थव्यवहार में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अमेरिका में बनी टाइटानिक, ज्यूरासिकपार्क जैसी

फिल्में विश्वभर में सफल सिद्ध हुई। इसका कारण केवल उनका योग्य अनुवाद है। लगान जैसी फिल्म ने करोड़ों रुपयों का मुनाफा विश्वभर में कमाया। यह भी अनुवाद के कारण की संभव हो पाया।

संचार माध्यमों के समाचारपत्र, रेडियो, दूरदर्शन, फिल्में आदि क्षेत्रों के अलावा अंतर्राष्ट्रीय संबंध, भारतीय संसद, पर्यटन के क्षेत्र, धर्म और दर्शन, साहित्य आदि क्षेत्रों में अनुवाद अत्यधिक उपयुक्त साबित हो चुका है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विश्वभर में संभवतः एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ अनुवाद एक वरदान के रूप में विद्यमान नहीं है। अनुवाद का वास और उपयोगिता हर जगह विद्यमान है।

7. अनुवादक की योग्यता/गुण

अनुवाद याने पुनःकथन ! एक भाषा की सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतर ही अनुवाद है। इस तरह का रूपांतरित साहित्य ही अनूदित साहित्य कहलाता है। इस अनूदित साहित्य का निर्माता होता है 'अनुवादक' !

रैण्डम हाऊस डिक्शनरी में अनुवादक की परिभाषा इस प्रकार मिलती है - One who translates to change the form.

अर्थात एक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में हू-ब-हू रूपांतरित करने वाला 'अनुवादक' कहलाता है। सच कहें तो अनुवादक एक माध्यम होता है। वह एक भाषा के लेखक के भाव या विचार दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करता है। आदर्श अनुवाद के लिए या समतुल्य अभिव्यक्ति के लिए अनुवादक में विशिष्ट गुणों का या विशेषताओं का होना आवश्यक है। इसका कारण है कि अनुवादक की सफलता पर ही अनूदित साहित्य की सफलता निर्भर होती है। सफल अनुवादक के लिए उसके पास निम्नलिखित बातों का ज्ञान जरूरी है।

स्रोत भाषा का ज्ञान :

स्रोत भाषा से अभिप्राय है - मूल कृति की या मूल रचना में प्रयुक्त भाषा। अनुवादक जिस रचना का अनुवाद करना चाहता है, उस रचना की भाषा याने स्रोत भाषा का ज्ञान उसके लिए आवश्यक है।

प्रत्येक भाषा का अपना-अपना परिवेश होता है, जिसमें वह पनपती रहती है। अतः उसकी अपनी ध्वन्यात्मक, रूपात्मक, वाक्यात्मक, अर्थगत, लोकोक्ति या मुहावरे आदि विषयक अनेक विशेषताएँ होती हैं और ये विशेषताएँ अन्य भाषाओं से भिन्न होती है। अनुवादक के लिए इन सबकी जानकारी आवश्यक है। उसे स्रोत भाषा पर इतना अधिकार होना चाहिए और उस भाषा की सामग्री के स्तर का वैसा ही ज्ञान होना चाहिए, जैसा कि मूल भाषा भाषी के पास होता है। उदाहरण के तौर पर कहना हो तो, मराठी की 'ज्ञानेश्वरी' मातृभाषी को जिस प्रकार सहजता से समझ में आ जाती है, उसी प्रकार उसका अनुवाद करने वाले अनुवादक की भी समझ में आ जानी चाहिए। तभी वह सफलता के साथ ज्ञानेश्वरी का अन्य भाषा में अनुवाद कर सकेगा। इसी लिए जरूरी है कि अनुवादक पहले स्रोत भाषा पर अच्छा अधिकार पाए। स्रोत भाषा का सूक्ष्म ज्ञान उसके अनुवाद कार्य में निश्चित सहायक सिद्ध होगा।

लक्ष्य भाषा का ज्ञान :

अनुवादक जिस भाषा में मूल रचना का अनुवाद करना चाहता है, उस भाषा का भी परिपूर्ण ज्ञान उसके लिए अपेक्षित है, वांछनीय है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा (याने मूल रचना की भाषा और अनुवाद करने की भाषा) दोनों भाषाओं का ज्ञान अनुवाद की सफलता की दृष्टि से आवश्यक होता है। यह अनुवादक को मालूम होना चाहिए कि जिस भाव या विचार को वह अनूदित करना चाहता है, अनुवाद की भाषा में उस भाव या विचार की समतुल्य अभिव्यक्ति कैसे हो सकती है। लक्ष्य भाषा का सूक्ष्म ज्ञान इसी लिए आवश्यक माना जाता है। लक्ष्य

भाषा याने अनुवाद की जो भाषा होगी, उसकी अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। उन विशेषताओं को, उनकी बारीकियों को भली भाँति जानना अनुवादक के लिए निश्चित आवश्यक है।

विषयगत ज्ञान :

अनुवादक जिस कृति का अनुवाद करना चाहता है, उस कृति के प्रतिपाद्य विषय का ज्ञान उसे होना चाहिए। तभी वह अनुवाद करते समय उस रचना को उचित न्याय दे सकेगा। अगर प्रतिपाद्य विषय उसे पूरी तरह से अवगत नहीं है, तो अनुवाद में त्रुटियों की संभावना हो सकती है। उदाहरणार्थ - अनुवादक किसी ऐतिहासिक उपन्यास का अनुवाद कर रहा हो, तो उसके लिए जरूरी है कि पहले वह उस ऐतिहासिक घटना/व्यक्ति के संबंध में इतिहास जान ले। उस ऐतिहासिक विषय का ज्ञान उसके अनुवाद कार्य में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगा।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। कई वैज्ञानिक पुस्तकें या ग्रंथ हररोज प्रकाशित हो रहे हैं। ऐसे वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद के समय भी अनुवादक के लिए विषयगत ज्ञान की बहुत आवश्यकता है। अगर वह स्वयं विज्ञान शाखा में शिक्षित है, तो बहुत अच्छा ! अगर नहीं है तो यह उसका काम होगा कि उस विषय के जानकार या तज्ञ लोगों से वह विषयगत जानकारी प्राप्त कर ले और फिर अनुवाद का कार्य करे। इससे उसके अनुवाद में विषयगत दोष या त्रुटियाँ नहीं रहेंगी और अनुवाद की सफलता के लिए यह बात बड़ी महत्वपूर्ण है।

अनुवाद के लिए जो रचना या कृति अनुवादक उठाएगा, उस प्रत्येक कृति के प्रतिपाद्य विषय का संबंध उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिवेश से होता है। उस विषय का समसामयिक संदर्भ भी महत्व का होता है। अनुवादक अगर इन परिस्थितियों से भली भाँति परिचित होगा, तो अपने अनुवाद कार्य में वह अधिक सफल रहेगा। कारण स्पष्ट है कि जिन स्थितियों से उसकी रचना का प्रतिपाद्य विषय उभरता है, उन स्थितियों का ज्ञान उसके लिए हितकर रहेगा। उदाहरण के तौर पर कहना हो तो मराठी के एक प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदी गोपाल' का अनुवाद तभी सफलता से हो सकेगा, जब अनुवादक उस समय की मराठी नारी के सामाजिक स्थान को उसके परिवेश के साथ जानता हो, उसके लिए उस समय उपलब्ध सुविधाओं अथवा प्रतिकूलताओं से परिचय रखता हो। उसे समसामयिक स्थितियों का अध्ययन अच्छी तरह से करना होगा।

विधा का ज्ञान :

साहित्य की विभिन्न विधाएँ हैं - कहानी, उपन्यास, कविता, खंडकाव्य, नाटक आदि। प्रत्येक विधा की अपनी शिल्पगत विशेषताएँ होती हैं और समयानुसार उनमें कुछ परिवर्तन भी होते रहते हैं। अनुवादक के लिए आवश्यक है कि वह साहित्यिक विधाओं की शिल्पगत विशेषताओं का भी ज्ञान रखे। अगर वह किसी नाटक का अनुवाद करना चाहता है, तो नाटक विधा की विशेषताओं का ज्ञान आवश्यक रहेगा। इन विशेषताओं में भी भारतीय नाटक एवं पाश्चात्य नाटक की विधागत विशेषताओं की जानकारी उसे होनी चाहिए। नाटक के अनुवाद के समय आवश्यकतानुसार उसे रंगमंचीय विशेषताओं का भी ज्ञान जरूरी है। कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक कठिनाई महसूस करता है, कारण कविता का अनुवाद करते समय सतर्कता की आवश्यकता है। अनुवादक स्वयं कवि हो, तो कहीं उसकी प्रतिभा की छाप अनुवाद पर न पड़े। स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा का उचित समन्वय करके मूल कविता के भाव अनुवाद में अभिव्यक्त हों।

अनुवाद करने के लिए जो रचना अनुवादक पसंद करेगा, उस रचना की विधा के शिल्प विधान का ज्ञान उसके लिए बहुत जरूरी है।

शैलीगत ज्ञान :

अनुवादक का मूल उद्देश्य होता है कि स्रोत भाषा की कृति को लक्ष्य भाषा में निकटतम रूप में भाषांतरित करना। अतः अच्छा और सफल अनुवादक वह है, जो अनुवाद की शैली प्रायः वही रखता है, जो मूल रचना की होती है।

शैली के मुख्य तत्त्वों में शब्द चयन, अलंकार, शब्द शक्तियाँ तथा छंदों आदि का समावेश होता है और उन्हें अनुवाद में उतारने में कठिनाई अनुभव होती है। अनुवादक की सफलता इस बात में है कि वह इनका सौंदर्य लक्ष्य भाषा में ला सके।

हर भाषा की अपनी-अपनी शैली होती है। उसपर अपने युग का भी प्रभाव होता है। जयशंकर प्रसाद के काल में हिंदी की शैली संस्कृतनिष्ठ थी तो बाद में खड़ी बोली का बोलबाला रहा। अनुवादक के लिए जरूरी है कि वह लक्ष्य भाषा के काल और उसकी परंपरा के अनुसार शैली को अपनाता रहे। शैली भाव संप्रेषण का साधन है, अतः स्रोत भाषा के भाव लक्ष्य भाषा के पाठकों तक पहुँचाने के लिए अनुवादक को शैलीगत ज्ञान रखना चाहिए।

भाषा विज्ञान का ज्ञान :

अनुवाद में एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में व्यक्त किया जाता है इसी कारण अनुवाद का सीधा संबंध भाषा विज्ञान से है और वह भी तुलनात्मक भाषा विज्ञान से। तुलनात्मक भाषा विज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा की जितनी अच्छी सामग्री उपलब्ध होगी, अनुवाद उतना ही अच्छा होगा।

ध्वनि विज्ञान का ज्ञान :

व्यक्तिवाचक संज्ञा या परिभाषिक शब्दों का अनुवाद करने के लिए अनुवादक के पास ध्वनि विज्ञान का भी ज्ञान आवश्यक है। इस संदर्भ में उसे इस बात का भान रखना चाहिए कि वह प्रचलित उच्चारणों की ओर विशेष ध्यान दे और उन्हें अपनाए।

अर्थ विज्ञान का ज्ञान :

अनुवादक को मूल रचना के शब्दों के कोशार्थ या अभिधागत अर्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ को समझना पड़ता है। साथ-साथ उसे शब्दों के विशिष्ट प्रयोग तथा विशेष संदर्भ भी देखने पड़ते हैं। इसके लिए अनुवादक को अर्थ विज्ञान का जानकार होना चाहिए। आखिर किसी भी शब्द का अर्थ क्या है अथवा किस संदर्भ में उसका अर्थ समझना है, इसका महत्व बहुत है। किसी कृति का सफल अनुवादक अधिक-से-अधिक गहराई में मूल रचना को जानने वालों में से एक होता है।

किसी रचना के अर्थ का भावन करते समय अनुवादक को स्थान, काल, संदर्भ, लिंग, वचन, उपसर्ग, प्रत्यय, बलाघात, मुहावरे-कहावतें आदि बातों का ज्ञान रखना आवश्यक है।

वाक्य विज्ञान का ज्ञान :

वाक्य विज्ञान की व्यावहारिक जानकारी के बिना सफल अनुवाद नहीं किया जा सकता। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में व्यवहृत वाक्यरचना का और वाक्य विज्ञान का गहरा ज्ञान अनुवाद की सफलता के लिए आवश्यक है। भाषा की अपनी प्रकृति होती है और अपनी रचनागत विशेषताएँ भी। वाक्य विज्ञान के संदर्भ में अनुवादक के लिए उनका ज्ञान आवश्यक है।

रूप विज्ञान का ज्ञान :

किसी रचना का अनुवाद करते समय अनुवादक भावानुकूल या विचारानुकूल शब्दों या रूपों का निर्माण भी कर सकता है। इस संदर्भ में वह एक सीमा तक कारयत्री प्रतिभा का प्रयोग कर सकता है। सफल अनुवाद क के लिए आवश्यक है कि वह नए शब्दों या नए रूपों का निर्माण करें।

अनुवाद के प्रकारों का ज्ञान :

अनुवाद के शब्दानुवाद, भावानुवाद, आदर्शानुवाद, मूल निष्ठ अनुवाद आदि विभिन्न प्रकार माने जाते हैं। अनुवादक को इन सभी प्रकारों का ज्ञान होना चाहिए। आदर्शानुवाद वह है जो शब्दानुवाद और भावानुवाद को यथाअवसर अपनाते हुए मूलभाव के साथ-साथ मूल शैली को भी अपने में उतार लेता है।

काव्यानुवाद, नाट्यानुवाद, वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद या तांत्रिक पारिभाषिक शब्दावली से युक्त साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक को विशेष और विभिन्न प्रकार की सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं।

अनुवादक का मूल उद्देश्य होता है कि अनुवाद करते समय मूलरचना की लक्ष्य भाषा में निकटतम अभिव्यक्ति की जाए। तथापि उसे यह भी देखना चाहिए कि अनुवाद लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल हो। उसपर स्रोत भाषा की किसी भी रूप में छाया न हो।

आदर्श अनुवाद वह माना जाएगा, जिसमें अनुवादक स्रोत भाषा से मूल सामग्री का अभिव्यक्ति और अर्थ की दृष्टि से लक्ष्य भाषा में निकटतम समानकों द्वारा अनुवाद करता है। इसे स्वाभाविक अथवा सटीक अनुवाद भी कहा जा सकता है। अनुवाद का यह प्रयास होना चाहिए कि अनुवाद को पढ़कर लक्ष्य भाषा भाषी ठीक मूल रचना को ही पढ़ने का आनंद अनुभव कर सकें।

सफल अनुवादक के पास विद्वत्ता, प्रतिभा, निष्पक्षता, विवेक, उच्च आकलनशक्ति आदि गुणों की भी आवश्यकता है। इन गुणों के साथ उपरोक्त बातों का ध्यान रखकर अगर वह अनुवाद करता है, तो निश्चित रूप से उसका अनुवाद सफल और आदर्श अनुवाद माना जा सकता है।

8. अनुवाद प्रक्रिया

अनुवाद एक भाषा के पाठ का दूसरी भाषा में पुनःकथन है। इसमें अनुवादक का संबंध जिस मूल भाषा का अनुवाद करना है वह स्रोत भाषा और जिस दूसरी भाषा में अनुवाद करना है वह लक्ष्य भाषा इन दोनों के साथ होता है। अनुवाद की एक निश्चित प्रक्रिया होती है। इसमें अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों को गहराई से जानना, उनकी स्वाभाविक प्रकृति को जानना तथा अनूद्य सामग्री के विषय का पर्याप्त ज्ञान रखना आवश्यक है।

इस प्रक्रिया को पूरी तरह वैज्ञानिक बताते हुए **नाइडा ने इसके पाँच सोपान बनाए हैं** -

a) अनूद्य सामग्री का व्याकरणिक विश्लेषण b) अनूद्य सामग्री का अर्थगत विश्लेषण

c) अनूद्य सामग्री के व्यंग्यार्थ का बोध d) अनूद्य सामग्री के कथ्य का स्थानांतरण (संक्रमण,अंतरण)

e) अनूद्य सामग्री की लक्ष्य भाषा में पुनर्रचना (पुनर्गठन)

- **न्यूमार्क ने अनुवाद प्रक्रिया के चार सोपान माने हैं -**

  1. मूलभाषा पाठ, 2. बोधन और व्याख्या, 3. अभिव्यक्ति और पुनःसर्जन, 4. लक्ष्य भाषा पाठ।

- **बाथगेट ने इस प्रक्रिया के सात सोपान माने हैं -**

  1. समन्वय, 2. विश्लेषण, 3. बोधन, 4. पारिभाषिक अभिव्यक्ति, 5. पुनर्गठन, 6. पुनरीक्षण, 7. पर्यालोचन।

- **डॉ. सुरेश कुमार ने तीन स्थितियाँ बताई हैं -**

  1. अनुवाद पूर्व स्थिति, 2. अनुवाद कार्य की स्थिति, 3. अनुवादोत्तर स्थिति।

- **डॉ.श्रीवास्तव और डॉ. गोस्वामी ने तीन चरण माने हैं -**

  1. मूलपाठ के पाठक की भूमिका और अर्थग्रहण प्रक्रिया, 2. द्विभाषिक की भूमिका और अर्थांतरण प्रक्रिया, 3. अनूदित पाठ के रचयिता की भूमिका और संप्रेषण प्रक्रिया।

- **डॉ. भोलानाथ तिवारी ने इसके पाँच चरण माने हैं -**

  1. पाठपठन, 2. पाठविश्लेषण, 3. भाषांतरण, 4. समायोजन, 5. मूल से तुलना।

इन सभी को मिलाकर इस प्रक्रिया के मोटे तौर पर तीन सोपान होते हैं –

1. मूल भाषा के पाठ का बोधन और व्याख्या,
2. कथ्य की लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति,
3. मूल से तुलना।

इनका विवरण इस प्रकार है –

♦ मूलभाषा का पाठबोधन और व्याख्या (पाठ पठन, पाठ विश्लेषण) :

अनुवादक सबसे पहले मूल भाषा के पाठ का पठन करके विश्लेषण करता है; पाठ की व्याकरणिक संरचना तथा शब्दों एवं शब्दशृंखलाओं का अर्थगत विश्लेषण कर वह मूलपाठ के संदेश को ग्रहण करता है।

अनुवाद में मात्र कोशगत अर्थ उपयुक्त नहीं होता। स्थान, काल, प्रयोजन के कारण अर्थ बदलते हैं। भारत में 'चेक' 'धनादेश' का अर्थ देता है, तो अमेरिका में वह 'वित्त' का। 'सिनेमा' के लिए अमेरिका में 'मूवी' शब्द, तो हिंदी में 'फिल्म' और युवावर्ग में 'पिक्चर' शब्द प्रचलित है। मध्यकाल में 'हरिजन' शब्द का अर्थ है 'भक्त' और आधुनिक काल में वह एक विशेष पिछड़ी जाति के लिए सम्मानसूचक अर्थवाला शब्द है। अनूद्य सामग्री जिस स्थान और काल की हो, उसके अनुसार अनुवाद करना आवश्यक हो जाता है।

मूल सामग्री के अर्थ निर्धारण में उस भाषा की संज्ञाओं की प्राकृतिक तथा व्याकरणिक लिंग स्थिति का बोध भी आवश्यक होता है। जैसे, संस्कृत में 'मित्र' शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त हो तो 'सूर्य' और नपुंसक लिंग में प्रयुक्त हो तो 'दोस्त' अर्थ देता है। वचन के बारे में भी ध्यान रखना आवश्यक है। हिंदी में प्राण, हस्ताक्षर, दर्शन, होश आदि कुछ शब्द एकवचन जैसे होकर भी वाक्य में हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। मुहावरों-कहावतों के अर्थ लाक्षणिक विशिष्ट होते हैं। 'पेट में चूहे दौड़ना' का अर्थ है 'खूब भूख लगना'। उसका शाब्दिक अनुवाद गलत होगा। किसी वाक्य के कभी-कभी दो अर्थ निकलते हैं। अनुवाद करते समय प्रसंग और संदर्भ के अनुसार, एक योग्य अर्थ को ग्रहण करना चाहिए। जैसे, राम ने दौड़ते हुए लड़के को पकड़ा- 1. राम ने स्वयं दौड़कर लड़के को पकड़ा; 2. राम ने दौड़ने वाले लड़के को पकड़ा। मूल सामग्री के अर्थग्रहण में वाक्य विश्लेषण का भी अपना महत्व होता है। स्रोत भाषा के वाक्य में जो अवयव एक दूसरे के निकटतम हों, उन्हें जानकर ही अनुवाद करना चाहिए। जैसे, बैठो मत जाओ! – 1. बैठो मत, जाओ 2. बैठो, मत जाओ।

इस तरह अनुवादक भाषा सिद्धांत पर आधारित भाषा विश्लेषण की तकनीकों का उपयुक्त रीति से अनुप्रयोग करता है। विश्लेषण में इस बात पर बल देना चाहिए कि कहाँ-कहाँ शब्द का, पदबंध का, उपवाक्य का, वाक्य का अनुवाद करना है और कहाँ एक वाक्य को एकाधिक वाक्यों में तोड़कर अनुवाद करना है तथा कहाँ एकाधिक वाक्यों को एक वाक्य में मिलाकर अनुवाद करना है। असामान्य रूप से जटिल तथा लंबे और अनेकार्थ वाक्यों और वाक्यांशों, पदबंधों के अर्थबोधन में हो सकने वाली कठिनाइयों का हल करने में मूलपाठ का विश्लेषण सहायक रहता है।

अर्थबोध हो जाने के बाद अनुवादक संदेश का लक्ष्यभाषा में संक्रमण करता है। यह प्रक्रिया उसके मस्तिष्क में होती है। इसमें वह मूल पाठ के लक्ष्यभाषागत अनुवादपर्याय निर्धारित करता है तथा दोनों भाषाओं के बीच विभिन्न स्तरों और श्रेणियों में तालमेल बैठाता है।

अंत में अनुवादक मूलभाषा के संदेश को लक्ष्य भाषा में उसकी संरचना एवं प्रयोग नियमों तथा विधागत रूढ़ियों के अनुसार इस प्रकार पुनर्गठित करता है कि वह लक्ष्यभाषा के पाठक को स्वाभाविक प्रतीत होता है या कम-से-कम अस्वाभाविक प्रतीत नहीं होता।

♦ कथ्य की लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति (भाषांतरण/पुनर्गठन):-

पाठ विश्लेषण के आधार पर यह भाषांतरण का, पुनर्गठन का या लक्ष्यभाषा में मूर्त अभिव्यक्ति का सोपान है। अनुवाद प्रक्रिया की जानकारी के संबंध में हमें पुनर्गठन के सोपान पर पाठ के जिन प्रमुख आयामों की उपयुक्तता पर ध्यान देना अभीष्ट है वे हैं -अर्थ, व्याकरणिक संरचना तथा प्रारूप, शब्दक्रम, सहप्रयोग, भाषाभेद तथा शैलीगत प्रतिमान। स्रोतभाषा के पाठ बोधन में जिन बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक है, उन सभी बातों पर भी लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति करते समय भी ध्यान देने की आवश्यकता है। इन सबकी आधारभूत कसौटी है लक्ष्यभाषागत उपयुक्तता तथा स्वाभाविकता। इन गुणों की निष्पत्ति के लिए कई बार दोनों भाषाओं में समानता की स्थिति सहायक होती है, तो कई बार असमानता की। उदाहरण के लिए, यह आवश्यक नहीं कि मूलभाषा के समस्त पद के लिए लक्ष्यभाषा का उपयुक्त अनुवादपर्याय एक समस्त पद ही हो; यह संरचना एक पदबंध (परसर्गयुक्त) भी हो सकती है। देखना यह होता है कि लक्ष्यभाषा में संदेश का पुनर्गठन उपर्युक्त घटकों की दृष्टि से उपयुक्तता तथा स्वाभाविकता की स्थिति की निष्पत्ति करें; वे घटक लक्ष्यभाषा की प्रवृत्ति,प्रकृति तथा परंपरा के अनुरूप हों। मूलभाषा में व्याकरणिक संरचना के कतिपय तथ्यों का लक्ष्यभाषा में स्वरूप बदल सकता है, यद्यपि यह सदा आवश्यक नहीं होता।

यहाँ अंतरित पाठ का समायोजन करते हैं। इसमें 1) भाषा में सहज प्रवाह हो, 2) स्रोतभाषा की केवल छाया न हो और, 3) भाषिक तथा वैषयिक अर्थ स्पष्ट हो, इन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

सारांश यह है कि लक्ष्यभाषा में जो स्वाभाविक और उपयुक्त प्रतीत हो तथा जो लक्ष्यभाषा की परंपरा के अनुकूल हो (स्वाभाविकता, उपयुक्तता, तथा परंपरानुवर्तिता ये तीनों एक सीमा तक अन्योन्याश्रित हैं), उसके आधार पर लक्ष्यभाषा में संदेश का अंतरण, भाषांतरण या पुनर्गठन होता है।

♦ मूल से तुलना :-

अंत में अंतरित पाठ याने भाषांतर या अभिव्यक्ति की, अनुवाद की, मूल से एक बार तुलना अवश्य कर लेनी चाहिए। अनुवाद मूल से न कम हो, न अधिक, न कुछ हटकर हो। वह अर्थसंकोच, अर्थविस्तार तथा अर्थादेश के दोषों से मुक्त हो। वह यथासंभव मूल की भाषा-शैली के अनुरूप हो।

अनुवाद की प्रक्रियागत विशेषताएँ या स्थितियाँ

अनुवाद प्रक्रिया में से गुजरते समय उसमें कुछ विशेषताएँ या गुण-दोष भी लक्षित होते हैं। ये विशेषताएँ निम्न प्रकार की हैं -

1. अर्थयोग :-

अनुवाद प्रक्रिया में एक विशेषता या स्थिति 'अर्थयोग' है। सामान्यतः अनुवादक को इतनी छूट नहीं होती कि वह मूलपाठ से अधिक भाव अभिव्यक्त करे। फिर भी कई बार अनुवाद में कुछ वांछित-अवांछित अर्थच्छाया जुड़ जाती है जिसे 'अर्थयोग' कहा जाता है। इसमें मूल से अधिक अर्थ प्रदान किया जाता है। कई बार अनुवादक यह भूल जाता है कि वह किसी कृति का अनुवाद कर रहा है, वह कृति का निर्माता नहीं है बल्कि अनुवादक है। इस स्थिति में कई बार उसकी सर्जकता जग जाती है और वह ऐसा अनुवाद कर देता है जिससे मूल से भी

अधिक भाव अनुवाद में जुड़ जाता है। हिंदी 'जुही' का फारसी अनुवाद 'यासमीन' के रूप में किया जाए तो यह निश्चित ही अर्थयोग कहलाएगा। 'पैसा नुसता वाहत होता' इसका 'पुरुष पुरातन की वधू ने मानो अपनी चंचलता से मुँह मोड़ लिया था।' यह अनुवाद मूल से कहीं बढ़कर अर्थ देता है। यह अर्थयोग कहलाएगा। लेकिन इस अर्थयोग से मूल की अभिव्यक्ति में अवश्य ही लालित्य आ गया है। मराठी के 'हजारों रुपए खर्च झाले' का अनुवाद 'लाखों रुपए खर्च हो गए' के रूप में किया जाना अर्थयोग है क्योंकि यह आवश्यकता से अधिक अर्थ प्रदान कर रहा है। This medicine cures every disease का 'यह रामबाण औषधि है' तथा 'cooked story' का 'मनगढंत कहानी' के रूप में अनुवाद अर्थयोग है।

2. अर्थहानि :-

'अर्थहानि' का सीधा तात्पर्य 'अर्थ का ह्रास' या 'अर्थ की हानि' से है। अनुवाद कार्य में मूल का कथ्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात होती है। अनुवादक शब्द- शब्द का अनुवाद नहीं कर पाता है तो उसे माफ किया जा सकता है लेकिन अनुवाद में कथ्य का अभिव्यक्त न होना बहुत बड़ा दोष माना जाएगा। अनुवाद करते समय वांछित अर्थच्छाया का छूट जाना अर्थहानि कहलाता है। स्रोतभाषा के पाठ से जो भाव निकलता है वह अनुवादक की अज्ञता, अल्पज्ञता, अर्थबोधन में असमता या असावधानी के कारण अनुवाद में नहीं आ पाता। अनुवाद में अर्थहानि का दोष तब भी आ सकता है जब अनुवादक स्रोतभाषा से भली भाँति वाकिफ न हो या उसने सही ढंग से पठन-विश्लेषण न किया हो। जैसे - हिंदुस्तान में 'गधा' मूर्खता का प्रतीक है। लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते कि 'गधा' अमेरिका का राष्ट्रीय प्राणी है। भारत में 'उल्लू' एक बेवकूफ व्यक्ति के लिए प्रयुक्त गाली है लेकिन इंग्लैंड में 'उल्लू' बुद्धिमानी का प्रतीक माना जाता है। 'संशोधन' हिंदी में 'सुधार' और मराठी-गुजराती में 'अनुसंधान' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'हल्ला' मराठी-गुजराती में 'आक्रमण' तो हिंदी में 'शोरगुल' अर्थ देता है। यदि अनुवादक इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ बारीकी से नहीं जानता है तो अनुवाद में अर्थहानि का दोष आ ही जाता है।

3. अर्थांतरण :-

अर्थांतरण को अर्थादेश भी कहा जाता है। अनुवाद की प्रक्रिया में कई बार मूलपाठ की अर्थच्छाया अनूदित पाठ तक पहुँचते-पहुँचते पूरी तरह बदल जाती है। अर्थच्छाया के स्वरूप में आया यह परिवर्तन अर्थांतरण या अर्थादेश कहलाता है। दूसरे शब्दों में स्रोतभाषा पाठ में स्थित भाव लक्ष्यभाषा पाठ में बहुत भिन्नता के साथ आ जाए तो यह अर्थांतरण कहलाता है। कई बार स्रोतभाषा की अभिव्यक्ति के लिए लक्ष्यभाषा में सटीक विकल्प नहीं मिलता और जो विकल्प मिलता है वह अर्थ के स्वरूप में परिवर्तन लाता है। इन स्थितियों में अर्थांतरण संभव है। संत काव्य में कई बार आया शब्द 'हरिजन' अपने समय में 'भक्त' के लिए प्रचलित था लेकिन अब जाति विशेष के लिए प्रयुक्त होता है। 'हरि' के संदर्भ के अनुसार 'परमेश्वर', 'विष्णु', 'राम', 'कृष्ण', 'शिव', 'इंद्र', 'बंदर', 'घोड़ा', 'सिंह', 'चंद्रमा', 'सूर्य', 'साँप', 'मोर', 'अग्नि', 'वायु', 'पीला', 'हरा' आदि अर्थ होते हैं। इस प्रक्रिया में अर्थग्रहण करते समय शब्द, पद, उपवाक्य, वाक्य, मुहावरे, कहावतें आदि इकाइयों को एक दूसरे के परिप्रेक्ष्य में देखना पड़ता है तथा योग्य स्थान, काल, संदर्भ, लिंग, वचन, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, बलाघात, सुरलहर आदि बातों की ओर ध्यान देना पड़ता है, अन्यथा अर्थांतरण की बहुत संभावना होती है।

4. पुनःसर्जन :-

स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक भिन्नता के कारण कभी-कभी इन भाषाओं के अर्थगत और अभिव्यक्तिगत इकाइयों के लिए लक्ष्यभाषा में योग्य पर्याय नहीं मिलते। कुछ स्थलों पर अनुवादक से केवल अनुवाद की नहीं, बल्कि सर्जन क्षमता की भी अपेक्षा रखी जाती है। साहित्य में सांस्कृतिक और मिथकीय संदर्भ आते हैं। कुछ शब्द बिंब और प्रतीक बनकर आते हैं। उन्हें लिप्यंतरित करने अथवा पर्याय देने से काम नहीं बनता। अनुवादक को दोनों भाषाओं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान होना चाहिए। ऐसे स्थलों पर उसे समाहार (comprehension) और संरचना (formation) की विधि अपनानी पड़ती है।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से युक्त पुनःसर्जन के उदाहरण : अंग्रेजी वाक्य में 'satan' और 'Pandemonium' शब्द आने पर भारतीय भाषाओं में उनका अनुवाद करते समय अनुवादक का काम न शब्दार्थ से, न लिप्यंतरण से बनेगा। अनुवादक को चाहिए कि वह उपयुक्त अनुवाद के लिए भारतीय संस्कृति के अनुसार उस प्रवृत्ति के द्योतक शब्द - 'रावण' और 'लंका' शब्द रखे, जो इस संदर्भ में अधिक निकट, अनुकूल और अर्थद्योतक होंगे। Herculean effort का भारतीय भाषा में अनुवाद 'भगीरथ प्रयत्न' ही उचित होगा।

बिंबात्मक शब्दों के अनुवाद में अनुवादक को अपनी सृजनात्मक क्षमता से अधिक लाभ उठाना पड़ता है। उदाहरणार्थ, बिंब : अंग्रेजी मूल में 'hen' का प्रयोग 'Chiken hearted' के अर्थ में होगा, तो सृजनशील अनुवादक उसका हिंदी अनुवाद 'मुर्गी' के प्रयोग द्वारा न करके 'कमजोर दिल' शब्द द्वारा करेगा; 'Sunny smile' का हिंदी अनुवाद 'रविस्मित' नहीं, 'रजतहास' करेगा।

प्रतीक शब्दों के अनुवाद में भी पुनःसर्जन की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरणार्थ, प्रतीक : 'Beware of the crown, it is serpentile' के 'मुकुट से सावधान, इसमें छिपा है विषधर महान' अनुवाद में 'serpentile' का 'विषधर' प्रतीक के रूप में प्रयोग अनुवादक की सर्जनशीलता का अच्छा उदाहरण है। अंग्रेजी के 'He is an owl' का हिंदी में अनुवाद 'वह उल्लू है' गलत होगा, ठीक अनुवाद होगा 'वह सरस्वती पुत्र है'।

जब मुहावरों-कहावतों के लिए दूसरी भाषा में समतुल्य मुहावरे-कहावतें नहीं मिलते, तब भी अनुवादक को अपनी सृजनशील प्रतिभा के आधार पर उपयुक्त, सुपरिचित उचित अभिव्यक्तियों का प्रयोग करना पड़ता है। जैसे, 'The husband and wife lead a cat and dog life' का सृजनशील अनुवादक अनुवाद करेगा- 'पति-पत्नी में महाभारत छिड़ा रहता है।'

इस तरह सांस्कृतिक संदर्भों, बिंबों, प्रतीकों, मुहावरों-कहावतों से युक्त सामग्री के अनुवाद में अनुवादक को पुनःसर्जन का तत्त्व ही अधिक सहायक बन जाता है।

9. अनुवाद कार्य में सहायक साधन

अनुवाद करते समय भाषा अत्यधिक महत्वपूर्ण बात है। भाषा में निरंतर परिवर्तन चलता रहता है। भाषा पर संपूर्ण रूप से अधिकार पाना कठिन बात है। प्रायः साधारण मनुष्य एक जीवन में एक ही भाषा पर सर्वोपरि अधिकार पा सकता है। लेकिन अनुवादक के लिए स्थिति अलग है। अनुवाद करने वाले व्यक्ति का कम-से-कम दो भाषाओं पर अधिकार होना चाहिए। बात थोड़ी कठिन है। यदि किसी तरह अधिकार स्थापित कर भी ले तो शब्द संपदा की सीमा बनी रहती है। प्रत्येक क्षेत्र, उसकी शाखाएँ, उनके नित नए आविष्कार, बनते हुए सिद्धांत आदि बातों का पूरा ज्ञान होना कठिन प्रतीत होता है।

यही कारण है कि एक चतुर अनुवादक अनुवाद करते समय सहायक साधन-सामग्री की सहायता आवश्यक मानता है। गलत अनुवाद करने से अच्छा यह है कि सहायक सामग्री से मदद लेकर सही अनुवाद कर ले। अनुवाद की सहायक सामग्री में कई बातें शामिल हैं जिनमें पहला स्थान अनिवार्यतः कोशों का ही है। इसके पश्चात संदर्भ ग्रंथ, वर्णन ग्रंथ, सहायक सूचियाँ, कंप्यूटर जैसे सहायक यंत्र आदि का समावेश किया जा सकता है।

♦ कोश –

किसी भी वस्तु के संग्रह या संचय को 'कोश' कहते हैं। साहित्य के क्षेत्र में 'कोश' का तात्पर्य 'शब्द के संग्रह और संचय' से है। किसी शब्द को लेकर जरा भी संदेह हुआ तो अनुवादक लापरवाही के साथ आगे न बढ़े। अपने ज्ञान पर आवश्यकता से अधिक भरोसा करना ठीक बात नहीं। वह संबंधित साधन-सामग्री से अवश्य सहायता ले।

कोश मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं। पहला प्रकार शब्दकोश जिनमें शब्दों का संचय और संग्रह हो। दूसरा प्रकार विषय विशेष तथा वर्णनात्मक कोश।

♦ एक भाषिक कोश –

इसमें किसी एक ही भाषा के एक शब्द के लिए उसी भाषा में उस शब्द के पर्यायवाची शब्दों तथा उस शब्द के विभिन्न अर्थों या छटाओं वाले शब्दों को संकलित किया जाता है। इसमें शब्द की व्युत्पत्ति या मूल भाषा, उसकी व्याकरणिक स्थितियों को भी सूचित किया जाता है। अनुवादक अनेक पर्यायों में से प्रसंग,घटना,स्थिति के अनुकूल उचित पर्याय का चयन कर सकता है। अपेक्षित शब्द की योग्य वर्तनी, व्याकरणिक और संरचनात्मक शंकाओं का समाधान भी पा सकता है।

इन कोशों में उस भाषा के 'आँचलिक', 'प्रादेशिक', 'स्थानीय', 'बोली भाषा' के शब्द भी सम्मिलित किए जा सकते हैं। या इनका स्वतंत्र कोश भी किया जा सकता है। लोकसाहित्य, आँचलिक शब्दों से युक्त साहित्य के अनुवाद के लिए इन कोशों से उपयुक्त सहायता मिल सकती है।

◆ **द्विभाषिक कोश** :-

द्विभाषिक शब्दकोश, एक भाषा के शब्द के लिए दूसरी भाषा के कई समानार्थी विकल्प दिया करता है। मराठी या अंग्रेजी के किसी शब्द के लिए हिंदी विकल्प देते हुए कई मराठी-हिंदी, अंग्रेजी-हिंदी, गुजराती-हिंदी शब्दकोश मिल जाएँगे। कई बार किसी एक भाषा के एक शब्द के लिए लक्ष्यभाषा में तीन-चार अर्थ हो सकते हैं। उन्हें दर्शाना भी द्विभाषिक शब्दकोश का ही काम है। इससे अनुवादक अपने अनूद्य पाठ के लिए बिलकुल सही विकल्प का चयन कर सकता है। उदाहरण के लिए - अंग्रेजी शब्द 'केस' के लिए हिंदी में 'मुकदमा', 'बहस', 'घटना', 'रोगी', 'मामला', 'विषय', 'प्रश्न', 'समस्या', 'वस्तुस्थिति', 'दशा', 'डिब्बा', 'बक्स', 'आवरण' जैसे कई सारे विकल्प दिए गए हैं। अनुवादक अपने पाठ के लिए योग्य शब्द का चयन कर सकता है।

इस प्रकार के कोशों की सहायता से अनुवादक अपने कथ्य और शिल्प के अनुसार उपयुक्त शब्द का चुनाव कर सकता है। इस प्रकार के द्विभाषिक कोश प्रत्येक भाषा में उपलब्ध हैं। जैसे - अंग्रेजी-हिंदी, हिंदी-अंग्रेजी कोश, हिंदी-मराठी, मराठी-हिंदी कोश, उर्दू-हिंदी, हिंदी-उर्दू कोश आदि। इनके आरंभिक पृष्ठों पर दी गई उपयोगविधि अनुवादक पढ़ ले और उसी के अनुसार कोशों का प्रयोग कर ले।

◆ **त्रिभाषा कोश** :-

त्रिभाषा कोश में तीन भाषाओं के शब्द होते हैं। इसके भी मुख्यतः दो प्रकार होते हैं।

1) पहला प्रकार **:** द्विभाषिक जैसा : मूलभाषा के शब्द के लिए अन्य भाषा का शब्द देना और पुनः मूल भाषा के ही अन्य समानार्थी शब्द देना। उदा. अंग्रेजी-हिंदी-अंग्रेजी या हिंदी-अंग्रेजी-हिंदी।

2) दूसरा प्रकार **:** मूल भाषा के एक शब्द के लिए दो अन्य भाषाओं के समानार्थी शब्दों का संकलन प्रस्तुत करना। जैसे - अंग्रेजी-हिंदी-मराठी, हिंदी-मराठी-अंग्रेजी। इस प्रकार के त्रिभाषिक कोशों के कारण अनुवादक एक साथ तीन-तीन भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर सकता है।

◆ **अन्य शब्दकोश** :-

1) **शब्द प्रयोग कोश** (Dictionary of Usage) इसमें किसी भाषा के शब्दों के विभिन्न प्रकार के संदर्भ, प्रयोग, उनकी संरचना आदि बातें दी जाती हैं।

2) **व्युत्पत्ति** कोशों में शब्द का मूल उत्स, किस भाषा के, किस शब्द रूप से वह बना है, यह दर्शाया जाता है।

3) एक भाषिक या बहुभाषिक **मुहावरा कोश**।

4) एक भाषिक या बहुभाषिक **कहावत कोश**।

5) एक भाषिक या बहुभाषिक **सुभाषित** या **उद्धरण** या **सूक्ति कोश**।

6) **व्याख्या कोश** : इसमें शब्द के विशिष्ट अर्थों की व्याख्या, विवेचना, स्पष्टीकरण दिया जाता है।

7) **संख्याकोश** : इसमें भारतीय भाषा, संस्कृति, साहित्य में प्रयुक्त विशिष्ट संख्याओं के प्रचलित विभिन्न अर्थ या संदर्भ को स्पष्ट किया जाता है।

♦ **वर्णनात्मक कोश** :-

अनुवादक के लिए केवल भाषा पर अधिकार रखना काफी नहीं है। अनुवादक तथा अनुवाद कार्य दोनों की दृष्टि से विषय विशेष का ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है। इस ज्ञान की संपूर्णता के लिए वह तत्काल वर्णनात्मक कोश से सहायता ले सकता है। उदा. इनसाइक्लोपीडिया, विश्वकोश, संस्कृतिकोश आदि। ऐसे वर्णनात्मक कोशों की मदद से विषय का सविस्तर ज्ञान उसे मिल सकता है जिससे अनुवाद को स्तरीय बनाना बहुत हद तक आसान हो जाता है।

♦ **विषयगत कोश** :-

विषय को आधार बनाकर लिखे गए कोशों को हम मुख्यतः दो भागों में विभाजित कर सकते हैं।

1) साहित्य विशेष कोश

2) साहित्येतर कोश।

साहित्य विशेष कोश में विविध विधाओं से संबंधित कोश, विशिष्ट कृतियों से संबंधित कोश जैसे - कथा कोश, नाट्य कोश, मानस कोश, कामायनी कोश शामिल हैं। इसमें साहित्यकारों से संबंधित कोश भी आते हैं। जैसे- कबीर कोश, सूर कोश, तुलसी कोश। विशिष्ट भाषा के साहित्य से संबंधित कोश भी आजकल बहुत पाए जाते हैं- हिंदी साहित्य कोश, अंग्रेजी साहित्य कोश, प्राचीन चरित्र कोश आदि।

साहित्येतर कोश एक व्यापक विषय है। इसमें विभिन्न विषयों तथा उनसे संबंधित तत्त्वों-सिद्धांतों की जानकारी देने वाले कोश शामिल हैं। जैसे -थीसॉरस, कृषिकोश, पर्यावरण कोश, विज्ञान कोश, मनोविज्ञान कोश, समाज विज्ञान कोश, सेना कोश, औषधि कोश, विधि कोश आदि। इनमें साहित्येतर विषय से संबंधित परिभाषिक शब्दों के साथ ही उस विषय की यथाविस्तार जानकारी भी दी जाती है।

♦ **सूचियाँ** -

शब्दकोशों की ही भाँति विभिन्न विषयों से संबंधित विशिष्ट अभिव्यक्तियों का अनुवाद सूचियों की मदद से किया जा सकता है। ये सूचियाँ अंग्रेजी में 'इंडेक्सेस' कहलाती हैं। आज विविध विषयों से संबंधित विविध प्रकार की सूचियाँ उपलब्ध हैं। इनमें विविध प्रकार के लेखन, उससे संबंधित उपलब्धि, उस विषय से संबंधित सूचनाओं का संकलन शामिल होता है। इन सूचियों से अनुवादक संबंधित विषय को लेकर लिखे गए ग्रंथों, पत्रिकाओं, पांडुलिपियों की जानकारी प्राप्त कर सकता है। इससे अनुवादक की विषय से संबंधित जानकारी बढ़ती है, जिससे अनुवाद स्तरीय होने में मदद मिलती है।

♦ **कंप्यूटर** -

अनुवाद के साहित्यिक और साहित्येतर दोनों प्रकारों में कंप्यूटर का प्रयोग आवश्यक सहायता सामग्री के रूप में किया जा रहा है। साहित्येतर अनुवाद कार्य के लिए तो कंप्यूटर एक अनिवार्य आवश्यकता बनता जा रहा है। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका के तकनीकी विशेषज्ञों ने अनुवाद के लिए यंत्र का प्रयोग करने का निर्णय लिया। कुछ वाक्यों के साथ किया गया यह प्रयोग सफल रहा।

कंप्यूटर अनुवाद के लिए विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया सामग्री अर्थात सॉफ्टवेयर तैयार करने की आवश्यकता होती है। यह केवल विशेषज्ञ ही कर सकता है। स्रोतभाषा की सामग्री को कंप्यूटर में योग्य रूप से 'फीड़' करना होता है तभी कंप्यूटर लक्ष्यभाषा में सही अंतरण कर सकता है। कंप्यूटर की मेमोरी अर्थात स्मृतिकोश में शब्द, वाक्य, भाषा, पद, वर्णमाला आदि 'फीड़' कर दिए जाते हैं। कंप्यूटर कोश में अर्थविवेचन भी होता है।

निष्कर्षतः एक अच्छा अनुवादक कभी भी अनावश्यक भ्रम में नहीं जीता। वह जानता है कि उपलब्ध उपयुक्त सहायक साधनों की सहायता से सही अनुवाद करना उचित है और वह अनुवाद निश्चित रूप से उत्कृष्ट होगा।

10. अनुवाद और लिप्यंतरण

आवश्यकता :-

लिप्यंतरण का सीधा तात्पर्य लिपि में अंतरण या परिवर्तन है। कई बार स्रोतभाषा की सामग्री अनूद्य नहीं होती अर्थात उसका अनुवाद नहीं किया जा सकता। इस स्थिति में अनुवादक के सामने 'लिप्यंतरण' के अलावा कोई चारा नहीं बचता। अतः अनुवाद न कर पाने की स्थिति में एक भाषा के शब्द को भाषा, भाव या अर्थ के स्तर पर नहीं, बल्कि 'लिपि के स्तर पर अंतरित' किया जाता है। इसे 'लिप्यंतरण' कहते हैं। व्यक्ति या स्थानों के नामों का लिप्यंतरण अधिक मात्रा में होता है।

कई बार अनुवाद के क्षेत्र में लिप्यंतरण अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इसके कई कारण हैं। अनूद्य सामग्री में कई ऐसे शब्द, संज्ञाएँ, पद आदि होते हैं जिनका अनुवाद लक्ष्यभाषा में संभव नहीं होता। इस स्थिति में लिप्यंतरण आवश्यक हो जाता है। अनूद्य सामग्री जिस भाषा में है, उस भाषा में कई ऐसी संकल्पनाएँ भी विद्यमान होती हैं जिनका लक्ष्यभाषा में कोई अस्तित्व नहीं होता। अतः इन संकल्पनाओं का अनुवाद नहीं हो सकता। इस स्थिति में भी लिप्यंतरण का सहारा लिया जाता है।

उपर्युक्त बातें स्पष्ट करती हैं कि लिप्यंतरण एक आवश्यक युक्ति है। लिप्यंतरण करना अनूद्य सामग्री की दृष्टि से सुविधाजनक बात है। लिप्यंतरण से मूल तो पहुँचता ही है, साथ में पादटिप्पणी के माध्यम से उसका अर्थ भी पहुँच जाता है। लेकिन इसमें कई जटिल समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।

समस्याएँ :-

लिप्यंतरण करते समय अनुवादक के सामने कई समस्याएँ निर्माण हो जाती हैं। ये इस प्रकार हैं -

1. लिप्यंतरण को लेकर अभी तक कोई नियम नहीं है। किसी विशिष्ट ध्वनि का अनुवाद यदि संभव नहीं है तो उसका लिप्यंतरण किस प्रकार किया जाए, इस बात को लेकर कहीं कोई नियम नहीं है।
2. लिप्यंतरण के उच्चारण या लेखन को लेकर कोई नियम नहीं बनाया गया है। एक भाषा में स्थित शब्द को केवल दूसरी लिपि में परिवर्तित कर दूसरी भाषा में किस प्रकार लिखा जाए इससे संबंधित कोई नियम नहीं है। लिखे हुए शब्द के उच्चारण, लेखन के साथ ही इसकी वर्तनी को लेकर भी कोई नियम नहीं है।

   'August' और 'September' का लिप्यंतरण हिंदी में 'अगस्त' और 'सितंबर' होता है तो मराठी लिप्यंतरण 'ऑगस्ट' और 'सप्टेंबर' होता है। 'October' को हिंदी में 'अक्तूबर' या 'अक्टूबर' और मराठी में 'ऑक्टोबर' कहा जाता है।

अंग्रेजी	**हिंदी**	**मराठी**
Bank	बैंक	बँक
Aristotle	अरस्तू	ॲरिस्टॉटल

Socrates	सुकरात	सॉक्रेटिस
Russia	रूस	रशिया
Tolstoy	तोल्सतोय	टॉलस्टॉय
Londan	लंदन	लंडन
English	अंग्रेजी	इंग्रजी
Tokio	तोक्यो	टोकिओ
Luxury	लग्जरी	लग्झरी
Police	पुलिस	पोलीस
Hospital	अस्पताल	हॉस्पीटल
Manmar	म्याँमा	मॅनमार

नियमों के अभाव के कारण लिप्यंतरण में अनेकरूपता आती है और यही अनेकरूपता अनेक समस्याओं का कारण बन जाती है।

3. मूल के सौंदर्य को पकड़ने की प्रवृत्ति के तहत कई बार लिप्यंतरण किया जाता है। 'ट्यूलिप्स' या 'डॅफोडिल' के समकक्ष कोई फूल हमारे देश में विद्यमान नहीं है झरबेरा का फूल या इसके जैसा कोई अनुवाद बेकार सिद्ध होगा। साथ ही मूल शब्द से जो सौंदर्य भाव उभर आता है वह उभरेगा भी नहीं। मूल के सौंदर्य को यथावत बनाए रखने के प्रयास में लिप्यंतरण किया जाता है लेकिन परिचित न होने के कारण अनुवाद के पाठकों के मन में वह लिप्यंतरण मूल जैसा भाव जगा नहीं पाता। यह बहुत बड़ी समस्या है।

4. स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा में स्थित ध्वनियाँ कई बार भिन्न होती हैं। अंग्रेजी में छब्बीस वर्ण हैं तो हिंदी में तिरपन वर्ण हैं।

5. लिप्यंतरण करने में अगर स्रोतभाषा की ध्वनियाँ लक्ष्यभाषा में न मिलें तो समस्या खड़ी हो जाती है। जैसे, मराठी का 'ळ' ध्वनिवर्ण हिंदी में पहले था ही नहीं। अब स्वीकृत होने पर भी प्रायः हिंदी भाषी उसका प्रयोग नहीं करते। उस 'ळ' का लिप्यंतरण 'ल' के रूप में किया जाता है। परंतु इस 'ल' में उस 'ळ' वाली बात प्रकट नहीं होती। जैसे, मराठी 'टिळक', 'कळा' का हिंदी लिप्यंतरण 'तिलक', 'कला'। इसमें अर्थभ्रम भी संभव है।

   ठीक इसी तरह 'ठ', 'थ', 'ढ', 'ध' के लिए अंग्रेजी में स्वतंत्र लिपिचिह्न/ध्वनिवर्ण हैं ही नहीं। इस स्थिति में लिप्यंतरण में आने वाली कठिनाइयों की कोई सीमा नहीं है। किसी तरह लिप्यंतरण कर भी दिया जाए तो उसके सर्वस्वीकृत होने पर प्रश्नचिह्न लगा रहता है।

6. कई बार वर्तनी और लेखन में अनेकरूपता के कारण भी लिपि अंतरण संभव नहीं होता। हिंदी में जो 'राम' है, अंग्रेजी में उसका लिप्यंतरण 'Rama' होगा। इसके कारण 'राम', 'रामा', 'रमा' जैसी गड़बड़ियाँ हो सकती हैं।

हिंदी का 'गुप्त' अंग्रेजी में 'Gupta' हो जाएगा और परंपरा के अनुसार 'गुप्त' पुरुष का, तो 'गुप्ता' स्त्री का द्योतक लगेगा। अंग्रेजी के लिप्यंतरण से कभी-कभी इस प्रकार की समस्या पैदा होती है।

ये सब लिप्यंतरण में आने वाली समस्याएँ हैं। इस विषय पर गहराई में जाकर अध्ययन-अनुसंधान होना आवश्यक है, लेकिन अध्ययन-अनुसंधान की कोई संभावना फिलहाल तो नहीं है। ऊपरी तौर पर व्याकरणिक दृष्टि से समाधान खोजने के प्रयास अवश्य किए जा रहे हैं।

11. अनुवाद और भाषाविज्ञान

अनुवाद एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में व्यक्त करना है। भाषा ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है। उसकी सहायता से मनुष्य अपने विचार दूसरों पर व्यक्त करता है। भाषा विज्ञान भाषा का विज्ञान है। इसमें भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। अनुवाद भाषा का रूपांतरण है। इस दृष्टि से अनुवाद और भाषा के विज्ञान का - 'भाषाविज्ञान' का निकट संबंध है।

भाषाविज्ञान में जिस भाषा का अध्ययन होता है उसके अंग है - वाक्य, पद या रूप, शब्द, ध्वनि और अर्थ। इसी के आधार पर वाक्यविज्ञान, रूपविज्ञान, शब्दविज्ञान, ध्वनिविज्ञान और अर्थविज्ञान भाषाविज्ञान के अंग माने जाते हैं। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय अनुवादक को भाषाविज्ञान का - उसके पाँचों अंगों का तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान का ज्ञान आवश्यक और उपयुक्त है।

अनुवाद में एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में ले जाते समय दो बातें आवश्यक हैं - 1. स्रोत भाषा के शब्दों के स्थान पर लक्ष्यभाषा के शब्दों का प्रयोग, 2. स्रोत भाषा की व्यवस्था के स्थान पर लक्ष्य भाषा की व्यवस्था का प्रयोग। इसके लिए दोनों भाषाओं की तुलना अर्थात समतुल्यता आवश्यक है। अनुवाद मूलतः दो भाषाओं की समतुल्यता पर आधारित होता है, इसलिए उसका सीधा संबंध भाषाविज्ञान के तुलनात्मक रूप से है। तुलनात्मक भाषाविज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर स्रोत और लक्ष्य भाषा की जितनी अच्छी तुलनात्मक सामग्री - समतुल्यता उपलब्ध होगी, अनुवाद उतना ही अच्छा और कम समय में किया जा सकेगा।

अनुवाद में समतुल्यता शब्दसमूह और भाषा की व्यवस्था दोनों की होती है। शब्दसमूह की तुलना याने अर्थपरिधि की दृष्टि से शब्दों की तुलना। इसका संबंध भाषा विज्ञान के अर्थ विज्ञान से है।

व्यवस्था का अर्थ है ध्वनि, रूपरचना और वाक्यरचना की दृष्टि से भाषाओं की तुलना। इस भाषास्तर की समतुल्यता का संबंध भाषाविज्ञान के ध्वनिविज्ञान, रूपविज्ञान और वाक्यविज्ञान से है।

निष्कर्षतः अनुवाद में ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ आदि की दृष्टि से स्रोत और लक्ष्य भाषाओं की तुलना करनी पड़ती है, इसलिए अनुवाद का गहरा संबंध भाषाविज्ञान के ध्वनिविज्ञान, शब्दविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थविज्ञान आदि सभी शाखाओं से है।

अनुवाद का भाषाविज्ञान की सभी शाखाओं से महत्वपूर्ण संबंध है। अनुवाद और भाषाविज्ञान की कुछ प्रमुख शाखाओं का जो संबंध है उसका आगे स्वतंत्र विवेचन करेंगे।

12. अनुवाद और रूपविज्ञान

रूपविज्ञान भाषाविज्ञान की महत्वपूर्ण शाखा है जिसके अंतर्गत भाषा विशेष की रूप रचना का अध्ययन-विश्लेषण किया जाता है। साथ ही रूप से संबंधित नियमों का निर्धारण भी किया जाता है। अनुवाद में स्रोत भाषा की रूप व्यवस्था का प्रतिस्थापन लक्ष्य भाषा की रूपव्यवस्था में किया जाता है। यही कारण है कि प्रत्येक अनुवादक को स्रोतभाषा तथा लक्ष्यभाषा की रूपव्यवस्था का ज्ञान होना ही चाहिए।

अनुवाद कार्य को सही तरह से परिपूर्ण करने के लिए अनुवादक को रूपव्यवस्था का योग्य ज्ञान होना चाहिए। रूप व्यवस्था में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा रूप रचना के प्रकार का है। यदि अनुवादक रूप रचना के प्रकारों को सही तरीके से समझ नहीं पाता है तो सही अनुवाद संभव ही नहीं है। रूप रचना के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं :-

*** प्रत्ययों से शब्दों की रचना :-**

1. संज्ञा से विशेषण : देहात + ई = देहाती, लोक से लौकिक
2. विशेषण से संज्ञा : भला + आई = भलाई, बुरा से बुराई
3. संज्ञा से क्रियाविशेषण : कृपा से कृपया। सबेरा से सबेरे
4. विशेषण से क्रियाविशेषण : मूल से मूलतः। सर्व से सर्वत्र
5. सर्वनाम से विशेषण : आप से अपना, यह से इतना
6. संज्ञा से क्रिया : धिक्कार से धिक्कारना, हाथ से हथियाना
7. सर्वनाम से क्रिया : आप/अपना से अपनाना।
8. क्रिया से कृदंतविशेषण : बहना से बहता (पानी), दबना से दबी (बिल्ली)।
9. क्रिया से क्रियाविशेषण : चलना से चलते-चलते (लड़की) गिर पड़ी।

*** उपसर्ग से शब्दों की रचना :-**

अधि + पति = अधिपति, वि + ज्ञान = विज्ञान, सु + शिक्षित = सुशिक्षित, बे + ईमान = बेईमान, दर + असल = दरअसल।

*** समास से शब्द रचना :-**

यथाशक्ति, आजन्म, मदमाता, रसोईघर, जन्मांध, राजपुत्र, ग्रामवास, पीतांबर, त्रिकाल।

*** संधियों से शब्द रचना :-**

गिरीश, महेंद्र, सदैव, जगन्नाथ, उद्धार, मनोरथ।

* **पुल्लिंग रूपों से स्त्रीलिंग रूप रचना :-**

देव-देवी, माली-मालिन, प्रिय-प्रिया, कवि-कवयित्री।

* **एक वचन से बहुवचन :-**

बच्चा - बच्चे, कथा - कथाएँ, रात - रातें।

* **मूल रूप से विकृत रूप :-**

बड़ा लड़का - बड़े लड़के, मैं - मुझसे, वह - उसने, वे - उन्होंने।

* **कारकीय रूप द्वारा शब्द रचना :-**

बेटे ने, बेटों ने, राजा को, राजाओं को, रानी से, रानियों से।

* **विशेषण के तुलनाबोधक रूप :-**

प्रिय - प्रियतर, प्रियतम। सुंदर - सुदरतर, सुंदरतम। अधिक - अधिकतर, अधिकतम।

* **धातु से क्रिया रूप :-**

खा - खाता, खाती, खाया, खाए, खाई, खाऊँगा।

अनुवादक रूपविज्ञान के जरिए ही रूपरचना से परिचित हो सकता है। इसके कारण वह स्रोतभाषा के रूप के लिए लक्ष्यभाषा से योग्य रूप चुन सकता है। रूपविज्ञान के संदर्भ में डॉ. गोपीनाथन कहते हैं - "दो भाषाओं की शैलीगत भिन्नता का प्रमुख कारण उनकी रूप रचना का वैभिन्य है।"

केवल शैलीगत विशेषता ही नहीं बल्कि लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय आदि के प्रयोग के मामले में भी दो भाषाओं में अत्यधिक भिन्नता पाई जाती है। इसी के कारण अनुवाद में रूपविज्ञान संबंधी समस्याएँ निर्माण हो जाती हैं। जो रूपभिन्नता निर्माण होती है, उससे संबंधित समस्याएँ इस प्रकार बताई जा सकती हैं :-

1. लिंग संबंधी समस्याएँ :-

प्रत्येक भाषा की अपनी लिंग व्यवस्था होती है। इनमें समानता ही हो ऐसी उम्मीद करना गलत है। विदेशी भाषाओं में अनुवाद करते समय यह समस्या विशेष रूप से उभर आती है। हिंदी - रूसी अनुवाद में लिंग की समस्या बहुत परेशान करेगी क्योंकि ये दोनों पूर्णतः भिन्न भाषाएँ हैं। समान स्रोतीय भाषाओं में भी लिंग की समस्या को सुलझाना पड़ता है।

जैसे - हिंदी में दो लिंग हैं - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। मराठी में तीन हैं - पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग। हिंदी - तार आया । मराठी - तार आली । झाड लावले (नपु.)। पेड़ लगाया। (पु.) अंग्रेजी, संस्कृत, मलयालम और बंगला में भी ये तीन लिंग विद्यमान हैं। अतः अनुवाद में समस्या निर्माण हो सकती है।

2. लिंग पर आधारित अन्य समस्याएँ :-

संसार की कई भाषाएँ ऐसी हैं जो कर्ता के लिंग के अनुसार क्रिया तथा विशेषण में परिवर्तन कराती रहती हैं । कई भाषाएँ ऐसी हैं जो कर्ता के लिंग का क्रिया या विशेषण पर कोई असर पड़ने नहीं देती। हिंदी जैसी भाषा में अप्रत्यय कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार क्रिया बदलती है।

अंग्रेजी	**हिंदी**
Ram eats fruit	राम फल खाता है।
Rama eats fruit	रमा फल खाती है।
Both eat fruits	दोनों फल खाते हैं।

लिंग के अनुसार क्रिया के रूप दोनों भाषाओं में समान नहीं हैं। ठीक इसी तरह विशेषण (अच्छा) में भी (अच्छी, अच्छे) रूप परिवर्तन कराने की क्षमता होती है।

3. लिंग सूचक लघुतावाचक या ऊनार्थक प्रत्ययों का प्रयोग :-

लिंगसूचक लघुतावाचक प्रत्यय प्रयोग की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। कोई भी अनुवादक रूपविज्ञान के ज्ञान के अभाव में धोखा खा सकता है। जैसे –

(पु.)	(स्त्री.)
बाग	बगिया
टीका	टिकली
पहाड	पहाड़ी
कोठा	कोठरी
पंख	पंखड़ी

कई भाषाएँ ऐसी होती हैं जिनमें कठोर या महाशब्दों को स्त्रीलिंगवाची प्रत्यय लगाकर लघु या कोमल बनाया जाता है। यही व्यवस्था सभी भाषाओं में विद्यमान हो, यह संभव नहीं है, अतः ऐसे शब्द अनुवादक के सामने समस्या खड़ी कर देते हैं।

4. क्रियात्मक अभिव्यक्तियों में सूक्ष्म अंतर :-

प्रत्येक भाषा की अपनी व्यवस्था होती है; अपनी विशेषताएँ होती हैं। क्रियात्मक अभिव्यक्तियाँ प्रत्येक भाषा में भिन्न होती हैं। इनमें स्थित सूक्ष्म अंतर को समझ पाना अत्यंत कठिन होता है। इसे दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना और भी कठिन होता है। अनुवादक का रूपविज्ञान से संबंधित अध्ययन ही कठिनाई हल कर सकता है।

1. गया। 2. चला गया। 3. चला जा चुका। 4. जा बैठा। 5. गिरा। 6. गिर गया। 7. गिर पड़ा।

इन अभिव्यक्तियों को बिना क्रिया रूपों को जाने अंग्रेजी जैसी भाषाओं में अभिव्यक्त करना सहज नहीं है।

5. आदर सूचक क्रियाओं की अभिव्यक्ति :-

भारतीय संस्कृति बड़ों का आदर, समवयस्कों को सम्मान तथा छोटों को प्यार देती है। आयु से संबंधित क्रियाओं में जो अंतर होता है अनुवाद में उसकी अभिव्यक्ति कर पाना कठिन है। जैसे -

बैठ (छोटों के लिए)

बैठो (समान आयु वालों के लिए)

बैठिए (आदरणीय व्यक्ति के लिए)

रूपविज्ञान का संपूर्ण ज्ञान अनुवादक के लिए आवश्यक माना जाता है। इसी ज्ञान के बल पर वह उपर्युक्त समस्याओं का समाधान खोज सकता है।

रूप के स्तर पर निर्माण होने वाली समस्याओं को सुलझाने के लिए स्वयं अनुवादक में सृजनशीलता होनी चाहिए। जो अनुवादक कारयित्री प्रतिभा का धनी है वह प्रत्येक समस्या का समाधान ढूँढ़ सकता है। समान या निकटतम विकल्प के न मिलने की स्थिति में अनुवादक इस दबाव में न रहे कि उसे उन्हीं रूपों का प्रयोग करना है जो भाषा में पहले से ही प्रचलित हों। अनुवादक अपनी प्रतिभा के बल पर नए शब्द रूपों को गढ़ सकता है। लेकिन ऐसा करते समय वह ध्यान रखे कि ऐसे प्रयोग उस भाषा के अनुकूल हों। आजकल 'फिल्माना', 'किक लगाना', 'शेव करना' जैसे नए रूप प्रचलित हो गए हैं और लक्ष्यभाषा द्वारा उन्हें स्वीकारा भी जा चुका है।

अच्छा अनुवादक रूपविज्ञान से संबंधित सामान्य नियमों के साथ-साथ अपवादों को भी ध्यान में रखता है ताकि गलती से भी धोखा न हो। जिस अनुवादक को रूपविज्ञान की सही जानकारी तथा अध्ययन है वह पहले स्रोतभाषा की सामग्री का रूप के स्तर पर विश्लेषण करता जाएगा, साथ ही उसके लिए लक्ष्यभाषा में विकल्प ढूँढ़ता जाएगा। यदि यह संभव न हो सका तो ऐसे रूपों का निर्माण कर देगा जो लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुकूल हों।

13. अनुवाद और वाक्यविज्ञान

वाक्यविज्ञान भाषाविज्ञान की अत्यधिक महत्वपूर्ण शाखा है। इसके अंतर्गत वाक्य रचना का विश्लेषण - अध्ययन किया जाता है। अनुवाद के दृष्टिकोण से भी वाक्यविज्ञान अतिशय महत्वपूर्ण है क्योंकि अनुवाद में एक भाषा की वाक्यव्यवस्था को दूसरी भाषा की वाक्यव्यवस्था में रखना होता है। ऐसा करते समय लक्ष्यभाषा की स्वाभाविक वाक्यव्यवस्था का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। हम कह सकते हैं कि विभिन्न भाषाओं के वाक्यों का विश्लेषण वाक्यविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है और ऐसा वाक्यविज्ञान अनुवाद में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

वाक्यविज्ञान की व्यावहारिक जानकारी इस प्रकार दी जा सकती है –

1. संरचना के स्तर पर :-

लगभग प्रत्येक भाषा में वाक्य सामान्यतः एक ही अर्थ प्रदान करते हैं। लेकिन कुछ वाक्य ऐसे होते हैं जो अपने बाह्यरूप में एक प्रतीत होते हैं लेकिन आंतरिक रूप में एक से अधिक वाक्य छिपाए हुए होते हैं। इस दृष्टि से वाक्य संरचना के दो भेद बताए जा सकते हैं -

1. बाह्य संरचना, और

2. आंतरिक संरचना।

बाह्य संरचना की दृष्टि से वाक्य केवल एक ही अर्थ प्रदान करता है लेकिन आंतरिक संरचना के स्तर पर वह कई बार एकाधिक अर्थ भी प्रदान करता है। जैसे -

वाक्य क्र. 1 : लता को मन भर मिठाई दो।

इस वाक्य में एकाधिक अर्थ छिपे हुए हैं -

[i] लता को 'मन भर' अर्थात 'जी भरके' - यथेच्छ मिठाई दो।

[ii] लता को मन भर - एक मन याने चालीस सेर (अस्सी पौंड से अधिक) मिठाई दो।

वाक्य क्र. 2 : 'लड़के ने भागते हुए चोर को पकड़ा।' बाह्य संरचना के आधार पर यह एक ही वाक्य है, परंतु आंतरिक स्तर पर इनमें दो वाक्य निहित हैं -

[i] लड़का भाग रहा था जब उसने चोर को पकड़ा। और

[ii] चोर भाग रहा था जब उसे लड़के ने पकड़ा।

वाक्य क्र. 3 : 'लीना गाने वाली है।' इस वाक्य में बाह्यस्तर पर एक वाक्य संरचना दिखाई देती है तो आंतरिक स्तर पर एकाधिक अर्थ भी मिल जाते हैं :–

[i] लीना अब गाने वाली है।

[ii] लीना हमेशा गाती ही रहती है।

[iii] लीना गाने का व्यवसाय 'कैरियर' करती है।

[iv] लीना बड़ी कलाकार है।

इनमें अंतिम वाक्य तो व्यंजनार्थ प्रदान करता है।

इस प्रकार के वाक्य का, वाक्य के संरचनात्मक भेद का सही अध्ययन आवश्यक है जो केवल वाक्यविज्ञान द्वारा प्राप्त हो सकता है। अनुवाद करते समय अनुवादक पहले भली भाँति जाँच कर ले कि बाह्यस्तर पर एक ही प्रतीत होने वाला वाक्य क्या आंतरिक स्तर पर भी एक ही अर्थ प्रदान करता है । अगर है, तो कोई समस्या नहीं ; लेकिन एकाधिक अर्थ प्रदान करता है तो इसका अनुवाद संदर्भ देखकर बहुत सतर्कता के साथ किया जाना आवश्यक है। अनुवादक अनुवाद करते समय शब्द या शब्दों से बने वाक्य की तुलना में अर्थ और संदर्भ को अधिक महत्व दे, तो ही वाक्य रचना समझ में आ सकती है। अर्थ और संदर्भ को जाने बिना किया गया अनुवाद निश्चित रूप से लक्ष्यभाषा की प्रकृति के प्रतिकूल होगा क्योंकि दो भिन्न भाषाओं की वाक्यसंरचना में भिन्नता का होना स्वाभाविक है।

2. अर्थ के स्तर पर :-

अनुवाद की लंबी परंपरा रही है। प्राचीन काल में बाइबिल के अनुवाद अत्यधिक मात्रा में हुए। तत्कालीन अनुवादचिंतक मानते थे कि अनुवाद शब्दशः होना चाहिए अर्थात अनुवाद में शब्द के लिए शब्द रखा जाना चाहिए। इस पद्धति से जितने अनुवाद किए गए उन्होंने सिद्ध कर दिया कि अनुवाद में शब्द से कहीं अधिक महत्व अर्थ का हुआ करता है। इससे स्पष्ट है कि अर्थ का महत्व वर्णनातीत है इसमें भी महत्वपूर्ण बात यह है कि अर्थ शब्दस्तर पर नहीं बल्कि वाक्यस्तर पर पाया जाता है। स्रोतभाषा का कथ्य लक्ष्यभाषा में उतारना ही अनुवाद है। भाषा की मूलभूत इकाई वाक्य है जो अर्थ प्रदान करती है। मानव भी तो शब्द-शब्द न सोचता है, न बोलता है और न ही समझता है । अर्थ या भाव सदैव वाक्यस्तर पर होते हैं यह बात अनुवादक ध्यान में रखे। अर्थ के स्तर पर कई बार एक शब्द भी वाक्य की भूमिका का निर्वाह करता है। जैसे -

1. विजय, चाय पिओगे? –'हाँ'। 'हाँ' याने मैं चाय पिऊँगा।
2. लड़के मेरे साथ आओगे? – 'जी'। 'जी' अर्थात मैं आपके साथ आऊँगा।
3. तुमने कुछ खाया? – 'नहीं' याने (मैंने कुछ नहीं खाया।) या 'हाँ' अर्थात हाँ, मैंने खाया है।

यहाँ कर्ता द्वारा अभिव्यक्त 'हाँ', 'जी', 'नहीं' अर्थ के स्तर पर संपूर्ण वाक्य हैं, अतः योग्य रूप में उसका अनुवाद होना चाहिए। यह वाक्यविज्ञान के अध्ययन से ही संभव है।

3. निकटतम अवयव के स्तर पर :-

विभिन्न पदों या खंडों से वाक्य बनते हैं। वाक्य को बनाने वाले ये पद या खंड वाक्य के अवयव कहलाते हैं। वाक्य का सही अनुवाद तभी संभव है जब अनुवादक यह जान ले कि वाक्य में कौन-सा अवयव किस

अवयव का निकटतम अवयव है। वाक्य को समझने के लिए निकटतम अवयवों को समझना बहुत आवश्यक है।

वाक्य के निकटतम अवयवों को साथ रखने से अर्थांतरण की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। देखिए वाक्य - बैठो मत जाओ।

वाक्य के निकटतम अवयवों को 'बैठो मत', 'जाओ' इस तरह साथ रखें, तो अर्थ होगा 'नहीं बैठना है, चले जाओ।' और यही वाक्य - - बैठो, मत जाओ । इस प्रकार रखा जाए तो अर्थ अलग होगा। "जाओ नहीं, बैठे रहो।"

अनुवाद में शब्द - शब्द पर ध्यान देने की अपेक्षा वाक्य पर ध्यान केंद्रित करना अधिक योग्य होता है और वाक्य के सही अर्थ को पकड़ने के लिए निकटतम अवयवों पर ध्यान देना आवश्यक है ताकि अनुवाद सही-सही हो सके।

4. सहप्रयोग :

वाक्य में सहप्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इस शब्द का आशय स्पष्ट करते हुए डॉ.भोलानाथ तिवारी कहते हैं - "हर भाषा में शब्द विशेष के साथ विशेष अर्थों में सभी शब्दों का प्रयोग नहीं होता। अनेक पर्यायों में एक या कुछ ही शब्द उन अर्थों में प्रयुक्त होते हैं।" वास्तव में वाक्य में प्रसंग के अनुरूप प्रयोग किया जाना आवश्यक है। उदाहरणार्थ, 'भोजन' और 'खाना' दोनों ही समानार्थक शब्द हैं लेकिन इनके साथ एक ही सहप्रयोग नहीं चल सकता। 'खाना' के साथ 'खाना' अर्थात 'खाना खाना' चल सकता है पर 'भोजन' के साथ 'खाना' याने 'भोजन खाना' नहीं चल सकता। 'भोजन' का सहप्रयोग 'करना' के रूप में ही सही रहेगा। सहप्रयोग के मामले में आजकल अंग्रेजी प्रभाव दर्शनीय है। हिंदी में 'चाय पीना' का प्रयोग हिंदी की प्रकृति के अनुरूप ही है लेकिन अंग्रेजी में to take tea के अनुसार हिंदी में 'चाय लेना' का प्रयोग चल पड़ा है जो गलत है। इसके कई उदाहरण दिए जा सकते हैं -

* Make my bed. का

'मेरा बिस्तर बना दो ' – गलत अनुवाद है।

'मेरा बिस्तर बिछा दो' – सही अनुवाद है।

* He is taking his meal. का

'वह अपना खाना ले रहा है' – गलत अनुवाद है।

'वह खाना खा रहा है।' या 'वह भोजन कर रहा है।' सही अनुवाद है।

* 'उसने मैच में गोल किया' का

"He made a goal in the match." गलत अनुवाद है।

इसका सही अनुवाद है – "He scored a goal in the match."

5. व्याकरण के स्तर पर :

वाक्य की व्याकरणिक संरचना लिंग, वचन, कारक, कर्ता, कर्म, क्रिया का अन्वय आदि का सही अध्ययन किए बिना न उसका अर्थ लगाया जा सकता है, न ही उसका ठीक अनुवाद किया जा सकता है।

लिंग :-

कई बार भाषा में व्याकरणिक लिंग और प्राकृतिक लिंग में अंतर होता है। जिन भाषाओं में व्याकरणिक लिंग पाया जाता है उसके अनुवाद में सतर्क रहना आवश्यक है। जैसे - intelligent lady का संस्कृत अनुवाद 'बुद्धिमान महिला' नहीं, बल्कि 'बुद्धिमती महिला' करना होगा। उर्दू के 'जिंदा, उम्दा, ताजा' शब्द किसी भी तरह से जिंदे, जिंदी, उम्दे, उम्दी, ताजे या ताजी में परिवर्तित नहीं होते। अनुवाद में वास्तविक समस्या तब आती है जब स्रोत भाषा में केवल प्राकृतिक लिंग हो और लक्ष्यभाषा में प्राकृतिक और व्याकरणिक दोनों लिंग हों।

वचन :-

वचन प्रत्येक भाषा में अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं। वचन को लेकर प्रत्येक भाषा के अपने नियम होते हैं। हिंदी में दर्शन, प्राण, हस्ताक्षर, होश जैसे शब्द एकवचन भी हों तो बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं। अंग्रेजी के Pants, Spectacles, Scissors, Measles, Mumps, Trousers,Tongs जैसे शब्द एकवचन होते हुए भी बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में आदरसूचक वक्तव्य में 'आप', 'वे' बहुवचन का प्रयोग होता है परंतु इनके लिए अंग्रेजी में you, he, she एकवचन से ही काम चलाते हैं।

कारक :-

लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप कारक बदल जाते हैं। वाक्य में प्रयुक्त कारक चिह्नों को यथावत रखने से अनुवाद बिगड़ सकता है। He has a faith in his wife हिंदी अनुवाद में 'पत्नी में' के बदले 'पत्नी पर' ही उचित है। - उसे अपनी पत्नी पर विश्वास है।

यही बात सर्वनाम, काल तथा इसी प्रकार के अन्य परिवर्तनों के साथ भी लागू है। इनमें व्यतिरेक की संभावना बहुत होती है।

6. पदक्रम के स्तर पर :-

प्रत्येक भाषा की अपनी वाक्य संरचना होती है। उसकी अपनी क्रमगत पद्धति होती है। पदों का विशिष्ट क्रम होता है। प्रत्येक भाषा का पदक्रम अलग होता है। अनुवादक को इस बात के प्रति सतर्क रहना चाहिए कि अनुवाद में स्रोतभाषा के पदक्रम की छाया से लक्ष्यभाषा का पदक्रम प्रभावित न हो। अंग्रेजी का पदक्रम कर्ता, क्रिया, कर्म है। Ram eats fruit. तो हिंदी-मराठी का पदक्रम 'कर्ता, कर्म, क्रिया' है। जैसे 'राम फल खाता है।' 'राम फळ खातो.' संस्कृत में पदक्रम विशेष महत्वपूर्ण नहीं माना जाता और यही कारण है कि संस्कृत में वाक्य को किसी भी पदक्रम के साथ लिखने से उसका अर्थ परिवर्तन नहीं होता। जैसे – 'रामः फलं खादति। फलं खादति रामः। खादति रामः फलम्।'

अतः योग्य अनुवाद के लिए पदक्रम का ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है। क्रम को बदलने से अर्थ में परिवर्तन हो सकता है। वाक्य विज्ञान का अध्ययन कर स्रोतभाषा के पदक्रम की छाया से लक्ष्यभाषा के पदक्रम को बचाना चाहिए।

– ताजा आमों का रस। - आमों का ताजा रस।

– गाय का गर्म दूध। - गर्म गाय का दूध।

ऐसी गलतियों से बचने के लिए अनुवादक पदक्रम संबंधी नियमों का अध्ययन करे। यदि अंग्रेजी में तीन पुरुष एक साथ आते हैं तो पहले अन्य पुरुष, फिर मध्य पुरुष और फिर उत्तम पुरुष को रखा जाएगा। विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करने वाले पदक्रम में आवश्यकता के अनुसार और लक्ष्यभाषा के अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है।

अनुवाद करते समय वाक्यों का ही अनुवाद किया जाता है, शब्दों का नहीं। शब्द, वाक्य में आकर विभिन्न अर्थ धारण कर लेते हैं अतः आशय जानकर संपूर्ण वाक्य का अनुवाद करना ही अधिक श्रेयस्कर है।

14. अनुवाद और अर्थविज्ञान

अनुवाद स्रोत भाषा में व्यक्त किए गए विचार, भाव आदि के अर्थ को लक्ष्यभाषा में यथावत उतार देना है। भाषाविज्ञान की शाखा अर्थविज्ञान का एकमात्र कार्य है भाषा के अर्थपक्ष का अध्ययन। इस तरह अनुवाद और अर्थविज्ञान दोनों ही भाषा के अर्थपक्ष से संबद्ध है। सफल अनुवाद के लिए अनुवादक को अर्थविज्ञान की सहायता अनेक रूपों में लेनी पड़ती है।

अनुवाद के समय दो प्रश्न उठते हैं :-

1. अनुवादक को मूल सामग्री के अर्थ का ज्ञान अर्थात अर्थ निर्धारण कैसे हो?

2. उस अर्थ के निर्धारण में - उसे समझने में वह किन-किन बातों का ध्यान रखे?

अर्थ निर्धारण के लिए अनुवादक शब्दों के कोशार्थ (अभिधा), लक्ष्यार्थ, व्यंग्यार्थ को समझे, शब्दबंधों, पदबंधों, उपवाक्यों और वाक्यों के सामान्य तथा अभिप्सित अर्थ तक पहुँचे एवं मुहावरों - लोकोक्तियों और विशेष प्रयोगों के शब्दार्थ तथा लक्ष्यार्थ को समझकर उनका अपेक्षित अर्थ पूरी गहराई के साथ समझ ले और फिर अनुवाद करे।

अर्थ निर्धारण के लिए अनुवादक को मुख्य रूप से निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए :-

*** स्थान :**

कभी-कभी एक ही शब्द अलग-अलग स्थानों पर अलग अर्थ सूचित करता है। जैसे, 'रेस्टरूम' - अमेरिका में 'पाखाने' को कहते हैं, भारत में वह रेलस्टेशन पर 'विश्रामगृह' है। 'टाई' - अमेरिकी अंग्रेजी में 'रेलवे स्लीपर'जो दोनों पटरियों को बाँध रहता है, परंतु अन्य स्थानों में गले में बाँधने की 'टाई'। 'चैक' - अमेरिका में 'बिल' है, तो 'बिल' का अर्थ करेंसी नोट। अमेरिका में टैक्सी को 'कैब' तो 'पेट्रोल' को 'गैस' कहते हैं ; 'लिफ्ट' को 'एलीवेटर' तथा 'सिनेमा' को 'मूवी' कहते हैं। 'कार्न' अंग्रेजी में प्रायः 'अनाज' है तो अमेरिका में 'मक्का'। मेरठ या कुछ हिंदी भागों में 'मौसा', 'मौसी' भाई के 'ससुर' और 'सास' का भी अर्थ देते हैं। महाराष्ट्र में 'मामा' या 'मामाजी' ससुर का और 'मामी' सास का भी अर्थ देते हैं। प्रायः 'जमींदार' जमीन के स्वामी को, पर हरियाना में जमीन जोतने वाले को कहते हैं।

*** काल :**

एक काल में किसी शब्द का अर्थ एक होता है, तो दूसरे में कुछ दूसरा। मध्यकाल में 'हरिजन' 'भक्त' के लिए प्रयुक्त होता था, पर आधुनिक काल में 'एक जाति विशेष' के लिए। तब 'अनुसंधान' का अर्थ 'सुध-बुध' था, आज 'रिसर्च' है। बिहारी में 'अवधि' का अर्थ 'अंतिम सीमा' है, परंतु अब 'समय सीमा' है। सूरदास में 'आतुर' का अर्थ 'शीघ्र' या 'जल्दी' है; आज वह है 'व्याकुल, अधीर' आदि। 'आकाशवाणी' पहले 'देववाणी' थी, आज वह 'ऑल इंडिया रेडियो' भी है। इस सिलसिले में अर्थ परिवर्तन के अर्थविस्तार, अर्थसंकोच और अर्थादेश के उदाहरण भी लिए जा सकते हैं।

*** संदर्भ :**

अर्थ निर्धारण में संदर्भ अधिक महत्वपूर्ण है। व्यंग्यरहित संदर्भ में अभिधाप्रधान सरल सामान्य अर्थ होता है, तो व्यंग्यपूर्ण संदर्भ में अर्थ ठीक उल्टा या व्यंजनायुक्त होता है। जैसे, 'रमेश इस कला में चतुर है' : सामान्य अर्थ है रमेश इस कला में 'प्रवीण'/'निपुण' है। परंतु व्यंग्यपूर्ण संदर्भ में 'चतुर' का अर्थ होगा 'धूर्त/चालाक'।

काल का एक अर्थ 'समय' है, परंतु दूसरा अर्थ 'मौत' है। 'कुल' संज्ञा का अर्थ 'वंश-खानदान' है, तो 'कुल' विशेषण का अर्थ है 'सारा-समस्त'। संस्कृत में 'सैंधव' का अर्थ 'नमक' तथा 'घोड़ा' भी होता है। अनेकार्थ शब्द : हरि - विष्णु, बंदर, शेर। अर्जुन - कुंतीपुत्र, वृक्ष। स्थाणु - शिव, खंभा। मधु - वसंत, शहद। अतःअनुवादक संदर्भ से ही यह पता लगाए कि कौन-सा अर्थ ग्रहण करना है। स्पष्ट है कि जहाँ शब्द, पद, पदबंध, उपवाक्य आदि के कोशार्थ, व्यंग्यार्थ, सुरलहर, बलाघात आदि कारणों से एक से अधिक अर्थ प्राप्त होते हैं, वहाँ अनुवादक संदर्भ के आधार पर ही कोई एक अपेक्षित अर्थ निर्धारित करे।

संसर्ग, विप्रयोग, विरोध, प्रयोजन, औचित्य और सामर्थ्य आदि भी अर्थ निर्धारण में सहायक माने गए हैं। परंतु वास्तव में ये सब संदर्भ में ही समाहित हैं।

*** लिंग :**

लिंग के आधार पर भी अर्थ निर्धारण में सहायता मिलती है। जैसे, संस्कृत में 'मित्र' शब्द के दो अर्थ हैं - सूर्य, दोस्त। 'मित्र' शब्द यदि पुल्लिंग में प्रयुक्त हुआ हो, तो उसका अर्थ सूर्य होगा और नपुंसक लिंग में हुआ हो तो 'दोस्त' होगा। 'आम्र' - पुल्लिंग में आम वृक्ष है, तो नपुंसक में आम फल। गो- स्त्रीलिंग में गाय, पुल्लिंग में बैल। कल - पु. अगला दिन, स्त्री. - चैन, आराम। टीका - पु. तिलक, स्त्री. - टिप्पणी, अर्थ। विधि - पु. ब्रह्मा, स्त्री. प्रणाली, ढंग। हार - पु. माला; स्त्री. पराजय।

*** वचन :**

कुछ भाषाओं में एकवचन में शब्द विशेष का एक अर्थ होता है, तो बहुवचन में दूसरा। उदाहरणार्थ - अंग्रेजी में air (एक वचन) - हवा; airs (बहुवचन) - हावभाव, नखरा। iron - लोहा; irons बेड़ियाँ। Water पानी; Waters जलाशय। Wood लकड़ी; Woods जंगल। ऐसे कुछ शब्द हैं, जिनमें अर्थभेद हैं। अनुवादक को अर्थनिर्धारण में इस बात का ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

हिंदी में एक व्यक्ति के लिए भी आदर व्यक्त करने के लिए एकवचन के बदले बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। you के लिए केवल 'तू' नहीं, 'तुम' या 'आप' का प्रयोग होता है। अक्षत, दर्शन, प्राण, हस्ताक्षर, होश जैसे कुछ शब्द हमेशा बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

*** समास :**

कुछ सामासिक पदों के अर्थ मूल शब्दों के अर्थ से भिन्न हो जाते हैं। जैसे 'जलवायु' का अर्थ 'जल' और 'वायु' के अर्थ में ग्रहण नहीं किया जाता। कोई अनुवादक मूल शब्दों के अर्थ से परिचित हो परंतु उनसे बने सामासिक रूप के अलग अर्थ से परिचित न हो, तो अनुवाद में गलती हो जाने की संभावना रहती है।

वीणापाणि, चक्रपाणी, गृहयुद्ध, लोकसभा, राज्यसभा, सिविल वॉर आदि सामासिकपद इसी प्रकार के हैं। इनके अर्थनिर्धारण में सतर्कता बरतनी चाहिए।

*** उपसर्ग और प्रत्यय :**

इनके कारण भी अर्थ परिवर्तित, सीमित या विशेष हो जाता है। जैसे - उपसर्गयुक्त शब्द - आहार, विहार, सहार, प्रहार, बाकायदा, बेकायदा; प्रत्ययययुक्त शब्द - अंश, अंशी, आंशिक, क्रोध, क्रोधी, क्रोधित। अनुवादक अर्थनिर्धारण के लिए इनपर भी ध्यान दें।

*** शब्दशक्ति :**

शब्दशक्ति के अनुसार शब्द के तीन अर्थ होते हैं – अभिधार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ। अनुवाद में शब्दों का हमेशा कोश में दिया हुआ अभिधार्थ ही उपयुक्त नहीं होता, आवश्यकतानुसार लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। 'आँचल में है दूध और आँखों में पानी' पंक्ति में 'आँचल' आँचल/दामन नहीं है, लक्ष्यार्थ से स्त्री का वक्षस्थल 'स्तन' है और 'पानी' पानी नहीं 'आँसू' हैं। लड़का गधा निकला में 'गधा' गधा नहीं, 'मूर्ख' अर्थ देता है।

'भला' व्यंग्य से 'बुरा' अर्थ देता है। 'तुम तो बड़े अच्छे हो, भोले हो', 'क्या सुंदर साथी ढूँढ़ा है?' - जैसे वाक्य व्यंग्य से उल्टा अर्थ देते हैं। व्यंग्य का पता संदर्भ से लग जाता है, अतः अनुवादक सतर्क रहे।

*** मुहावरे तथा विशेष प्रयोग :**

मुहावरों और विशेष प्रयोगों के शाब्दिक अर्थ नहीं, तो लाक्षणिक, अपेक्षित, वास्तविक अर्थ समझकर ही अनुवाद करना चाहिए। 'पानी-पानी होना' में पानी को 'वॉटर' समझकर अंग्रेजी अनुवाद अथवा to throw a party में 'थ्रो' को 'फेंकना' समझकर हिंदी अनुवाद करना गलत होगा। 'पानी-पानी होना' का 'to go hot and cold' या 'to be overwhelmed with Shame' तथा to throw a party का 'भोज देना; पार्टी देना' सही अनुवाद होगा।

*** बलाघात (स्ट्रेस) :**

बलाघात के कारण भी कुछ भाषाओं के शब्दार्थ में अंतर पड़ जाता है। रूसी भाषा में Zamok शब्द में यदि Za पर बलाघात होगा तो इस शब्द का अर्थ होगा 'किला'। परंतु mok पर बलाघात, जोर होगा तो इसका अर्थ 'ताला' होगा। अंग्रेजी में कई शब्द संज्ञा तथा क्रिया दोनों होते हैं। जैसे, Present में Pre पर बलाघात हो, तो वह शब्द संज्ञा होगा परंतु sent पर बल होगा तो वह शब्द क्रिया माना जाएगा। ठीक अनुवाद करने के लिए बलाघात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। दुभाषिए के रूप में अनुवादक को बलाघात का पता उच्चारण पर ध्यान देने से हो जाता है। परंतु लिखित भाषा से अनुवाद करते समय विशेष चिह्न या प्रसंग से पता लग जाता है।

*** अनुतान :**

चीनी आदि कई तान भाषाओं (टोन लैंग्वेज) में अनुतान - सुरलहर में परिवर्तन से शब्द का अर्थ बदल जाता है। उदाहरणार्थ, चीनी शब्द 'मा' का उच्चारण एक सुरलहर में किया जाए, तो इसका अर्थ 'घोड़ा' होता है।

दूसरी सुरलहर में 'एक कपड़ा', तीसरे में 'माँ' और चौथी में 'गाली देना'। हिंदी में 'हाँ' का एक सुरलहर में सामान्य स्वीकार अर्थ होगा, तो दूसरे में 'मत'। 'लता चली गई'। 'लता चली गई?' और 'लता चली गई!' इन वाक्यों में भी विराम चिह्न और टोन के कारण अर्थांतर है। लिखित भाषा के अनुवाद में विराम चिह्न एक सीमा तक अर्थनिर्धारण में सहायक होते हैं।

निष्कर्षतः अनुवादक को अर्थ के स्तर पर अर्थसंकोच, अर्थविस्तार, अर्थादेश, अर्थोत्कर्ष, अर्थापकर्ष आदि बातों की ओर ध्यान देकर ही अपेक्षित अनुवाद करना होगा।

15. अनुवाद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

स्वरूप एवं समस्याएँ

*** समाजविशेष एवं संस्कृति विशेष के अनुवादकार्य में उत्पन्न समस्याएँ**

बृहत हिंदी कोश के अनुसार 'संस्कृति' याने आचरणगत परंपरा। प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है जिसमें उस समाज की सारी विशेषताएँ निहित होती हैं।

'नालंदा विशाल शब्दसागर' के अनुसार संस्कृति शब्द का अर्थ है -"किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रुचि, आचार-विचार, कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं।" इससे स्पष्ट है कि संस्कृति में व्यक्ति, उसकी जाति, राष्ट्र आदि से संबंधित रुचिगत, आचार-विचारगत, कला-कौशलगत तथा सभ्यतागत सारी बातें शामिल हैं।

प्रत्येक समाज का जीवन, उसका अनुभव आदि बातें धीरे-धीरे उसकी संस्कृति में शामिल हो जाती हैं। संस्कृति के अंतर्गत आने वाली एक-एक बात में उस समाज की सारी विशेषताएँ विद्यमान होती हैं। किसी एक भाषा में, अभिव्यक्त ये सारी विशेषताएँ किसी अन्य भाषा में अभिव्यक्त करना बड़ा कठिन है, क्योंकि इनमें निहित संदर्भ, प्रसंग, भाव विशेष, व्यंजकता, चुटीलापन संपूर्ण अर्थवत्ता के साथ व्यक्त करना सहज संभव नहीं होता। स्वाभाविक है कि अनुवाद के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष को अननूद्य जानकर छोड़ दिया जाता है या फिर कोई समाधान ढूँढ़ लिया जाता है। इस क्षेत्र के अनुवाद में आने वाली कठिनाइयाँ निम्नलिखित हैं -

*** धार्मिकता से संबंधित सामग्री के अनुवाद की समस्या –**

'बृहत हिंदी कोश' में 'धर्म' का अर्थ 'लौकिक, सामाजिक कर्तव्य' दिया है। यह ऐसा कर्म है जिसे विशिष्ट वर्ण, आश्रम, जाति आदि की दृष्टि से करना आवश्यक है। धर्म मानवी जीवन का अभिन्न अंग है। प्रत्येक समाज को संकट, दुःख, पीड़ा से मुक्ति के लिए किसी अव्यक्त शक्ति 'ईश्वर' के सहारे की आवश्यकता महसूस होती है। इसी ईश्वर या उसके आशीर्वाद की प्राप्ति के लिए प्रत्येक समाज विशिष्ट प्रकार का धार्मिक आचरण करता है। इसमें पूजा-पाठ, व्रत-उपवास, विशेष आचार-विचार से संबंधित बातें शामिल हैं। पूजन-अर्चन के साथ जो श्रद्धाभाव जुड़ा है उसे अनूदित करना सरल नहीं है। 'सत्यनारायण' की पूजा के लिए भारतीय भाषाओं में विकल्प मिल सकता है लेकिन विदेशी भाषाओं में इसके लिए विकल्प मिलना कठिन है। आरती और महाआरती, उसकी विधि-प्रविधि को तथा उनके अंतर को एक भारतीय भाषा से दूसरी भारतीय भाषाओं में भी सही अर्थों में अनूदित नहीं किया जा सकता। मंत्र और तंत्र, भोग और छप्पन भोग अनुवाद से परे हैं। हलदी, कुमकुम, विभूति, ताम्हण, पंचपात्र, अबीर, बुक्का, अंगारा, उद्यापन आदि का विदेशी भाषाओं में अनुवाद नहीं हो सकता। मुहावरा है-'देव पाण्यात बुडविणे'। अपने संकट की प्रखरता का एहसास देव को दिलाने के लिए उसे भी पानी में रखा जाता है। इसका शब्दशः अनुवाद 'देव को पानी में डुबाना' पूर्णतः गलत हो सकता है। 'ओटी भरणे, तोरण बांधणे, पारायण करणे, फुलोरा बांधणे, घागरी फुंकणे' जैसे सांस्कृतिक परंपराओं का बोधपूर्ण अनुवाद करना कठिन है।

हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, पारसी आदि धर्मों के आचार, उससे संबंधित नियम आदि को अनूदित करना कठिन है। शब्द अनूदित हो, परंतु श्रद्धा को अनूदित नहीं किया जा सकता। 'सोमवार, मंगलवार, शनिवार' आदि 'उपवास' के दिन का अनुवाद 'फास्ट'... के रूप में किया भी जाए तो भी इससे संकल्पना तथा श्रद्धा स्पष्ट नहीं होगी। महाराष्ट्र में 'एकादशी' का व्रत निभाया जाता है। व्यंग्य से कहा जाता है कि 'एकादशी दुप्पट खाशी', 'गाढवासारखं चरा पण एकादशी करा' अन्य भाषा में इनका अनुवाद ठीक अर्थ नहीं दे पाएगा। अन्य भाषाभाषी 'पंढरी के वारकरी' का सही अर्थ नहीं लगा पाते।

*** सामाजिक-सांस्कृतिक अनुवाद की समस्याएँ –**

तीज-त्यौहार भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। 'होली', 'दीवाली', 'ईद', 'ईस्टर', 'दशहरा', 'ओनम', 'कुंभ', 'पोंगल', 'बिहु', 'बैसाखी' आदि का अनुवाद करना कठिन है। 'दीवाली'-'फेस्टिवल ऑफ लाइट', 'होली'-'फेस्टिवल ऑफ कलर' के रूप में अनुवाद करना काफी नहीं है। भारतीय भाषाओं में भी 'मकर संक्रांति' के लिए 'पोंगल' शत-प्रतिशत सही विकल्प नहीं है। 'करवा चौथ' और 'वट सावित्री पौर्णिमा' के पीछे निहित भाव एक भले ही हो, लेकिन ये त्यौहार भिन्न हैं। इनसे संबंधित सामग्री अनुवाद से परे हैं। तीर्थक्षेत्र का अपना एक विशेष इतिहास, महत्व होता है। 'हिमालय', 'मानसरोवर', 'कैलाश', 'अयोध्या', 'द्वारका', 'पंढरी', 'पुरी', 'रामेश्वर', 'कन्याकुमारी' आदि सिर्फ स्थलों के नाम नहीं हैं, बल्कि इनके साथ समाज की भावनाएँ जुड़ी हुई हैं।

*** सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ –**

सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ बहुत पैनी और व्यंजक होती हैं। हिंदी में 'अंगद का पैर', 'दधीचि की हड्डी', 'द्रौपदी का चीर', 'भीष्म प्रतिज्ञा', 'सोने की लंका', 'शैतान की आँत', 'रामबाण', 'कर्णावतार', 'बली का राज' तथा अंग्रेजी में Democle's Sword, Old Adam, Baptism of blood, Witch-hunt, One's Waterloo आदि ऐसी ही अभिव्यक्तियाँ हैं, जो शैली में जितना आकर्षक पैनापन ला देती हैं, अनुवाद में उतनी ही दुरूह और प्रायः अननूद्य हो जाती हैं।

कुरता, लहँगा, लुँगी, सलवार, सोवळे, धोती, साड़ी, खड़ाऊ, जनेऊ, अचकन तथा खाद्यपदार्थों में 'खीर, इमरती, कचौड़ी, कवाब, कोफ्ते, घेवर, गुलाबजामुन, बरफी, पुलाव, पूड़ी, रायता, हलवा आदि कुछ वस्तुओं के नाम भी अननूद्य होते हैं।

रिश्तों के नामों की भी यही स्थिति है। हिंदी के 'चाचा, ताऊ, मामा, मौसा, फूफा' आदि का अंग्रेजी में अनुवाद केवल 'अंकल' से होता है, इससे सही रिश्ते का पता नहीं चलता। वही बात अंग्रेजी 'आंट' की है।उसका अनुवाद हिंदी में 'चाची, ताई, मामी, मौसी, फूफी' इनमें से किस शब्द से करें? यहाँ दादा 'पिता, पितामह या बड़े भाई' को भी कहते हैं। मलयालम में 'सहोदरन' किसी भी भाई और 'सहोदरी' किसी भी बहन के लिए प्रयुक्त होता है, परंतु वहाँ अपने भाई के लिए बहन और अपनी बहन के लिए भाई किसी दूसरे ही शब्द का प्रयोग करते हैं।

भारतीय भाषाओं में जन्म, जनेऊ, विवाह आदि के संबंध में अनेक संस्कारगीत हैं जिनका विदेशी भाषाओं में ठीक अनुवाद संभव नहीं है।

*** समस्या का समाधान –**

समाज-संस्कृति से संबंधित शब्द अनुवाद कार्य में बाधा व्युत्पन्न करते हैं। स्रोतभाषा की सामग्री में ये शब्द चार-चाँद लगाते हैं। लेकिन इनका अन्य भाषाओं में अनुवाद अनुवादक को बड़ी मुश्किल में डाल देता है। ऐसी सामग्री के अनुवाद में जहाँ तक हो सके, अनुवादक विकल्प ढूँढ़ने का प्रयास करे। सही विकल्प नहीं मिलता है तो निकटतम विकल्प के सहारे से काम चला ले। यदि कोई विकल्प उपलब्ध नहीं होता है तो इस स्थिति में लिप्यंतरण, घटकीय विश्लेषण जैसी युक्तियों का प्रयोग कर दे। अनुवादक उस शब्द का यथावत लिप्यंतारण कर दे तथा पादटिप्पणी या व्याख्यात्मक टिप्पणी के सहारे शब्द का अर्थ स्पष्ट कर दे। इससे एक फायदा यह है कि पाठकों को स्रोतभाषा की सामाजिक-सांस्कृतिक बातों का परिचय प्राप्त होगा।

अनुवादक स्वयं कुछ नए शब्द गढ़ सकता है। स्रोतभाषा पाठ में आए किसी शब्द के लिए सटीक शब्द गढ़ पाने की क्षमता यदि अनुवादक में है तो वह नवनिर्माण कर सकता है। इससे लक्ष्यभाषा के शब्द भंडार में वृद्धि होगी लेकिन यह कदम उठाने से पहले अनुवादक अपनी क्षमता के बारे में भली भाँति सोच ले।

इस दृष्टि से अनुवादक हर तरह के योग्य उपाय करने के लिए स्वतंत्र है, बशर्ते कि उससे उद्देश्य की हानि न हो।

16. रचनात्मक साहित्य का अनुवाद

जो साहित्य रच जाता है और रचा जाता है; जिसमें सृजन या रचना का कार्य संपन्न होता है उसे रचनात्मक साहित्य कहते हैं। रचनात्मक साहित्य में उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक काव्य, निबंध, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रावर्णन, रिपोर्ताज आदि का समावेश किया जाता है।

साहित्य के पठन से हम अपने जीवनानुभवों को समृद्ध करते हैं। उस समृद्धि को केवल एक भाषा तक सीमित करना उचित नहीं है, इसलिए रचनात्मक साहित्य का अनुवाद होना चाहिए। अनुवाद के कारण ही प्रदेश, देश और संसार की सभ्यता-संस्कृति से परिचित होकर हम अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं। कथासाहित्य जैसा रचनात्मक साहित्य कल्पना पर आधारित होकर भी हमें संभवनीय सत्य के बहुत निकट पहुँचाता है। उसे हम मनोवैज्ञानिक सत्य, विश्वव्यापक सत्य 'यूनिवर्सल ट्रुथ' कहते हैं। इस दृष्टि से भी रचनात्मक अनुवाद की आवश्यकता है। रचनात्मक साहित्य मानव मात्र की एकता को स्थापित करते हुए विश्व मानवता के आदर्श को स्थापित करता है। इसके साथ-साथ इन अनुवादों के कारण भारतीय एवं पाश्चात्य आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्यप्रयोजनों की भी सिद्धि हो जाती है।

पूर्ण पठन :

रचनात्मक साहित्य का अनुवाद करते समय सर्वप्रथम संपूर्ण रचना को पढ़ना आवश्यक है। रचनाकार संपूर्ण रचना के माध्यम से एक भाव, एक अर्थ, एक विचार की अभिव्यक्ति करता है। इसे पूर्णतः जाने-समझे बिना उस रचना का अनुवाद करना गलत होगा।

भाषाई कौशल :

अनुवादक उत्तम अनुवाद देने का आदर्श अपने सामने रखे। मूल रचना का जो प्रभाव अनुवादक पर हुआ है, कम-से-कम उतना और वैसा ही प्रभाव उस अनुवाद को पढ़ने वालों पर हो इसका भान रखकर ही अनुवादक को अपने भाषाई कौशलों का उपयोग करना चाहिए। इस दृष्टि से भाषिक संरचना, शब्दशक्ति, अलंकार, प्रतीक, बिंब, कहावतें, मुहावरे, ध्वन्यात्मक प्रयोग आदि बातें महत्वपूर्ण हैं। ज्ञान साहित्य की भाषा अभिधार्थ बोध कराती है, तो रचनात्मक साहित्य की भाषा लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ का भी बोध कराती है।

रचना का स्वरूप - शैली :

अनुवादक को रचनात्मक साहित्य के अनुवाद में रचना के स्वरूप अर्थात विनोदी या गंभीर प्रवृत्ति का भान रखना आवश्यक है। उसे रचनाकार और उसकी रचना का अपेक्षित परिचय हो। उसे रचना के कथ्य का, उसकी शैली विशेष का ज्ञान अपेक्षित है। इतना होने पर अनुवाद का आरंभ किया जाना चाहिए।

विधा :

रचनात्मक अनुवाद में अनुवादक को साहित्य विधा का भान भी आवश्यक है। उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी आदि विधाओं की निर्मिति अलग-अलग कौशलों की माँग करती है। उसी तरह अनुवाद में भी

अनुवादक से इन कौशलों को निभाने की उम्मीद रखी जाती है। अनुवाद होते हुए भी मौलिक रचना का-सा प्रभाव निर्माण करने का कार्य अनुवादक से अपेक्षित होता है।

सामाजिक - सांस्कृतिक बातें :

रचनात्मक साहित्य की भाषा एक सामाजिक-सांस्कृतिक वस्तु है। रचना के अनुवाद के साथ-साथ संस्कृति का भी अनुवाद करना पड़ता है। इस दृष्टि से भारतीय और विदेशी भाषाओं के परस्पर अनुवाद करने का काम अधिक कठिन बन जाता है। संस्कृति-सभ्यता, खान-पान, रिश्ते-नाते, रहन-सहन, रीति-रिवाज, तीज-त्योहार, धार्मिक कर्मकांड, मंत्र-तंत्र आदि के अनुवाद मुश्किल होते हैं। प्रायः सांस्कृतिकता के अनुवाद के साथ कई पादटिप्पणियाँ देनी पड़ती हैं।

सीधे दो भाषाओं में अनुवाद :

देश-विदेश की चर्चित और पुरस्कृत रचनाओं के अनुवाद होते रहते हैं। एक भारतीय भाषा से सीधे दूसरी भारतीय भाषा में अनुवाद हो, तो वह आदर्श अनुवाद हो सकेगा, परंतु अंग्रेजी अनुवाद के सहारे किसी भारतीय भाषा में अनुवाद करना अवांछित मानकर टाल देना चाहिए। अनुवाद हिंदी से अन्य भारतीय भाषा में होगा तो वह मूल के अधिक निकट उपयुक्त और मौलिक-सा होगा।

नाट्यानुवाद की समस्याएँ :

रचनात्मक साहित्य के अनुवाद में नाटक और काव्य के अनुवाद कई कारणों से मुश्किल-से लगते हैं। नाटक संवाद-वार्तालाप या कथोपकथन प्रणाली में लिखा जाता है। नाटक रंगमंच पर खेला जाता है। वहाँ पर वह अभिनय में भी अनूदित होता है। इस तरह अनुवादक को नाट्यानुवाद में एक साथ दो-दो अनुवादों का भान रखना पड़ता है। नाटक के लिखित रूप याने संहिता को नाट्यदिग्दर्शक रंगावृत्ति में अनूदित करता है और इस प्रक्रिया में अभिनेताओं का बड़ा योगदान होता है। रचनात्मक अनुवाद की अन्य समस्याओं के अतिरिक्त नाटक के अनुवादक को उक्त समस्याओं का भी भान रखना पड़ता है। अपनी मिट्टी से, अपनी संस्कृति-सभ्यता से मेल न खाने वाली बातों और दृश्यों को अनूदित करना बड़ा कठिन होता है। यहाँ पादटिप्पणियों का सहारा नहीं लिया जा सकता। नाटक दृश्यकाव्य है और दृश्यों का अनुवाद सचमुच एक समस्या है।

काव्यानुवाद की समस्याएँ :

काव्य के पूरे रूप को अनूदित करना भी कई कारणों से कठिन माना जाता है। काव्यानुवाद में कुछ जोड़ना-घटाना अयोग्य होता है। छंद के बंधन की एक समस्या है। काव्य में प्रयुक्त अलंकारों-शैलियों, मिथकों, प्रतीकों, बिंबों का अनुवाद भी एक अन्य बड़ी समस्या है। कविता का शब्दशः, कड़ी-दर-कड़ी अनुवाद नहीं करना चाहिए। कविता को लक्ष्य भाषा की संस्कृति में और भावार्थ में ढाला जा सकता है।

अन्य विधाएँ :

निबंध, रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि विधाओं के अनुवाद में भी उल्लिखित समस्याएँ-समाधान लागू होते हैं। ललितेतर रचनात्मक साहित्य में विभिन्न विरामचिह्नों का भी ध्यान रखना पड़ता है, अन्यथा अर्थ के अनर्थ का, असत्य का खतरा रहता है। अनुवादक को समीक्षात्मक साहित्य के अनुवाद में पारिभाषिक

शब्दों के अनुवाद की अतिरिक्त समस्या का सामना करना पड़ता है और उसे निभाने की जिम्मेदारी भी उठानी पड़ती है।

समवृत्ति :

अनुवादक को मूल लेखक की मनोभूमि पर उतरकर 'समवृत्ति' होना पड़ता है; मूल कथ्य को अबाधित रखते हुए दूसरी भाषा में ढालना पड़ता है; मूल के सम्यक प्रभाव को बरकरार रखना पड़ता है; सांस्कृतिक, सामाजिक तथा अन्य समस्याओं को पार करके मूल रचना के प्रति निष्ठा का निर्वाह करना पड़ता है; अपने पाठकों के साथ निष्ठा रखनी पड़ती है; उन्हें कुछ नवीन देना होता है; वाक्यों, प्रसंगों, शब्दों के अनुवाद के लिए बौद्धिक - मानसिक संघर्ष से गुजरना पड़ता है; मौलिक लेखन की तुलना में अनुवाद में अधिक समय लगाना पड़ता है; दोनों भाषाओं, सभ्यताओं, संस्कृतियों और भाषाई कौशलों का ज्ञाता होना पड़ता है। रचनात्मक साहित्य के अनुवाद में आने वाली उक्त समस्याओं को पार कर जब वह उचित समाधान ढूँढ़ता है तब कहीं रचनात्मक साहित्य का अनुवाद सफल हो जाता है।

17. वाणिज्य और व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद

स्वरूप, आवश्यकताएँ, समस्याएँ

वाणिज्य का सीधा, सरल अर्थ व्यापार है। आधुनिक युग में व्यापार-व्यवसाय अपनी महत्वपूर्ण अहमियत रखता है। यूँ तो व्यापार एक परंपरा के रूप में सदियों से चलता चला आ रहा है। लेकिन आधुनिक युग में व्यापार-व्यवसाय को अनन्यसाधारण महत्व प्राप्त हो चुका है। बात चाहे व्यक्तिगत उन्नति की हो या राष्ट्रीय उन्नति की हो, वाणिज्य को उसमें अटल स्थान है। वाणिज्य की प्रमुखता बढ़ने के कई कारण हैं। इस युग में मनुष्य की वृत्ति उद्योगशील हो गई, यातायात के साधनों के कारण व्यापार करना सुलभ हो गया है। इससे आज वह विश्व के कोने-कोने में प्रतिष्ठित है। आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का महत्व बढ़ रहा है, क्योंकि भारत एक जबरदस्त व्यापार केंद्र सिद्ध होता जा रहा है। बात जीवनावश्यक वस्तुओं की हो या सेवा-सुविधाओं की हो, व्यापार उसमें विद्यमान है ही। व्यापार में सबसे बड़ी आवश्यकता विज्ञापन की होती है। अतः वाणिज्य अनुवाद का बहुत बड़ा हिस्सा विज्ञापनों के माध्यम से व्यापार बढ़ाता है, परंतु सारे विश्व की भाषा एक नहीं है अतः वाणिज्य के क्षेत्र में अनुवाद महत्वपूर्ण हो उठा है। वाणिज्य अनुवाद में राष्ट्रीय उपादानों, संयुक्त राष्ट्रसंघ, युनेस्को जैसी संस्थाएँ, फिल्म, पर्यटन, रेडियो, दूरदर्शन, बैंक आदि कई क्षेत्र शामिल हैं। आधुनिक युग में तो वाणिज्यानुवाद की आवश्यकता उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है।

अच्छे व्यापार के लिए प्रभावी विज्ञापन और उन विज्ञापनों का विश्व के प्रत्येक कोने में पहुँचना जरूरी है। प्रभावी विज्ञापन झट से वाणिज्य को गली से दिल्ली और देश से विदेश पहुँचा सकते हैं। इसमें केवल विज्ञापनों के अलावा व्यापार से संबंधित कागजात, विभिन्न दस्तावेज, व्यावसायिक पत्र, आदेशपत्र, भुगतान संबंधी पत्र, शिकायती पत्र, क्षतिपूर्ति पत्र, निविदाएँ, सूचनाएँ आदि व्यापारी-व्यावसायिक पत्राचार शामिल है।

साहित्यिक और साहित्येतर दोनों ही प्रकार के अनुवादों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, लेकिन दोनों प्रकार के अनुवादों की विशेषताएँ संभालने वाला एक मात्र अनुवाद वाणिज्य क्षेत्र का अनुवाद है। यह अनुवाद सूचनात्मक, आदेशात्मक भी होता है और आलंकारिक, रसपूर्ण तथा भावनात्मक भी होता है। जहाँ एक ओर वाणिज्यानुवाद में पारिभाषिक शब्दावली महत्वपूर्ण मानी जाती है, वहीं जनता तक इसे पहुँचाने की आवश्यकता के कारण सामान्य, चलती-सी, बोलचाल की, व्यावहारिक भाषा भी महत्वपूर्ण मानी जाती है।

साहित्यिक तथा साहित्येतर अनुवाद की विशेषताओं को एकसाथ संभालना आसान काम नहीं है। इसी लिए कहना पड़ेगा कि इस प्रकार का अनुवादकार्य भी आसान काम नहीं है। पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्या हर जगह की तरह इस जगह भी विद्यमान है। विशिष्ट क्षेत्र में प्रचलित सामान्य अर्थ से भिन्न विशिष्ट शब्द अनुवाद के क्षेत्र में पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं। वाणिज्य का संबंध तो अनगिनत क्षेत्रों से है। सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें वाणिज्य शामिल न हो। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट शब्दावली रखता है, लेकिन एक ही व्यक्ति सभी क्षेत्रों की विशिष्ट शब्दावली का ज्ञान रखे, यह मुश्किल है। यही कारण है कि वाणिज्य अनुवाद कठिन माना जाता है।

*** संक्षिप्तीकरण -**

संक्षिप्तीकरण की समस्या वाणिज्य अनुवाद के साथ भी पाई जाती है। आजकल जमाना ही 'शार्ट कट' का है। कम परिश्रम में बहुत अधिक कह डालने का प्रयास लगभग सभी लोग करते हैं। शब्दों के उच्चारण में पता नहीं ऐसी कितनी मेहनत लगती है कि लोग संक्षिप्तियों का सहारा ले लेते हैं। अब तो संक्षिप्तियों का भी संक्षिप्तीकरण किया जाने लगा है। डॉक्टर 'डॉक', डिपार्टमेंट 'डी मेंट', पुणे म्युनिसिपल ट्रांसपोर्ट 'पी.एम.टी.' बन गया है। मुंबई का 'बेस्ट' तो प्रसिद्ध ही है। पुणे का एक प्रसिद्ध चौक है 'अप्पा बलवंत चौक' जहाँ शिक्षा से संबंधित सामग्री मिलती है। आज वह संक्षिप्तीकरण से 'ए.बी.सी.' कहलाता है। 'महाराष्ट्र टाइम्स' का 'म.टा.', 'रामकृष्णपुरम' का 'आर.के.पुरम' आदि अनेक उदाहरण मिलेंगे। संक्षिप्तियों का अनुवाद एक समस्या है। अखबारों के नाम, पार्टियों के नाम, लोगों के नाम आदि प्रत्येक क्षेत्र में संक्षिप्तियों का बोलबाला है। संचारमाध्यम, व्यापार, विज्ञापन, बैंक इन क्षेत्रों में तो संक्षिप्तियों का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है।

लिप्यंतरण के नियमों का अभाव वाणिज्य अनुवाद की अगली महत्वपूर्ण समस्या है। ठीक इसी तरह 'देवदास बनना', 'सूरदास होना' जैसे प्रचलित **मुहावरों** का अनुवाद करना एक कठिन कार्य है। वाणिज्य के क्षेत्र के अनुवाद की सबसे महत्वपूर्ण और जानलेवा समस्या **भाषिक सहजता** की रक्षा की है। यह सामग्री एक साथ सूचनात्मक और जनसामान्य के लिए बनाई गई होती है। सूचना सही ढंग से संप्रेषित हो और सामान्यों को अपनी-सी लगे इन बातों का निर्वाह बहुत ही कठिन है।

अनुवादक को इन समस्याओं का सामना करके इनका अनुवाद करना पड़ता है। सभी विकल्पों को देखकर सटीक विकल्प चुनना होता है। अनुवादक संक्षिप्तियों का लिप्यंतरण कर सकता है या फिर लक्ष्यभाषा में उनका संक्षिप्त रूप प्रस्तुत कर सकता है। जैसे- H.R.A. की अपेक्षा म.कि.भ. (मकान किराया भत्ता)। अनुवादक लिप्यंतरण का रास्ता चुन सकता है लेकिन उसे उस लिप्यंतरण को पाद टिप्पणी के साथ प्रस्तुत कर देना चाहिए। वाणिज्य-व्यवसाय के अनुवाद में विशिष्ट प्रयुक्तियों और जनभाषा के सुंदर समन्वय के प्रयास किए जाने चाहिए।

वाणिज्य के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित अनुवाद निश्चित रूप से एक कठिन कार्य है परंतु एक योग्य अनुवादक सूझ-बूझ से काम लेकर इसे पूर्णत्व प्रदान कर सकता है।

18. बैंकों में हिंदी अनुवाद

आवश्यकता, स्वरूप, समस्याएँ

बैंक केवल भारत की ही नहीं, बल्कि विश्व की अर्थव्यवस्था का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। वैसे देखा जाए तो भारत में बैंकिंग व्यवस्था नई बात नहीं थी। फिर भी यह बात सच है कि आधुनिक युग में यह व्यवस्था अंग्रेजों की देन है। बैकिंग क्षेत्र निरंतर व्यापक होता जा रहा था, साथ ही बैंकिंग सामग्री के अनुवाद का दायरा भी बढ़ता जा रहा था, लेकिन इस दिशा में व्यवस्थित रूप से कदम नहीं बढ़ाए जा रहे थे। 1969 में चौदह बड़ी बैंकों के राष्ट्रीयकरण के साथ ही सामान्य आदमी बैंक की अहमियत समझने लगा। सामान्य आदमी को सही तरह से समझाने के लिए अनुवाद की आवश्यकता महसूस होने लगी। राजभाषा नीति के अंतर्गत बैंकिंग कामकाज हिंदी में किया जाना अनिवार्य घोषित किया गया। इससे अनुवाद की आवश्यकता अधिक मात्रा में बढ़ गई। बैंकिंग की भाषा अंग्रेजी ही थी जिसके चलते बैंक व्यवहार अभी तक सामान्य आदमी की पहुँच के बाहर की वस्तु थी। इस स्थिति को समाप्त करने के उद्देश्य से 1965 के बाद सरकारी कामकाजों में हिंदी का प्रयोग निश्चित कर दिया गया लेकिन कुछ कारणों से हिंदी तत्काल लागू नहीं हो पाई। इससे पहले ही 1963 में राजभाषा अधिनियम बनाकर द्विभाषिक स्थिति अनिश्चित काल के लिए स्थिर कर दी गई थी। 1976 के राजभाषा नियम के अनुसार सारे देश को 'क', 'ख', 'ग' क्षेत्र में बाँट दिया गया। प्रमुख बैंकों के राष्ट्रीयकरण से बैंकों की शाखाएँ गाँव-गाँव में खुलने लगीं। बैंक की भाषा अंग्रेजी थी लेकिन गाँव की जनता उसे समझ पाने में सक्षम नहीं थी। अधिक लोगों तक बैंकिंग साहित्य पहुँचाने की आवश्यकता निर्माण हो गई। एक- सरकारी नियम और दो- सामान्य आदमी की आवश्यकता, इन दो बातों के कारण बैंकिंग साहित्य के हिंदी अनुवाद की आवश्यकता उभरकर सामने आ गई। लेकिन बैंकिंग अनुवाद सरल काम नहीं था। बहुत-से लोग सोचते हैं कि बैंकिंग अनुवाद में भला मुश्किल क्या है? स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की जानकारी के अलावा किसी चीज की जरूरत ही नहीं है। इसमें भी मुश्किल आए तो मदद के लिए पारिभाषिक कोश हैं। लेकिन ऐसा सोचने वाले लोगों को यह भी देखना चाहिए कि बैंकिंग अुनवाद का सीधा संबंध रुपए-पैसे से है। मात्र इतना ही नहीं, यह व्यवस्था चलाने वाले अंग्रेजी में काम करने के आदी हैं। इस स्थिति में इतनी बृहत व्यवस्था को हिंदी भाषा में ढाल पाना सरल काम नहीं है।

बैंकिंग अनुवाद के स्पष्टतः दो भाग किए जा सकते हैं-

1) शाखा स्तर के कार्य।

2) प्रशासनिक कार्यालयों के कार्य।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि - 1) जनता के साथ लेन-देन आदि मामलों का अनुवाद 2) बैंक के आंतरिक कामकाजों का अनुवाद। इन दोनों प्रकारों की सामग्री का संबंध फॉर्म, सूचना, निविदा, प्रेस सूचना, टिप्पणी, रिपोर्ट, नियम-पुस्तकें आदि के साथ है। इन्हीं के अनुवाद को लेकर अनुवादक को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह सारी सामग्री मूलतः अंग्रेजी में रही है और अनिवार्यतः इसका अनुवाद हिंदी में

करना है। अनुवाद भी एक ही प्रकार का होता तो शायद इसे करना आसान होता लेकिन बैंकिंग साहित्य के अनुवाद के भी कई प्रकार होते हैं। इनमें फॉर्म के अनुवाद एक बहुत बड़ी समस्या है।

बैंकिंग अनुवाद की समस्याएँ :-

बैंकिंग अनुवाद में आने वाली समस्याओं का विवेचन इस प्रकार किया जा सकता है–

1. पारिभाषिक शब्दावली :-

बैंकिंग अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली सबसे बड़ी समस्या है। प्रत्येक क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ के साथ प्रयुक्त शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहते हैं। बैंकिंग की शब्दावली का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि इसमें ढेर सारे विषयों की पारिभाषिक शब्दावली का मिश्रण हुआ है। वाणिज्य, शेअर बाजार, अर्थशास्त्र आदि क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली बैंक में सहजता के साथ प्रयुक्त की जाती है। बैंक विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े उद्योगों को ऋण दिया करता है। कृषि, कुक्कुटपालन, पशुपालन, चर्मोद्योग, खाद्य प्रसंस्करण आदि उद्योगों को चूँकि बैंक लोन (ऋण) देता है, इसलिए इससे संबंधित शब्द भी बैंकों की पारिभाषिक शब्दावली में ही शामिल हो चुके हैं। बैंकों ने अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना आरंभ कर दिया है, तो प्रशिक्षण से संबंधित विषय जैसे - दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, व्यवहार विज्ञान, सांख्यिकी, प्रबंध विज्ञान आदि और इनसे संबंधित शब्द भी बैंकिंग की शब्दावली के अंग बन गए। बैंकों में कंप्यूटर जैसी मशीनों की अनिवार्य आवश्यकता है। स्वाभाविक ही है, इन शब्दों का सन्निवेश भी बैंकिंग की पारिभाषिक शब्दावली में ही किया गया। ऋण देना बैंकों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। ऋण की वसूली भी उतना ही महत्वपूर्ण और उससे अधिक कठिन कार्य है। इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए बैंक अपने करार में विधिक अर्थात कानूनी भाषा का प्रयोग करने लगा। स्पष्ट है, विधि की शब्दावली भी बैंकिंग शब्दावली का अनिवार्य अंग बन गई। विज्ञापन आधुनिक युग की अनिवार्य आवश्यकता है। बैंकों ने भी विज्ञापन की अहमियत पहचान ली है अतः विज्ञापन तथा संचार माध्यमों की शब्दावली भी बैंकिंग की शब्दावली में शामिल हो गई।

ढेर सारे विषयों की पारिभाषिक शब्दावली बैंकिंग साहित्य में शामिल हो गई। इससे बैंकिंग साहित्य की गरिमा बढ़ी, उसका दायरा बढ़ा लेकिन साथ ही इस साहित्य के अनुवाद करने वाले की समस्याएँ भी बढ़ीं।

2. बैंकिंग सामग्री से संबंधित शब्दावली के स्रोत :-

बैंकिंग में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री, शब्दावली के स्रोत समान होते तो अनुवाद में आने वाली कठिनाइयाँ निश्चित रूप से कम होतीं लेकिन इसके स्रोत भी बहुत भिन्न-भिन्न हैं। जैसे -

- अंग्रेजी शब्द अपने मौलिक रूप में पाए जाते हैं। कमीशन, काउंटर, चैक, टेरिफ, प्रीमियम, बिल आदि।
- कई अंग्रेजी शब्द प्रचलित होकर विकृत रूप धारण कर चुके हैं। जैसे- गारंटीकृत, मशीनीकरण, इंडेंटकर्ता, लाइसेंसीकरण आदि।

- अंग्रेजी ध्वनि साम्य वाले रूप जैसे- रसीद,कोड आदि।
- पुराने देशी शब्द जो अच्छी तरह प्रचलित थे जैसे - आढ़तिया, रुक्का, कुर्की, हुंडी, कटौती, तिजोरी आदि।

इन सभी स्रोतों से शब्द आकर बैंकिंग की शब्दावली में शामिल हो चुके हैं। इनके सटीक विकल्प ढूँढ़ना कठिन काम है। इसके अलावा Order (ऑर्डर) जैसे कई शब्द हैं जो अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप में ही सरल लगते हैं।

3. हिंदी शब्दावली की दुरूहता :-

समस्या केवल पारिभाषिक शब्दावली, उसके स्रोतों को सही विकल्प में बिठाना ही नहीं है। कई समस्याएँ ऐसी होती हैं जिनका समाधान खोजना तक कठिन होता है। बैंकिंग सामग्री के अनुवाद की महत्वपूर्ण समस्या यह है कि मूल अंग्रेजी शब्दों के लिए हिंदी विकल्प इतने जटिल हैं कि हिंदी का विद्वान भी बहुत बार उसके सही अर्थ तक नहीं पहुँच पाता, तो सामान्य आदमी की तो बात ही क्या? एक कठिन शब्द का प्रचलित हो जाना आने वाले अनुवादकों को भी मुश्किल में डाल देता है।

4. शब्दचयन की समस्या :-

अनुवाद में शब्दचयन का अपना महत्व होता है। पारिभाषिक शब्दावली के अस्तित्व के बावजूद कई बार देखा गया है कि एक ही शब्द दो-दो, तीन-तीन अर्थों में प्रचलित है। अनुवादक यदि सतही तौर पर अनुवाद करने लगेगा तो बड़ी गड़बड़ हो सकती है। बोलचाल के सामान्य शब्द भी बैंकिंग में विशेष अर्थ के साथ प्रयुक्त होते हैं। ऐसे समानार्थी शब्द अनुवादक के मन में भ्रम निर्माण करते हैं। उसे भ्रम में बहने की अपेक्षा सामग्री का रुख पहचानकर सही शब्द चयन के साथ अनुवाद कर देना चाहिए। जैसे- account शब्द के हिंदी में दो विकल्प विद्यमान हैं - 1) लेखा 2) खाता। योग्य चयन के साथ ही अनुवादक को अनुवाद करना चाहिए।

5. अर्थभिन्नता :-

एक शब्द के भिन्न-भिन्न विकल्प समस्या निर्माण करते हैं। अनुवाद में अर्थ भिन्नता एक अहम समस्या के रूप में उभरती है। जैसे- tender शब्द का एक अर्थ 'निविदा' है तो दूसरा अर्थ 'मुद्रा' है। ऐसी अर्थभिन्नता अनुवादक को मुश्किल में डाल सकती है।

6. शब्दावली की एकरूपता का अभाव :-

सभी बैंकों की शब्दावली समान नहीं है जिसके कारण उसमें एकरूपता का अभाव है। यह अभाव अनुवादक के लिए किसी संकट से कम नहीं होता। एकरूपता के अभाव के कई कारण हैं। बैंकिंग व्यवस्था, जिस रूप में आज विद्यमान है, मूलतः अंग्रेजों की देन है। बैंक का सारा साहित्य भी अंग्रेजी में ही है। अतः अंग्रेजी का असर उसपर रहेगा ही। धीरे-धीरे ब्रिटिश इंग्लिश का स्थान अमेरिकन इंग्लिश लेती जा रही है। इन बातों के कारण निर्माण हुआ एकरूपता का अभाव अनुवाद को पेचीदा बनाता है।

7. संक्षेपों का अनुवाद :-

बैंकिंग में संक्षेप अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इन्हें लिखना आसान होता है। ऐसे संक्षेपों के अनुवाद के लिए कौन-सी पद्धति उपयुक्त सिद्ध होगी, यह बेचारा अनुवादक समझ ही नहीं पाता। इनका लिप्यंतरण कर दे या खोलकर रख दे या हिंदी संक्षेप बना डाले।

इस विषय को लेकर अनुवादक कुछ भी निश्चित नहीं कर पाता। उदाहरणार्थ, नाबार्ड जैसे कुछ संक्षेप इतने प्रचलित हो चुके हैं कि लोग न इनका हिंदी में खोलकर किया गया अनुवाद मानेंगे, ना ही हिंदी संक्षेप को स्वीकारेंगे। इस स्थिति में यह एक कठिन समस्या बनकर रह जाती है।

19. वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद

स्वरूप एवं समस्याएँ

अनुवाद की परंपरा देश-विदेशों में लंबे अर्से से चली आई है। अब तक रचनात्मक साहित्य के अनुवाद काफी हुए हैं। आधुनिक युग विज्ञान का युग है। आज मनुष्य का जीवन विज्ञान और प्रौद्योगिकी से घिर गया है। विश्व में वैज्ञानिक प्रगति हो रही है। साथ ही विज्ञान विषयक साहित्य का सृजन भी हो रहा है। इसके फलस्वरूप विश्व में, खासकर विकासशील देशों में वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की आवश्यकता और माँग दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। दुख की बात है कि साहित्यिक सामग्री का जितना अनुवादकार्य हुआ है, उसकी तुलना में वैज्ञानिक, तकनीकी सामग्री का अनुवाद कम ही हुआ है। विश्व की गति में बने और टिके रहने के लिए, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रगति और विकास के लिए आज वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की नितांत आवश्यकता है।

वैज्ञानिक साहित्य तथ्य या कथ्य अथवा सूचनाप्रधान होता है। उसके अनुवाद में शैली का विशेष प्रश्न नहीं उठता। अभिव्यक्ति या शैली प्रधान साहित्य की तुलना में वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करना एक तरह से सरल होता है। उसमें अभिव्यक्तिशैली अथवा संरचना की जटिलता नहीं होती, जिससे अनुवाद कठिन या असंभव-सा लगे। उसकी शैली सरल-साफ, अभिधाप्रधान होती है। फिर भी याद रखना होगा कि विज्ञान की भाषा आम आदमी की भाषा से भिन्न होती है। वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद पूरा आसान भी नहीं है। उसके अनुवाद में भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः उसका अनुवाद अधिक सतर्कता और ध्यानपूर्वक करना जरूरी है।

समस्याएँ :-

*** पारिभाषिक शब्दावली :**

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में प्रमुख समस्या पारिभाषिक शब्दावली की है। परंपरागत विज्ञान तथा आधुनिक आविष्कारों और खोजों के संदर्भ में इंग्लैंड, अमेरिका, रूस, जर्मनी, फ्रान्स आदि विकसित देशों की भाषाएँ पारिभाषिक शब्दों की दृष्टि से संपन्न हैं। अतः इनके यहाँ वैज्ञानिक साहित्य और अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की समस्या नहीं है। परंतु अविकसित और भारत जैसे विकासशील देशों के सामने वैज्ञानिक अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों की समस्या है।

*** समाधान :**

जिस भाषा में वैज्ञानिक अनुवाद करना है, उसमें पर्याप्त पारिभाषिक शब्दावली होनी चाहिए। पारिभाषिक शब्दावली न होने पर (अ) अनुवाद का स्रोत भाषा के पारिभाषिक शब्द का अपनी भाषा की प्रकृति के अनुसार अनुकूलन कर लेना, जैसे, अकादमी, अंतरिम; (ब) अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली से शब्द लेना; (क) लिप्यंतरण करना; (ड) किसी अन्य नई या पुरानी भाषा से शब्द लेना चाहिए; (ई) अपनी भाषा के शब्दों, धातुओं, उपसर्गों, प्रत्ययों आदि के आधार पर नए शब्द बना लेने चाहिए।

*** विषय का ज्ञान :**

विषय का ज्ञान वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में एक महत्वपूर्ण बात है। कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, ललित निबंध जैसे अभिव्यक्ति-शैलीप्रधान या सृजनात्मक साहित्य में विषय-जैसी कोई विशेष बात नहीं होती। अनुवादक के लिए अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का उचित ज्ञान काफी होता है। परंतु वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में विषय का ज्ञान अनिवार्यतः आवश्यक है।

इस तरह वैज्ञानिक साहित्य के अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं के ज्ञान के साथ अनूद्य विषय का भी ज्ञान आवश्यक है। अन्यथा विपरीत अर्थ या अनर्थ संभव है। यदि ऐसा अनुवादक न मिले तो विषय और स्रोत भाषा के जानकार से सामग्री का अनुवाद कराकर, लक्ष्य भाषा के अच्छे जानकार से उस अनुवाद का पुनरीक्षण (वेटिंग) करा लेना चाहिए। इस तरह यह अनुवाद एक विषय के जानकार और दूसरे लक्ष्य भाषा के जानकार के सहयोग से अच्छा हो सकता है। इसे सहयोगित अनुवाद कहते हैं।

*** भाषा-शैली :**

भाषा-शैली इस अनुवाद की तीसरी महत्वपूर्ण बात है। इस अनुवाद में भाषा-शैली की स्पष्टता, पूर्णता, सटीकता, सरलता और असंदिग्धता की नितांत आवश्यकता है। अस्पष्टता वैज्ञानिक साहित्य में बड़ा दुर्गुण है। इसमें आनंद पाने के लिए कल्पना की उड़ान नहीं होती। अनुवाद इतना स्पष्ट और पूर्ण हो कि पाठक को मूल सामग्री में दी गई जानकारी अपरिवर्तित तथा पूर्णरूप से सहज प्राप्त हो सके। अनुवादक वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में अपनी रुचि, अपने व्यक्तित्व, साहित्य शैली को न आने दे तथा उसे आकर्षक अभिव्यंजना के लोभ में शब्दजाल से बोझिल न बना दे। उसकी भाषा अत्यंत सरल, स्पष्ट, असंदिग्ध तथा अभिधाप्रधान और संदिग्धता आ जाएगी। वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद गद्य में होना चाहिए।

*** शब्दचयन :**

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवादक को पारिभाषिक शब्दों का ही सहारा लेना पड़ता है अतः शब्दचयन की विशेष समस्या नहीं रहती। फिर भी आवश्यकता पड़ने पर उसे पूर्णतः एक निश्चित अर्थ देने वाले शब्द को ही चुनना चाहिए। पूरे अनुवाद में एक शब्द का एक ही अर्थ में प्रयोग करना चाहिए।

*** प्रतीकचिह्न :**

अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा-भाषी जिन प्रतीकचिह्नों - सिंबलों से परिचित हों उन्हीं का प्रयोग करना चाहिए। यदि किसी नए सिंबल का प्रयोग करना हो, तो यथास्थान टिप्पणी देकर उसे स्पष्ट कर देना चाहिए। यदि किसी अनुवादक को किसी पारिभाषिक शब्द या सिंबल का प्रयोग किसी नए अर्थ में करना पड़े तो यथास्थान उसका भी स्पष्ट संकेत करना आवश्यक है।

वास्तव में वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद कुछ अपवादों को छोड़कर पूर्ण अनुवाद होता है। वह अनुवाद मूल का सच्चा प्रतिनिधि होता है। उसमें कुछ छुटता नहीं, कुछ जुड़ता भी नहीं।

20. कंप्यूटर (यांत्रिक/मशीनी) अनुवाद

आवश्यकता एवं समस्याएँ

भाषा मानवी समाज की पहचान है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहना चाहता है। एक-दूसरे के विचारों से भाषा के माध्यम से परिचित होना चाहता है। भिन्न भाषी समुदाय एकत्रित आ गए। इससे अनुवाद के महत्व तथा आवश्यकता में वृद्धि होने लगी। व्यापारिक प्रतिस्पर्धा ने अनुवाद को काफी बढ़ावा दिया। अनुवाद करने की इस होड़ में मनुष्य की शक्ति सीमित हो गई। क्षमता से अधिक शारीरिक परिश्रम न कर पाने की स्थिति में अनुवाद एक दुष्कर कार्य प्रतीत होने लगा। नए आविष्कार-अनुसंधान से एक मशीन - कंप्यूटर - संगणक हाथ लगा। आधुनिक युग में अनुवाद के लिए कंप्यूटर का प्रयोग या कंप्यूटर की सहायता एक आवश्यक उपयुक्त बात बन गई है।

कंप्यूटर के कारण शारीरिक परिश्रम में निश्चित रूप से कमी आती है। कंप्यूटर से अनुवाद करते समय न केवल शरीर को बल्कि बुद्धि को भी राहत मिलती है। इसी लिए मशीनी/यांत्रिक अनुवाद को लेकर चाहे जितनी आपत्तियाँ उठाई गई हों, इसकी आवश्यकता को हम नकार नहीं सकते।

कंप्यूटर/मशीनी अनुवाद : समस्याएँ

1966 में प्रकाशित हुई एल्पैक रिपोर्ट ने मशीनी अनुवाद में आने वाली समस्याओं को उजागर कर इस प्रकार के अनुवाद पर प्रश्नचिह्न लगा दिया। एल्पैक ने यह सिद्ध कर दिया कि कंप्यूटर द्वारा उच्चस्तरीय अनुवाद संभव नहीं। मशीन द्वारा किए जाने वाले अनुवाद में लक्ष्य की संदिग्धता पाई जाती है। लक्ष्य की संदिग्धता कंप्यूटर अनुवाद की अहम समस्या है। इस संदर्भ में बड़ा अजीब समाधान खोजा गया। अनूद्य सामग्री के दो प्रकार बताए गए- 1) उच्चस्तरीय 2) सूचनापरक।

माना गया कि उच्चस्तरीय, रचनात्मक अनुवाद के लिए कंप्यूटर का प्रयोग सार्थक नहीं है। परंतु इस बात में कुछ हद तक सच्चाई अवश्य है कि सूचनापरक सामग्री के अनुवाद के लिए कंप्यूटर लाभदायक सिद्ध होता है।

रचनात्मक लेखन, संवेदनापरक होता है। इसमें निहितार्थों का पता लगाना कठिन कार्य है। रचनात्मक लेखन में एक शब्द के साथ कई अर्थ जुड़े हुए होते हैं जो सटीक अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक माने जाते हैं।

व्यावसायिक लेखन सरल होता है। उसके अनुवाद की प्रक्रिया भी सरल होती है, मात्रा भी अधिक होती है। रचनात्मक लेखन इसके ठीक विपरीत माना जाएगा। इसके अनुवाद की प्रक्रिया बड़ी ही कठिन होती है, सामग्री भी अल्पमात्रा में होती है। विश्वस्तर पर व्यावसायिक लेखन यदि नब्बे प्रतिशत किया जाता है तो रचनात्मक लेखन की मात्रा दस प्रतिशत मानकर चलनी होगी। स्वाभाविक है, अनूद्य सामग्री की उपयोगिता और आवश्यकता व्यावसायिक क्षेत्र में अधिक मानी जाती है। किसी रचनात्मक कृति का सही अनुवाद करने की सामर्थ्य कंप्यूटर

में नहीं होती। विषय का ज्ञान, भाषा का ज्ञान, अनुभव, भावात्मक अभिव्यक्ति की गहराई जान पाना आदि किसी भी कसौटी पर मशीनी/कंप्यूटर अनुवाद सही नहीं उतर सकता। पाठ पठन, पाठ विश्लेषण, बोधन, अंतरण, समायोजन आदि अनुवाद प्रक्रिया के अत्यंत महत्वपूर्ण सोपानों को कंप्यूटर समझ नहीं सकता।

सबसे मुख्य बात यह कि कंप्यूटर मानवी भाषा को समझ ही नहीं सकता। मानवी भाषा में कुछ विशेषताएँ ऐसी होती हैं, जिन्हें केवल मानव ही समझ सकता है।

अनेकार्थता :-

मानवी भाषा में अनेकार्थता हुआ करती है। एक ही शब्द या वाक्य में अनेक अर्थ निहित होते हैं। कई बार वाक्य अस्पष्ट भी होते हैं। इस स्थिति में मानव संदर्भों को ध्यान में रखकर शब्द या वाक्य में स्थित अर्थ का योग्य बोधन कर लेता है। कंप्यूटर के लिए यह संभव नहीं होता। कंप्यूटर की अपनी बुद्धि नहीं होती अतः उसके लिए स्वयं कोई निर्णय लेना असंभव कार्य है।

Boy hit the man with the hammer.

इस वाक्य में 'the man' और 'the hammer' को एकसाथ न रखने से अर्थ मिलता है 'लड़के ने हथौड़े से उस आदमी को मारा'। 'Boy hit' और 'the man with the hammer' को एक साथ रखने से यह बोध होता है कि 'जो आदमी हाथ में हथौड़ा लिए था, लड़के ने उसे मारा।'

इस प्रकार की अनेकार्थता को समझना जहाँ मनुष्य के लिए भी कठिन है, वहाँ कंप्यूटर द्वारा इसे सही समझने की संभावना बहुत ही कम होती है या फिर यूँ कह लीजिए कि कंप्यूटर द्वारा इसे समझना-समझाना बिलकुल असंभव-सा है।

पदीय अपरिशुद्धता :-

कई बार वाक्यों में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्द स्थल, काल, वातावरण के साथ भिन्न-भिन्न अर्थ प्रदान करते हैं। जहाँ मानव इसे समझने में कठिनाई महसूस करता है वहाँ कंप्यूटर से हम इसे समझने की उम्मीद भी नहीं कर सकते। Ram has been waiting in your house for a long time – राम आपके घर में काफी देर तक प्रतीक्षा करता रहा।

Ramesh left the job as he was not paid for a long time – लंबे अरसे (कई दिनों) तक वेतन न मिलने के कारण रमेश ने काम छोड़ दिया।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में 'for a long time' का प्रयोग हुआ है जो भिन्न-भिन्न अवधियाँ बताता है। कंप्यूटर में 'फीड' किए हुए शब्दों में से कौन-सा पर्याय योग्य है, यह कंप्यूटर नहीं समझ सकता।

लोप : अपूर्णता/संक्षेप :-

शब्दलोप या संक्षेप आजकल लेखकों की शैली ही बनती जा रही है। वे प्रायः पाठक वर्ग को अर्थपूर्ति के लिए अनुमान लगाने की अनुमति देकर अपनी बात संपूर्ण रूप से पूरी नहीं करते। जैसे "संजय कल होटल गया। जब वह बिल देने लगा तो पता चला कि पैसे कुछ कम हैं।" इसमें संजय के खाना मँगवाने, खाने, न खाने

का कहीं उल्लेख नहीं है लेकिन पाठक अनुमान लगा लेता है कि बिल खाना मँगवाने, खा चुकने पर ही अदा किया जाता है। यह अनुमान लगाने में मानव सक्षम है, कंप्यूटर नहीं।

व्याकरणिक अशुद्धता :-

वर्तनीगत त्रुटियाँ, शब्द व्यतिक्रम, अशुद्ध वाक्यरचना, सही-गलत चिह्न आदि के होते हुए भी आदमी पाठ को समझ ही लेता है। कंप्यूटर के लिए यह कठिन है।

प्रत्येक भाषा में ये बातें विद्यमान होती हैं। ये भाषा के गुण या दोष नहीं हैं, विशेषताएँ हैं। मनुष्य कभी अध्ययन के सहारे, तो कभी अभ्यास के साथ अर्थसंधान कर लेता है।

- प्रसंग (context) देखकर मनुष्य पाठ में स्थित अनेकार्थता को समझ सकता है।
- स्थिति (situation) देखकर अशुद्धता का निवारण किया जा सकता है।
- पाठ में मूल लेखक द्वारा अभिव्यक्त आकांक्षाएँ (expectations) जानकर ही अपूर्णता के दोष को हटाया जा सकता है।
- प्रतिरूप पहचान (recognition of pattern) के आधार पर व्याकरणिक अशुद्धता को मिटाया जा सकता है।

ये सारे उपाय या समाधान खोजने या करने की क्षमता मनुष्य में होती है। लेकिन एक कंप्यूटर से इतनी समझदारी की उम्मीद करना बेकार है।

यांत्रिक अनुवाद मुख्यतः दो रूपों में होता है। एक, आँकड़े संसाधन (Data processing) और दो, शब्द संसाधन (Word processing) इनमें से शब्द संसाधन तो अपने आप में स्पष्ट है। इसमें शब्द रूप ही कंप्यूटर के स्मृतिकोश 'मेमरी' में डाल दिए जाते हैं।

आँकड़े संसाधन अर्थात Data processing में दो प्रकार के कार्य शामिल होते हैं। प्रोग्राम की भाषा और प्रोग्राम चलाते समय उसमें भरे जाने वाले आँकड़े। प्रोग्राम की भाषा का सीधा अर्थ उसमें दिए जाने वाले आदेश हैं। ये आदेश अंग्रेजी में ही हुआ करते हैं। ये आदेश हिंदी भाषा में हों, इस दृष्टि से प्रयास किए जा रहे हैं।

अनुवादकार्य डिजिटल कंप्यूटर द्वारा किया जाता है। डिजिटल कंप्यूटर से संबंधित एक रिसर्च इंस्टिट्यूट के निदेशक आबासामा ने अंकीय कोड की विस्तृत योजना बनाई। प्रत्येक शब्द के लिए एकअंकीय कोड (रूप) बनाया। स्रोतभाषा की सामग्री पहले इस अंकीय कोड में रूपांतरित हो जाएगी और पुनःश्च लक्ष्यभाषा में परिवर्तित हो जाएगी। इसे आबासामा भाषा ही कहा जाने लगा। इस भाषा के धातु और व्याकरणिक इकाइयाँ भी अंकीय कोडों में ही होती हैं।

इस पद्धति के अनुसार एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरण या भाषांतरण करते समय स्रोतभाषा के शब्दों को पहले आबासामा भाषा के अंकीय कोडों में रूपांतरित कर दिया जाता है। तत्पश्चात उसका रूपांतर लक्ष्यभाषा में कर दिया जाता है। इस प्रकार अंकीय कोडों की सहायता से किया अनुवाद पसंद भी किया जा रहा है।

कंप्यूटर अनुवाद की सीमाएँ :-

संपूर्ण रूप से विकसित देशों में कंप्यूटर अनुवाद का कार्य अत्यधिक मात्रा में होता है। इन देशों में, इस क्षेत्र में विशेष रूप से अनुसंधान किए जा चुके हैं, किए जा रहे हैं। लेकिन इन देशों में भी मशीनी अनुवाद की एक सीमा रही है और इन देशों को भी इस सीमा को स्वीकारना पड़ा है। बड़े-बड़े विद्वानों के लाख प्रयासों के बावजूद कंप्यूटर मनुष्य का स्थान नहीं ले पाया है। पश्चिमी देशों ने कंप्यूटर को लेकर काफी खोज की है लेकिन फिर भी कंप्यूटर द्वारा होने वाली भूलों पर वे उपाय खोज नहीं पा रहे हैं। मशीन का मानवीकरण संभव नहीं हो पाया और भविष्य में संभव होने की संभावनाएँ बिल्कुल नहीं हैं।

सवाल जहाँ सीधी-सादी सूचनाओं का है या आँकड़ों के अंतरण का है, वहाँ कंप्यूटर बहुत बढ़िया काम करता है। लेकिन अनुवाद की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि पुनःसर्जना होती है। कई बार अनुवादक अपनी सृजन शक्ति का इतना सही प्रयोग करता है कि अनुवाद मूल से भी सुंदर जान पड़ता है। यह मानव ही कर सकता है। इसका कारण यह है कि मूल रचनाकार द्वारा प्रयुक्त शब्दों के अर्थ, अभिधार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यंग्यार्थ, सामाजिक पक्ष, सांस्कृतिक पक्ष, रूढ़ि, परंपराएँ, मुहावरे, कहावतें और संवेदना पक्ष आदि बातों को पकड़ पाने की क्षमता केवल मानव में ही होती है। अपने साथ एक नहीं, कई अर्थछटाएँ लेकर चलता शब्द कंप्यूटर समझ ही नहीं सकता। कंप्यूटर के स्मृतिकोश में इन सभी अर्थों को 'फीड' किया जा सकता है, लेकिन कई शब्दविकल्पों में से योग्य शब्दविकल्प का चयन कंप्यूटर कर ही नहीं सकता। अनुवाद में स्थित चयन की अहमियत अलग से समझाने की आवश्यकता नहीं है। बेहतरीन शब्द कंप्यूटर उपलब्ध करा सकता है लेकिन चयन मानवी दिमाग ही कर सकता है, मानवी दिमाग को ही करना होगा। कंप्यूटर के पास स्मृति है लेकिन सोच नहीं है। कंप्यूटर के पास मस्तिष्क नहीं है और यही सबसे बड़ी सीमा है।

21. मुहावरों का अनुवाद
स्वरूप एवं समस्याएँ

मुहावरा एक वाक्यांश होता है। उससे अभिधा अर्थात शब्दार्थ नहीं, बल्कि लक्षणार्थ या व्यंजनार्थ सूचित किया जाता है। मुहावरों के प्रयोग से साधारण वाक्य और भाषा में अधिक लालित्य आ जाता है। मुहावरों का अनुवाद एक महत्वपूर्ण समस्या है। मुहावरों के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली तथा व्यंजक होती है, अतः उस अभिव्यक्ति का दूसरी भाषा में उतना ही सफल अनुवाद करना असंभव नहीं परंतु कठिन बात अवश्य है।

अनुवाद करते समय सर्वप्रथम स्रोत भाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में उस मुहावरे के शब्द और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से समान मुहावरे की खोज की जानी चाहिए। दोनों भाषाओं में शब्द और अर्थ या भाव की समानता वाले मुहावरे मिल सकते हैं। इसके कई कारण हैं :

1. भाषा प्रभाव :

(अ) अंग्रेजी-हिंदी का परस्पर प्रभाव

1. अँग्रेजी - To be caught redhanded
   हिंदी - रँगे हाथों पकड़ा जाना
2. अँग्रेजी - Ups and downs of life
   हिंदी - जीवन के उतार-चढ़ाव
3. अँग्रेजी - Crocodile's tears
   हिंदी - मगरमच्छ के आँसू
4. अँग्रेजी - To Throw dust in to one's eyes
   हिंदी - किसी की आँखों में धूल झोंकना
5. अँग्रेजी - Black market
   हिंदी - काला बाजार

(आ) फारसी-हिंदी

1. फारसी - मार-ए-आस्तीन
   हिंदी - आस्तीन का साँप
2. फारसी - कमर बस्तन
   हिंदी - कमर बाँधना

3. फारसी - आब शुदन

हिंदी - पानी-पानी होना

2. समान स्त्रोत :

संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी से अनेक मुहावरे हिंदी, मराठी, बँगला, गुजराती आदि भाषाओं में आए हैं। समान स्त्रोत के कारण इन भाषाओं में समान अर्थ-भाव वाले मुहावरे मिल जाते हैं।

1. फारसी - अंगूर तुर्श शुदन।

हिंदी - अंगूर खट्टे होना।

मराठी - द्राक्षे आंबट होणे.

अँग्रेजी - Grapes are sour

2. अँग्रेजी - To build castle in the air

हिंदी - हवाई किले बनाना।

गुजराती - हवाई किल्ला बाँधवा

3. मराठी - डोळ्यात धूळ फेकणे

बँगला - चाखे धूलो दे ओया

हिंदी - आँखों में धूल झोंकना

शब्द और अर्थ की समानता वाले अन्य उदाहरण :

1. हिंदी - गुस्सा पी जाना

गुजराती - गुस्सा पी जवो

2. मराठी - बारा घाटांचे पाणी पिणे

हिंदी - बारह घाट का पानी पीना

3. हिंदी - कोल्हू का बैल

मराठी - घाण्याचा बैल

4. हिंदी - कुत्ते की मौत मरना

गुजराती - कूतराने मोते मरवुं

5. मराठी - तोंड काळे करणे

हिंदी - मुँह काला करना

समस्या : एक से अधिक मुहावरे; सावधानी : भाव और शब्द की समानता का चुनाव

अनुवाद करते समय समान मुहावरों की खोज करके चुनाव करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। कभी-कभी स्रोत भाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में एक से अधिक मुहावरे मिलते हैं- (1) भाव की दृष्टि से लगभग समान, (2) भाव की दृष्टि से पूर्णतः समान, (3) भाव और शब्द दोनों दृष्टियों से पूर्णतः समान। ऐसी स्थिति में अनुवाद के लिए तीसरे प्रकार का मुहावरा ही सर्वोत्तम है। उदाहरणार्थ, हिंदी मुहावरा 'गुस्सा पी जाना' के लिए गुजराती में दो मुहावरे मिलते हैं - (1) क्रोध गळी जवो, (2) गुस्सा पी जवो। इनमें भाव और शब्द दोनों ही दृष्टियों से दूसरा मुहावरा अधिक योग्य है। दूसरा उदाहरण :- 'Ramesh was rich man and lived like a lord' अनुवाद - 'रमेश के पास चार पैसे थे / रमेश अमीर था और बादशाह/राजा/शहंशाह की तरह या शान-शौकत से / बड़े ठाट-बाट से रहता था।' इसमें संदर्भ के अनुसार किसी एक शब्द या वाक्यांश को चुनना चाहिए। इसमें और एक सावधानी बरतनी होगी कि केवल शब्द साम्य नहीं, भाव साम्य अधिक अपेक्षित है।

समस्या : शब्द-भाव साम्य, परंतु अर्थभिन्नता; समाधान : अपेक्षित अर्थ का चुनाव

कभी-कभी समान शब्दावली और भाव में कुछ समानता होने पर भी दो भाषाओं के मुहावरे अर्थ में पूर्णतः एक नहीं होते। अनुवादक को ऐसी समानता वाले मुहावरों को छोड़कर अन्य अपेक्षित अर्थ वाले मुहावरों को चुनना चाहिए। उदाहरणार्थ, हिंदी - 'चारपाई पकड़ना', मराठी - 'अंथरूणास खिळणे' इन दो मुहावरों में पर्याप्त साम्य है, परंतु थोड़ी अर्थभिन्नता भी है। 'चारपाई पकड़ना' मुहावरे का प्रयोग थोड़ा बीमार होने पर भी हो सकता है, परंतु 'अंथरूणास खिळणे' का प्रयोग अधिक बीमार होने पर किया जाता है। अँग्रेजी 'To build castle in the air' का हिंदी में 'मन के लड्डू खाना' अनुवाद भी हो सकता है, लेकिन 'हवाई किले बनाना' अधिक अच्छा अनुवाद होगा।

समस्या : पूर्ण समान मुहावरे न मिलना; समाधान : लगभग समान का चुनाव

अनुवाद करते समय अगर आर्थिक और शाब्दिक दोनों ही दृष्टियों से समान मुहावरे न मिलें, तो अर्थ की दृष्टि से समान और शब्द की दृष्टि से 'लगभग समान' मुहावरों की खोज करनी चाहिए। उदाहरणार्थ -

1. अँग्रेजी - Add fuel to the flames

   हिंदी - आग में घी डालना

2. मराठी - कंठ दाटून येणे

   हिंदी - गला भर आना

3. मराठी - तळहातावर शिर घेणे

   हिंदी - जान हथेली पर लेना

4. हिंदी - आँखों में धूल झोंकना

   गुजराती - आंखमां धूल नांखवी

समस्या : शाब्दिक समानता वाले मुहावरे न मिलना; समाधान : अर्थपूर्ण समानता का चुनाव

अनुवादक को अगर शाब्दिक समानता वाले मुहावरे न मिलें, तो उसे शाब्दिक समानता को छोड़कर, केवल आर्थिक समानता पर ध्यान देना चाहिए। जैसे, हिंदी के 'छठी का दूध याद आना' मुहावरे के लिए पंजाबी में शाब्दिक समानता वाला मुहावरा नहीं है, परंतु पंजाबी में उसी के समान अर्थ ध्वनित करने वाला मुहावरा है 'नान्नी याद आणा', पंजाबी में अनुवाद करते समय इसी समान अर्थ वाले मुहावरे को चुनना पड़ेगा। परंतु पंजाबी से हिंदी में अनुवाद करते समय 'छठी का दूध याद आना' की अपेक्षा 'नानी याद आना' मुहावरे का प्रयोग शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियों से समान होने से अधिक उचित है।

आर्थिक साम्य वाले मुहावरों के कुछ उदाहरण -

1. हिंदी - ऊल-जलूल बातें करना

   मराठी - अघळ-पघळ बोलणे

2. हिंदी - मूसलाधार वर्षा होना

   अँग्रेजी - To rain cats and dogs.

3. अँग्रेजी - Cock and bull story.

   हिंदी - बेसिर-पैर की बात

4. हिंदी - भगीरथ प्रयत्न

   अँग्रेजी - Herculean effort

5. हिंदी - काला अक्षर भैंस बराबर होना

   मराठी - अक्षर शत्रु असणे

6. हिंदी - ऊँट के मुँह में जीरा

   अँग्रेजी - A drop in the ocean.

समस्या : समान शब्द और अर्थ वाले मुहावरे न मिलना; समाधान : शब्दानुवाद करना

यदि स्रोत और लक्ष्य भाषा में शाब्दिक और आर्थिक भाव की समानता वाले मुहावरे न मिलें तो अनुवादक को मूल मुहावरे का शाब्दिक अनुवाद करना चाहिए। परंतु यह शब्दानुवाद स्रोत भाषा के उसी मूल के भाव या अर्थ को अवश्य व्यक्त करे। जैसे,

अँग्रेजी - 'To put the cart before the horse'. का हिंदी अनुवाद 'घोड़े के आगे गाड़ी रखना' के रूप में किया जा सकता है। 'He does not know even the a b c of the subject' - 'वह इस विषय का अ ब क या क ख ग तक नहीं जानता।' 'A fish out of water' - 'जल के बाहर मछली'। ये शब्दानुवाद होकर भी मूल मुहावरे के अर्थ-भाव को व्यक्त करते हैं।

परंतु अँग्रेजी 'To beat about the bush' का हिंदी अनुवाद 'झाड़ी के आस-पास पीटना', 'To find oneself in hot water' का 'अपने को गर्म पानी में पाना'; तथा हिंदी 'नौ-दो ग्यारह होना' का अँग्रेजी में 'Nine and two make eleven', 'पानी-पानी होना' का 'To become water-water' अनुवाद गलत और हास्यास्पद साबित होगा।

इस तरह किसी मुहावरे का शाब्दिक अनुवाद करने से पहले अनुवादक को इस बात पर अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए कि वह अनुवाद अनुचित और हास्यास्पद तो नहीं होगा और वह स्रोत भाषा के मूल मुहावरे का ही अर्थ या भाव दे सकेगा।

समस्या : न शब्द की, न अर्थ की समानता मिलना, न ही योग्य शब्दानुवाद होना; समाधान : भावानुवाद/ नव निर्माण

(अ) भावानुवाद : यदि अनुवाद करते समय शब्द और अर्थ अथवा केवल अर्थ की समानता वाले मुहावरे न मिले तथा मुहावरे शब्दानुवाद के भी योग्य न हो, तो अनुवादक मुहावरे में अनुवाद न करके, सीधी-सादी भाषा में उसका भावार्थ व्यक्त कर दे; उसका भावानुवाद कर दे। यही मार्ग अधिक सरल और निरापद है। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी का मुहावरा 'dead like a dodo' 'डोडो' एक प्राचीन जंतु है, जो अब विलुप्त हो चुका है। इस मुहावरे का अर्थ है - 'ऐसा मरा हुआ कि फिर जीने की संभावना न हो।' हिंदी में इसके समान कोई मुहावरा नहीं है। 'डोडो की तरह मृत' शब्दानुवाद हिंदी में अर्थ स्पष्ट न होने से चल नहीं सकता। ऐसी स्थिति में अनुवाद मुहावरे में न करके सीधे शब्दों में करना पड़ता है। इसे सीधे शब्दों में 'बिलकुल ही मर चुका' कहना पड़ेगा। इस प्रकार के भावानुवाद के कुछ उदाहरण :-

1. 'To beat about the bush' - विषय से हटकर बोलना या लिखना अथवा मुख्य प्रश्न या बात पर न आना।

2. 'To beat black and Blue' - बुरी तरह मारना या खूब मारना-पीटना

3. 'To go to dogs' - बर्बाद हो जाना

4. 'Tooth and nail' - जी-जान से या पूरी शक्ति से

5. 'To give blank cheque' - खुली छूट देना

6. 'To become shameless' - आँख का पानी उतर जाना

7. 'To die instantly' - पानी न माँगना

8. 'To give a very cordial welcome' - आँखें बिछाना

9. मराठी - 'उंबरास फूल येणे' : हिंदी - असंभव कार्य करना

10. मराठी 'अक्काबाईचा फेरा येणे' : हिंदी - बहुत बुरी स्थिति आना।

(आ) सर्जन : नवनिर्माण

अनुवाद एक सर्जक कार्य है। स्रोत और लक्ष्य भाषा में समानता वाले मुहावरे न मिलने पर अनुवाद में किसी मुहावरे के स्थान पर सीधे-सीधे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, परंतु इससे सर्जकता, निर्मिति को हानि पहुँचती है और वह अनुवाद प्रायः मात्र कामचलाऊ हो जाता है। मूल की अपेक्षित अर्थवत्ता अपनी ध्वन्यात्मकता के साथ लक्ष्य भाषा में नहीं उतर पाती। इसलिए कुशल अनुवादक अगर संभव हो तो स्रोत भाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में व्यंजक, सटीक तथा लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल किसी नए मुहावरे की रचना कर ले। जैसे, हिंदी के 'जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना' के लिए अँग्रेजी में समतुल्य मुहावरा न होने से सीधे-सादे शब्दों में अभिव्यक्ति करने की अपेक्षा 'To blow off a roof that provides shelter' अथवा 'To cut off the hand that feeds'; तथा 'पानी में रहकर मगर से बैर करना' के लिए 'To live in Rome and strife with Pope'. इस प्रकार का सर्जन या नवनिर्माण करना अधिक योग्य है।

समस्या : मुहावरों को न पहचान पाना; समाधान : अर्थ ज्ञान पाना

कभी-कभी अनुवादक अल्पज्ञान या अज्ञान के कारण स्रोत भाषा के मुहावरे को पहचान नहीं पाता, अतः वह उसका शब्दानुवाद कर देता है। जैसे, 'कल को जिम्मेदारी कौन उठाएगा?' में 'कल को' मुहावरेदार प्रयोग है। उसका अर्थ है 'भविष्य में'। इसका ज्ञान न होने से उसका 'tomorrow' शाब्दिक अनुवाद करना गलत होगा। मुहावरों के अन्य उदाहरण - 'bold faced' - का अर्थ 'निर्लज्ज/बेशर्म' है; 'निर्भीक मुख, धृष्टमुखी या ढीठ' नहीं। 'blue blood' का अर्थ 'कुलीन/अभिजात' है; 'नीले खूनवाला' नहीं, 'blue book' - का अर्थ है- 'अधिकृत रिपोर्ट'; 'नीली पुस्तक' नहीं।

समस्या : शब्दशः/शब्द-शब्द का अनुवाद; समाधान : पूरी इकाई का अनुवाद : मुहावरा एक इकाई

पूरे मुहावरे को एक भाषिक इकाई मानकर ही अनुवाद करना चाहिए। उसके शब्द-शब्द को अलग करके शब्दानुवाद करना निरर्थक, हास्यास्पद और गलत होगा। जैसे, 'Ram fell in Love with Seeta' 'राम गिरा प्रेम में साथ सीता के' या 'राम सीता के साथ प्रेम में गिरा।' उचित अनुवाद नहीं है। 'fell in love with' एक भाषिक इकाई है, उसका शब्द-शब्द नहीं, पूरे वाक्यांश को लेकर अनुवाद करना चाहिए। उसी तरह 'मेरा सर चक्कर खा रहा है।' में 'सर चक्कर खाना' को एक भाषिक इकाई मानकर 'To feel giddy' अनुवाद होना चाहिए : न कि एक-एक शब्द का शाब्दिक अनुवाद 'My head is eating circle'.

वास्तव में मुहावरा वाक्यांश है, एक भाषिक इकाई है। वह अभिव्यक्ति में वाक्य में दूध-पानी की तरह घुला-मिला रहता है। उसे पहचानना अपेक्षाकृत कठिन होता है। इसलिए उसके अनुवाद में कठिनाई आ जाती है।

कुशल अनुवादक उपर्युक्त सारी कठिनाइयों की, सभी समस्याओं की ओर ध्यान देकर उचित हल ढूँढ़कर सफल अनुवादक बन सकता है।

22. कहावतों या लोकोक्तियों का अनुवाद स्वरूप एवं समस्याएँ

कहावत याने लोगों के कहने में, बोलचाल में बहुत आने वाला ऐसा चमत्कारपूर्ण वाक्य, जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात संक्षेप में कही गई हो। इसे लोकोक्ति भी कहते हैं।

लोक याने समाज में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति या कहावत कहते हैं। लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या प्रसंग या घटना होती है। महापुरुषों, कवियों और अनुभवी लोगों के गहन अनुभव के वचनों के आधार पर कहावतें या लोकोक्तियाँ बनती हैं। लोकोक्ति प्रायः पूर्ण वाक्य होती है। उसका विशेष अर्थ होता है। उसमें गागर में सागर जैसा भाव रहता है। उसके प्रयोग से भाषा प्रभावशाली, आकर्षक और प्राणवान बन जाती है। कहावतें-लोकोक्तियाँ अभिव्यंजना की दृष्टि से जितनी ही सशक्त होती हैं, कुछ थोड़े अपवादों को छोड़कर, अनुवाद करने की दृष्टि से उतनी ही अधिक कठिन होती हैं।

समस्याएँ :-

*** लोगों से, परंपराओं से अपरिचय :-** अनुवादक लक्ष्य भाषा के सामान्य शब्दों पर आसानी से अधिकार पा सकता है, परंतु लक्ष्य भाषा की लोकोक्तियों पर अधिकार पाना आसान नहीं है। लक्ष्य भाषा भाषी लोगों के जीवन को पूरी तरह बिना जिए, उनकी परंपराओं से बिना परिचित हुए, उनकी अनेक लोकोक्तियों को ठीक से समझा नहीं जा सकता। बिना इस ज्ञान के सफल अनुवाद कठिन है।

*** कहावत या लोकोक्ति कोश का अभाव :-** अनुवाद के लिए द्विभाषा शब्द कोश तो काफी मिल जाते हैं, परंतु एक भाषा से दूसरी भाषा के लोकोक्ति या कहावत कोश नहीं के बराबर हैं। अतः लोकोक्तियों के अनुवाद में बड़ी कठिनाई आ जाती है।

दूसरी बात, द्विभाषिक लोकोक्ति कोश बनाना भी कोई आसान काम नहीं है। समानार्थी शब्द मिलते हैं अतः शब्द कोश बनाना सरल है; परंतु दो भाषाओं की लोकोक्तियों में समानार्थी लोकोक्तियाँ बहुत ही कम मिलेंगी। इस स्थिति में केवल शब्दों के माध्यम से किसी दूसरी भाषा की लोकोक्तियों को समझा पाना बहुत कठिन है। 'खाली दिमाग शैतान का घर' या 'आप भला तो जग भला' जैसी लोकोक्तियों को सरलता से समझाया जा सकता है, परंतु "करवा कुम्हार का, घी जजमान का, पंडित बोले स्वाहा" स्तर की लोकोक्तियों का तो केवल भाव ही समझाया जा सकता है। इन्हें अपनी पूरी अर्थवत्ता के साथ समझाना कठिन है। सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की व्यंजक-लाक्षणिक अर्थ की लोकोक्तियों को शब्दों के माध्यम से, पूरे अर्थ के साथ समझाना, उनका सही अनुवाद करना कठिन है। इस तरह की लोकोक्तियों को उस समाज के जीवन में घुल-मिलकर समझा जाता है और फिर उनका अनुवाद संभव हो पाता है।

लोकोक्तियों का प्रसंग-विशेष में सूचित अर्थ, केवल सामान्य शब्दों द्वारा व्यक्त होने वाले भाव या विचार से बहुत अधिक गहरा होता है, और वह गहराई लोकोक्ति में ही निहित होती है। 'Grapes are sour' का हिंदी अनुवाद 'अंगूर खट्टे हैं' में स्रोत भाषा की लोकोक्ति का अर्थबिंब पूर्ण रूप से लक्ष्य भाषा में उतर आता है; परंतु

Rome was not built in a day को 'उकताए गूलर नहीं पकती' द्वारा पूरी तरह व्यक्त नहीं किया जा सकता। इन दोनों का अर्थबिंब बहुत भिन्न है। 'Near the church farther from heaven' और 'चिराग तले अँधेरा' यद्यपि समान समझी जाती हैं और दोनों में व्यक्त विचार भी एक सीमा तक समान हैं, किंतु दोनों का संपूर्ण अर्थ और प्रभाव एक जैसा नहीं है।

अनुवाद करते समय अनुवादक को सबसे पहले स्रोत भाषा की लोकोक्ति के लिए लक्ष्य भाषा की अर्थपूर्ण समान लोकोक्ति खोजनी चाहिए। भाषाओं के आपसी प्रभाव या समान स्रोत के कारण समान लोकोक्तियाँ मिल जाती हैं।

फारसी प्रभाव : मूल रूप में ग्रहण की गई लोकोक्तियाँ –

1. माले मुफ्त दिले बेरहम।
2. देर आयद दुरुस्त आयद।
3. तंदुरुस्ती हजार नेमत।

फारसी-भारतीय भाषाओं में समान रूप में प्राप्त –

1. फारसी - कोह कंदन व मूश बरावुर्दन

   हिंदी - खोदा पहाड़, निकली चुहिया।

   मराठी - डोंगर पोखरून उंदीर काढणे
2. फारसी - नीम हकीम खतर-ए-जान।

   उर्दू - नीम हकीम खतर-ए-जान।

   कश्मीरी - नीम हकीम गव खतरे-ए-जान।

   हिंदी - नीम हकीम खतरे जान।
3. फारसी - सदा-ए-मुल्ला ता मस्जिद।

   हिंदी - मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।

   बँगला - मोलार दौड़ मस्जिद तक।

अंग्रेजी प्रभाव –

1. अंग्रेजी - An empty mind is devil's workshop

   हिंदी - खाली दिमाग शैतान का घर
2. अंग्रेजी - 'Necessity is the mother of invention'

   हिंदी - आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

3. अंग्रेजी - 'All is well that ends well'

हिंदी - अंत भला सो भला।

संस्कृत प्रभाव –

भारतीय भाषाओं में मूल रूप में ग्रहण की गई लोकोक्तियाँ :-

1. अल्पविद्या भयंकरी
2. यथा राजा तथा प्रजा

समान लोकोक्तियाँ –

1. संस्कृत - अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्

हिंदी - अधजल गगरी छलकत जाए।

कश्मीरी - छरअय मअट छि वजान।

कन्नड - तुंबिद कोड़ तुक्कुवदिल्ल।

तेलुगू - निंड कुंड तोणकदु।

अंग्रेजी - 'Empty vessel makes much noise'

2. संस्कृत - अति दर्पे हता लंका।

असमी - अति दर्पे हत लंका।

हिंदी - अति घमंड लंका नासे।

भारतीय भाषाएँ –

1. हिंदी - छोटा मुँह बड़ी बात।

बँगला - छोटे मुँह बड़ी बात।

मराठी - लहान तोंडी मोठा घास।

2. हिंदी - अपना हाथ जगन्नाथ।

असमी - आपोन हाथ जगन्नाथ।

3. हिंदी - ऊँट के मुँह में जीरा।

उडिया - उट के मुँह रे जीरा।

विभिन्न भाषाओं में लोकोक्तियों की समानता –

1. संस्कृत - अति परिचयात् अवज्ञा

अंग्रेजी - Familiarity breeds contempt

2. हिंदी - आप भला तो जग भला

अंग्रेजी - Good mind good find

3. अंग्रेजी - pride goeth before a fall

हिंदी - घमंडी का सिर नीचा

मराठी - गर्वाचे घर खाली

4. बँगला - कोथाय राजा भोज कोथाय गंगाराम तेली

हिंदी - कहाँ राजा भोज कहाँ गँगुवा तेली

मराठी - कोठे राजा भोज, कोठे गंगू तेली

(कोठे इंद्राचा ऐरावत, कोठे शामभटाची तट्टाणी)

5. हिंदी - सुनिए सबकी करिए मन की।

असमी - परंपरा शुना, किंतु निजर मते करा।

मराठी - ऐकाव जनाचे, करावे मनाचे

6. हिंदी - नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

असमी - नाचिब न जाने चोताल बेंका

बँगला - नाच न जान ले उठान बाँका

मराठी - नाचता येईना अंगण वाकडे

इस तरह एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय इस प्रकार की समान लोकोक्तियों को ढूँढ़ना चाहिए।

◆ समस्या : शाब्दिक समानता, अर्थ में अंतर –

कभी-कभी शाब्दिक समानता होने पर भी लोकोक्तियों के अर्थ में अंतर होता है। उदाहरणार्थ, निम्नलिखित लोकोक्तियाँ देखिए–

भोजपुरी - ढेर गिहथिन माँठा पातर (अनेक गृहस्थिनें मट्ठा बनाएँगी तो वह पतला हो जाता है।)

वास्तविक अर्थ है 'ढेर जोगी मठ का उजाड़'।

तेलुगू - मदि एक्कुवैते मज्जिग पलुचन (आदमी ज्यादा हों, तो मट्ठा पतला होता है।)

इसका वास्तविक अर्थ है 'तीन बुलाए तेरह आए दें दाल में पानी'।

इन दोनों लोकोक्तियों में ऊपरी स्तर पर पर्याप्त समानता लगती है, परंतु अर्थ की दृष्टि से दोनों भिन्न हैं। अतः अनुवादक को इन ऊपरी समानताओं से सजग रहना चाहिए।

◆ समस्या : समान लोकोक्ति न मिलना

कभी-कभी समान लोकोक्ति न मिलने पर अनुवादक को उसी भाव की सूचक दूसरी लोकोक्ति चुननी पड़ती है। इस स्थिति में केवल भाव की समानता वाली लोकोक्ति की अपेक्षा 'भाव और शब्द' दोनों की समानता वाली लोकोक्ति अनुवाद के लिए चुननी चाहिए। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी लोकोक्ति 'Empty vessel makes much noise' के लिए अनुवादक समान भाव देखकर हिंदी में 'थोथा चना बाजे घना' का प्रयोग कर सकता है, परंतु 'भाव और शब्द' दोनों की समानता वाली लोकोक्ति 'अधजल गगरी छलकत जाए' अधिक उपयुक्त होगी। इसी प्रकार संस्कृत की 'अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्' के लिए केवल भाव साम्यवाली अंग्रेजी की 'Shallow brooks are more noisy' की अपेक्षा 'Empty vessel makes much noise' लोकोक्ति 'भाव और शब्द' की समानता के कारण अधिक उपयुक्त होगी।

समस्या : 'शब्द और भाव' साम्य न मिलना

शब्द और भाव दोनों की समानता वाली लोकोक्ति न मिलने पर अनुवादक कम-से-कम एक समान भाव वाली लोकोक्ति को चुने। यद्यपि इन लोकोक्तियों का अर्थबिंब स्रोत और लक्ष्य भाषा में सर्वदा एक-सा नहीं होता, परंतु दूसरा उपयुक्त पर्याय नहीं है। विभिन्न भाषाओं में ऐसी लोकोक्तियाँ मिल जाती हैं। जैसे –

1. अंग्रेजी - A bad carpenter quarrels with his tools.
   हिंदी - नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
2. अंग्रेजी - Killing two birds with one stone.
   हिंदी - एक पंथ दो काज
3. अंग्रेजी - Out of sight out of mind.
   हिंदी - आँख ओट पहाड़ ओट
4. अंग्रेजी - let us see which way the wind blow?
   हिंदी - देखें किस करवट ऊँट बैठता है?
5. हिंदी - नौ नकद न तेरह उधार
   अंग्रेजी - A bird in hand is better than two in the bush.
6. हिंदी - आँख का अंधा नाम नयनसुख
   गुजराती - पेटमां पावलु पाणी नथि ने नाम दरियावरखाँ
   मराठी - नाव सोनुबाई हाती कथलाचा वाळा
   असमी - चकुटो फुटा, नाम है छै पद्मलोचन
   तेलुगू - कूचुंटे लेव लेडु पेरु बलराममुडु (बैठ जाने पर उठ नहीं सकता, परंतु नाम है बलराम)

7. अंग्रेजी - A drop in the Ocean.

हिंदी - ऊँट के मुँह में जीरा

असमी - एक थाली आंजात एटा जालुक । (एक हंडा कढ़ी में एक दाना मिर्च)

8. अंग्रेजी - Union is Strength.

हिंदी - एक और एक ग्यारह होते हैं।

मराठी - एकी हेच बळ

9. अंग्रेजी - Cut your coat according to your cloth.

कन्नड - हासिगे इददष्टे कालु चाचु

हिंदी - तेतो पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर

मराठी - अंथरूण पाहून पाय पसरणे

समस्या : एक से अधिक अभिव्यक्तियाँ

कभी-कभी स्रोत भाषा की किसी एक लोकोक्ति के भाव की लक्ष्य भाषा में एक से अधिक अभिव्यक्तियाँ होती हैं। ऐसी स्थिति में अनुवादक को सतर्कता से चयन करना चाहिए। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी के Bringing coal to New Castle लिए हिंदी में दो अभिव्यक्तियाँ मिलती हैं –

1. 'उलटी गंगा बहाना' और

2. 'उलटे बाँस बरेली को'

इनमें अर्थ भाव और वातावरण की दृष्टि से दूसरी लोकोक्ति अधिक उपयुक्त होगी। अन्य उदाहरण :

अंग्रेजी - 'Familiarity breeds contempt'

हिंदी - 1. 'घर की मुर्गी दाल बराबर'

2. 'घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध।'

दूसरी अधिक उपयुक्त है क्योंकि उसमें प्रयुक्त 'जोगड़ा' शब्द 'Contempt' के अधिक निकट है।

समस्या : न शब्द साम्य, न भाव साम्य

कभी-कभी स्रोत भाषा की किसी लोकोक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में शब्द और भाव की समानता वाली और केवल भाव की भी समानता वाली लोकोक्ति नहीं मिलती। ऐसी स्थिति में तीन उपाय हैं -

(क) लोकोक्ति का शब्दानुवाद करना,

(ख) भावानुवाद करना, अथवा

(ग) उस लोकोक्ति के भाव को व्यक्त करने वाली कोई नई लोकोक्ति गढ़ना, नव निर्माण, सर्जन।

(क) शब्दानुवाद अथवा लोकोक्तिवत् अनुवाद :

1. मराठी - 'जो चढ़ेल तोच पड़ेल' के लिए हिंदी में समान अर्थ वाली लोकोक्ति नहीं है।
   अतः ऐसा शब्दानुवाद हो जो लोकोक्ति जैसा लगे। जैसे, 'जो चढ़ता है सो गिरता है।'
2. असमी - 'अजात गछर बिजात फल' (जो पेड़ अच्छी जाति का न होगा, उसका फल भी बुरा होगा।)
   लोकोक्ति जैसा हिंदी अनुवाद – 'जैसा पेड़, वैसा फल।'
3. असमी - थान हराले मान हटाय
   हिंदी - स्थान से गिरा, मान से गिरा
4. अंग्रेजी - Do evil and look for like
   हिंदी - कर बुरा, पा बुरा।
5. फारसी - अज दीदा दूर, अज दिल दूर।
   हिंदी - आँख से दूर, दिल से दूर।
6. अंग्रेजी - All that glitters is not gold.
   हिंदी - हर चमकली चीज नहीं होती सोना।
7. अंग्रेजी - The coin most current is flattery
   हिंदी - खुशामद सबसे चलता सिक्का।

(ख) भावानुवाद :

लोकोक्ति का उपयुक्त शब्दानुवाद न होने पर अनुवादक को भावानुवाद करना चाहिए। अधिकांश लोकोक्तियों के संबंध में यही रास्ता अपनाना पड़ता है। अनुवादक भावानुवाद को यथासंभव गद्यात्मक शब्दावली में न रखकर लोकोक्ति के रूप में रख सके तो अधिक उपयुक्त होगा। कुछ उदाहरण –

1. संस्कृत - लोभः पापस्य कारणम्।
   हिंदी - शब्दानुवादः लोभ पाप का कारण है।
   लोकोक्तिवत् भावानुवाद : लोभ पाप का बाप
2. अंग्रेजी - Diet cures more than the doctors.
   हिंदी - पथ्य सबसे बड़ा डॉक्टर!
3. अंग्रेजी - Adversity flatters no man.
   हिंदी - आफत आई, दोस्त गए।
4. अंग्रेजी - Beads along the neck and the devil in the heart.
   हिंदी - गले में माला, दिल में काला।

5. अंग्रेजी - Business is the salt of life

हिंदी - काम, जीवन की जान।

(ग) सर्जन : नव निर्माण :

अनुवादक को जब कोई अन्य मार्ग बिलकुल ही नहीं मिलता, तब नव निर्मिति की पद्धति को अपनाना चाहिए। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी की लोकोक्ति – 'Blood is thicker than water' का हिंदी अनुवाद 'खून पानी से गाढ़ा होता है।' स्रोत भाषा का अर्थबिंब उभारने में असमर्थ है। अतः नई लोकोक्ति की रचना 'अपने अपने ही, पराए पराए'।

अंग्रेजी की 'close sits my shirt, but closer my skin', 'Hope is a good breakfast, but is a bad super'; तथा हिंदी की 'दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते।', 'तीन कनौजिया तेरह चूल्हे' आदि अनेक लोकोक्तियों के अनुवाद में अनुवादक को इस नव निर्माण का रास्ता अपनाना पड़ेगा।

समस्या : अननूद्य (अनुवाद के लिए कठिन) सामग्री :

प्रत्येक भाषा में कुछ लोकोक्तियाँ ऐसी होती हैं जिनकी व्यंजना, चुटीलापन आदि का ठीक बोधगम्य और स्पष्ट अनुवाद प्रायः संभव नहीं होता। इस स्थिति में अनुवाद को केवल विस्तार से, अनूद्य सामग्री के मू ल पाठ में पाद टिप्पणी में अथवा परिशिष्ट में समझाया जा सकता है। उदाहरणार्थ, हिंदी की-

1. 'आर्द्रा चौथ, मघा पंचक' लोकोक्ति।

इसे टिप्पणी के रूप में यों समझाना चाहिए - (आर्द्रा नक्षत्र बरसता है, तो 'आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, और आश्लेषा' ये चारों नक्षत्र बरसते हैं। यदि मघा नक्षत्र बरसता है तो 'मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा' ये पाँचों नक्षत्र बरसते हैं।')

2. 'सिंह गरजे, हथिया लरजे' –

(सिंह नक्षत्र में गरजने से हस्त से वर्षा धीमी होती है।)

3. 'मघा, भूमि अघा' –

(मघा नक्षत्र की वृष्टि से पृथ्वी अघा जाती है।)

हिंदी में खेत, मौसम, शकुन तथा जाति संबंधी ऐसी अनेक लोकोक्तियाँ हैं। अर्थग्रहण के लिए इन्हें टिप्पणियों के साथ स्पष्ट करके समझाना पड़ेगा।

इस तरह लोकोक्तियों के अनुवाद में आने वाली समस्याओं को हल करते हुए सफल अनुवाद के लिए अनुवादक को पहले शब्द और अर्थ की दृष्टि से समान लोकोक्ति को खोजना, न मिले तो फिर भाव की दृष्टि से समान लोकोक्ति को खोजना, ऐसी लोकोक्ति प्राप्त न होने पर शब्दानुवाद अथवा भावानुवाद से काम लेना, और इन पद्धतियों से भी काम नहीं बनता हो तो स्वयं नई लोकोक्ति का सर्जन करना तथा प्रसंग और स्थिति के अनुसार अनुवाद के साथ सार्थक टिप्पणी जोड़ना आदि पद्धतियों को अपनाना चाहिए।

23. अलंकारों का अनुवाद
स्वरूप एवं समस्याएँ

अलंकार का सीधा अर्थ है – आभूषण या गहना । सौंदर्य में निखार लाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान होता है। अलंकार भाषा के गहने ही होते हैं। साधारण भाषा अलंकारों के कारण विशेष सुंदर प्रतीत होती है और मूल रूप से सुंदरता के साथ अभिव्यक्त बात में तो सोने में सुगंध आ जाती है।

सच है कि अलंकारों के कारण भाषा में निखार आता है परंतु अलंकारों से निखरी हुई भाषा का अनुवाद किसी भी अनुवादक के लिए समस्या बन जाता है।

अलंकार मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं –

1. शब्दालंकार 2 अर्थालंकार।

अनुवाद की दृष्टि से दोनों ही प्रकार के अनुवाद कष्टसाध्य हैं, कभी-कभार तो असंभव हैं। इस समस्या का स्वरूप इस प्रकार है -

शब्दालंकार :

शब्दालंकार के मुख्यतः दो आधार होते हैं - 1. ध्वनि की समानता और 2. एक शब्द के एकाधिक अर्थ। शब्दालंकार मुख्य रूप से इन दोनों पर आधारित होते हैं। अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति, श्लेष इन शब्दालंकारों की विशेषताओं से परिपूर्ण सही अनुवाद के लिए विकल्प खोजना बड़ा ही कठिन काम है। विशेषतः ध्वनिसाम्य रखने वाले प्रतिशब्द मिलना तो बहुत हद तक असंभव है। इसके कुछ उदाहरण देखेंगे -

"बंदौ गुरु पद पदुम परागा,
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।"

यह अनुप्रास अलंकार का उदाहरण है। इसमें वर्ण या अक्षरों की समानता पाई जाती है। इस उदाहरण की पहली पंक्ति में 'प' अक्षर की समानता है, तो दूसरी पंक्ति में 'स' अक्षर की समानता है, ठीक ऐसे ही शब्द तथा ध्वनि वाला विकल्प दूसरी भाषा में मिलना कठिन है। ठीक इसी प्रकार से अंग्रेजी जैसी दूसरी भाषा में निहित ऐसी अभिव्यक्तियों के लिए भी हिंदी विकल्प नहीं मिल सकता - "How high his highness holds his haughty head" जैसी अभिव्यक्तियों का हिंदी अनुवाद बिलकुल आसान नहीं है।

तात्पर्य यह कि ध्वनि की समानता वाले अलंकार बहुत हद तक अननूद्य होते हैं। इनका अनुवाद तो किया जा सकता है लेकिन अनुवाद में अलंकार को अक्षुण्ण बनाए रखना संभव ही नहीं है। शब्दों के एकाधिक अर्थ वाले अलंकार भी अनुवाद की दृष्टि से बेहद कठिन माने जाते हैं। यह संभव नहीं कि लक्ष्यभाषा में उसी शब्द के लिए पूर्ण योग्य विकल्प मिलेगा ही। प्रायः शब्द के लिए विकल्प मिल भी जाए, तो यह असंभव है कि उस शब्द से उतनी ही अपेक्षित ध्वनियाँ और अर्थ निकलेंगे।

बर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न।
हरिनी के नैनान ते, हरि नीके ये नैन।

यह यमक अलंकार का उदाहरण है। बिहारी के इस दोहे में पहली पंक्ति में प्रयुक्त 'मैन' और 'मैं' 'न' का अर्थ क्रमशः 'मदन' और 'मैंने नहीं' है तो दूसरी पंक्ति में प्रयुक्त 'हरिनी के' याने हरिणी के और 'हरि' याने

'हे हरि', 'नीके' याने 'अच्छे'। पंक्ति का पूरा अर्थ इस प्रकार है - 'हे हरि ! ये नैन तो हरिनी के नैनों से भी अच्छे हैं।' इस प्रकार के अलंकारों के लिए सभी दृष्टियों से योग्य विकल्प मिलना सर्वथा असंभव है। एक से अधिक अर्थ प्रदान करने वाला एक और अलंकार 'श्लेष' है । इसका एक उदाहरण देखिए –

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरै, मोती, मानुस, चून।"

इन पंक्तियों में 'पानी' का प्रयोग चमक, प्रतिष्ठा और जल के अर्थ में किया गया है। अंग्रेजी में इसके लिए Water के रूप में विकल्प मिल जाएगा जो 'पानी' या 'जल' का अर्थ प्रदान करता है लेकिन जल के साथ-साथ चमक और प्रतिष्ठा का अर्थ प्रदान करने वाला विकल्प मिलना असंभव है।

अर्थालंकार :

अर्थालंकारों का अनुवाद तो बहुत कठिन माना जाता है क्योंकि कई बार शब्द के लिए योग्य शब्द मिल भी जाता है लेकिन यह संभव नहीं हो पाता कि अर्थ के लिए सर्वथा योग्य अर्थ मिल ही जाए।

अनुवादक उस समय कठिनाई महसूस करने लगता है जब दो भाषाओं में समान उपमान तथा उपमानों द्वारा अभिव्यक्त भाव विद्यमान न हों। अलंकारों का अनुवाद करते समय स्रोतभाषा में प्रयुक्त उपमानों के लिए लक्ष्यभाषा में योग्य विकल्प ही नहीं मिलेगा, तो अनुवाद करना कठिन हो जाता है। सूर के 'भ्रमरगीत' में गोपियाँ कृष्ण को बार-बार भौंरे की उपमा देती हैं। यहाँ भौंरा वंचक प्रेमी का प्रतीक है, साथ ही पति का भी प्रतीक है। केवल कृष्ण काव्य ही नहीं बल्कि आधुनिक काल में भी भौंरा वंचक प्रेमी के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला उपमान है। अंग्रेजी में यही उपमान प्रयुक्त होने का सवाल ही नहीं उठता। मछली के आकार की आँखों वाली स्त्री को 'मीनाक्षी' कहा जाता है। भारतीय परंपरा में 'मीन' सुंदर आँखों के लिए प्रयुक्त उपमान है। यह उपमान जब अंग्रेजी में है ही नहीं, तो अनुवाद का सवाल ही नहीं उठता।

समान उपमानों का अभाव अलंकारों के अनुवाद में बेहद कठिनाई निर्माण करता है। यदि अनुवादक स्रोतभाषा में प्रचलित उपमान अनुवाद के माध्यम से लक्ष्यभाषा पर थोपेगा तो भी इसे सही अनुवाद नहीं कहा जाएगा क्योंकि इस उपमान से अपरिचित लक्ष्यभाषाभाषी इसका रसास्वादन कर ही नहीं पाएँगे। तात्पर्य यह कि ऐसा अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने सबसे बड़ी मुश्किल समस्या उस समय आती है जब स्रोतभाषा का उपमान लक्ष्यभाषा में विद्यमान तो हो परंतु स्रोतभाषा से भिन्न भाव व्यक्त करता हो। कई बार कोई कच्चा अनुवादक इसमें धोखा भी खा सकता है। स्रोतभाषा का उपमान लक्ष्यभाषा में प्रचलित ही न हों, तो यथावत अनुवाद कर पाद टिप्पणी या व्याख्यात्मक टिप्पणी के माध्यम से उसे समझाया भी जा सकता है लेकिन भिन्न भाव के साथ प्रयुक्त उपमान अनुवादक के सामने कठिनाई उपस्थित कर देता है । जैसे –

हिंदी में किसी से कहा जाए कि 'वह उल्लू है', तो इसका अनुवाद क्या किया जाए। इसमें 'उल्लू' एक ऐसा उपमान है जो मूर्खों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यह उपमान अंग्रेजी में भी विद्यमान है लेकिन संपूर्ण रूप से विपरीत अर्थ के साथ। हिंदी में जहाँ 'वह उल्लू है' किसी के मूर्ख होने का बोध देता है वहीं अंग्रेजी में 'उल्लू - an owl' किसी के 'अत्यधिक बुद्धिमान' होने का संकेत देता है।

उपमान समान है लेकिन उपमान द्वारा अभिव्यक्त हो रहा भाव पूर्णतः भिन्न है। कोई कच्चा अनुवादक 'वह उल्लू है' का अनुवाद 'He is an owl' कर देगा तो यह ठीक विपरीत अर्थ प्रदान करेगा। इस स्थिति में अनुवादक को चाहिए कि वह अंग्रेजी में मूर्खता के लिए प्रचलित कोई उपमान ढूँढकर उसका प्रयोग कर डाले।

ठीक इसी तरह अंग्रेजी में कोई कहे कि 'He is as wise as an owl' तो इसका अनुवाद हिंदी में 'वह उल्लू की भाँति बुद्धिमान है' नहीं हो सकता क्योंकि हिंदी में 'उल्लू' मूर्खता का प्रतीक है। अतः हिंदी में इसका अनुवाद 'वह बृहस्पति की भाँति बुद्धिमान है' करना पड़ेगा। अगर अंग्रेजी वाक्य में चतुराई के साथ धूर्तता अर्थ भी शामिल है तो अनुवाद 'वह लोमड़ी या सियार की भाँति बुद्धिमान है' करना पड़ेगा।

अनुवादक अलंकारों को अनूदित करने का पूरा-पूरा प्रयास कर दें। यदि यह संभव नहीं तो शब्दानुवाद कर दें या फिर भावानुवाद कर दें। भावानुवाद करने से अर्थ की हानि होने की संभावना हो और शब्दानुवाद भी सही नहीं हो पा रहा हो, तो अनुवादक अलंकार का अनुवाद करने का मोह ही त्याग दे और सीधे-सादे शब्दों में बात को अभिव्यक्त कर दे।

24. काव्यानुवाद
स्वरूप एवं समस्याएँ

व्यापक अर्थ में काव्य में उपन्यास, कहानी, नाटक आदि सम्मिलित हैं। यहाँ 'काव्य' शब्द का प्रयोग 'कविता' अर्थ में अभिप्रेत है। कविता के अनुवाद को लेकर काफी मतभेद है। अनेकों का मत है कि काव्यानुवाद हो ही नहीं सकता। वस्तुतः काव्यानुवाद बहुत कठिन तो है, परंतु असंभव नहीं है। इसके अनुवाद में कई समस्याएँ हैं।

समान विकल्प :

काव्यानुवाद की समस्याओं में सबसे पहली समस्या यह है कि स्रोतभाषा के सभी शब्दों के लिए लक्ष्यभाषा में सर्वथा समान विकल्प मिलेगा ही, यह कहा नहीं जा सकता। गद्य का अनुवाद करते समय इस प्रकार विकल्प आसानी से मिल सकता है। न मिले तो कोशों की सहायता से काम चलाया जा सकता है लेकिन कविता में प्रयुक्त शब्द कई बार कोशीय अर्थ से भिन्न अर्थ भी देते हैं। कविता में अर्थ, शब्द और ध्वनि का योग पाया जाता है। लक्ष्यभाषा में इसे अवतरित करना बहुत मुश्किल काम है। उदाहरण के लिए हिंदी का 'अर्धांगिनी' शब्द ले लीजिए। इस शब्द में 'पत्नी' अर्थ तो समाया है ही, केवल इतना ही नहीं, इसमें एक श्रद्धा भाव भी है। अंग्रेजी का 'बेटरहाफ' शब्द हिंदी के 'अर्धांगिनी' के लिए विकल्प के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता क्योंकि 'अर्धांगिनी' में एक श्रद्धा है, गंभीरता है तो 'बेटरहाफ' में एक प्रकार का विनोदी भाव है। स्पष्ट है, अनुवाद करते समय 'गंभीरता, श्रद्धा' जैसे तत्व छूट गए और एक अलग किस्म का मजाकिया भाव जुड़ गया। तात्पर्य, यह जो जुड़ गया है, बढ़ गया है वह छूटे हुए तत्वों की सटीक अभिव्यक्ति नहीं दे पाता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह कि प्रत्येक भाषा का प्रत्येक शब्द अर्थवत्ता के स्तर पर अपने सामाजिक सांस्कृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ होता है। उस शब्द का अनुवाद तो हो सकता है परंतु उसके साथ जुड़ी सामाजिक, सांस्कृतिक आदि बातों का अनुवाद नहीं किया जा सकता।

अलंकारों का अनुवाद :

गद्य की भाषा में अलंकारों का उतना महत्व नहीं है जितना पद्य की भाषा में है। साधारण शब्दों को लक्ष्यभाषा में उतारने का प्रयास तो किया जा सकता है परंतु अलंकारों का अनुवाद करना बहुत हद तक असंभव बन जाता है। अलंकारों में शब्दालंकारों की बात करें तो अनायास अनुप्रास, यमक जैसे शब्दालंकार याद आते हैं। 'कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय' में एक कनक 'सोना' है, तो दूसरा कनक 'धतूरा' है। लक्ष्यभाषा में इसका योग्य अनुवाद तभी संभव है जब लक्ष्यभाषा में कोई ऐसा एक शब्द मिले जो 'सोना' और 'धतूरा' दोनों ही अर्थ रखता हो। अर्थालंकारों के उपमानों में स्थानकालादि परिवर्तन के कारण असमानता पाई जाती है। जैसे कोई कहता है 'वह उल्लू है' तो कहने वाला किसी व्यक्ति की मूर्खता की ओर इशारा कर रहा होता है। अनुवाद में यहाँ 'उल्लू' की जगह owl रख दें तो बात बिगड़ सकती है क्योंकि अंग्रेजी में owl याने 'उल्लू' बुद्धिमान माना जाता है।

छंदोबद्धता :

काव्यानुवाद में कविता की छंदोबद्धता एक कठिन समस्या होती है। अनुवाद कला के विद्वान इस बात को लेकर विशेष आग्रही हैं कि छंदोबद्ध रचना का अनुवाद छंदोबद्ध पद्धति से ही होना चाहिए। इसका कारण है - छंदों की गति, छंदों की लय। ये बातें कविता में अत्यंत प्रभावोत्पादक सिद्ध होती हैं। कविता यदि भारतीय भाषा में है और अनुवाद भी भारतीय भाषा में किया जा रहा है तो छंदों की रक्षा करना संभव हो सकता है लेकिन विदेशी भाषाओं में या विदेशी भाषाओं से यदि काव्य का अनुवाद हो रहा है तो छंदबद्धता के लिए आग्रह निरर्थक ही सिद्ध होता है। इस स्थिति में यह मानकर चलना चाहिए कि मूल भाषा में छंद प्रयोग के कारण जो प्रभाव आ गया है, वह लक्ष्यभाषा में उतारना संभव नहीं है। अनुवादक लक्ष्यभाषा में उपयुक्त छंद का प्रयोग करेगा, तो बात नहीं बनेगी और स्रोत भाषा के छंद को अनुवाद करते समय यथावत रखेगा, तो भी बात नहीं बनेगी क्योंकि लक्ष्यभाषा के पाठक इस नए छंद को आसानी से नहीं स्वीकार कर पाएँगे।

इस स्थिति में छंदोबद्धता का आग्रह छोड़ देना ही सही होगा। आधुनिक काव्यमर्मज्ञ भी छंद अनिवार्यता को नकार रहे हैं। इस स्थिति में अनुवाद में छंदोबद्धता के लिए आग्रह कहाँ तक उचित है? छंदबद्धता का पालन किए बिना भी श्रेष्ठ कोटि का अनुवाद किया जा सकता है। इसका उत्कृष्ट उदाहरण रवींद्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' है। मूल रूप से गीतों में रचित 'गीतांजलि' का अंग्रेजी अनुवाद गद्य में है लेकिन ध्यान रखना होगा कि इसी गद्य अनुवाद ने कवींद्र रवींद्र को नोबेल पुरस्कार दिलाया है।

शैली :

काव्यानुवाद में शैली का भी अपना महत्व होता है। शैली को लेकर भी थोड़े-बहुत अंतर के साथ वे बातें कही जा सकती हैं, जो छंद के विषय में कही गई हैं। प्रत्येक कवि की अपनी शैली होती है। उस शैली का रूपांतरण दूसरी भाषा में तो क्या मूल भाषा में भी कोई अन्य व्यक्ति नहीं कर सकता। दूसरी चीज यह भी है कि कोई अनुवादक मूल लेखक की शैली को अनुवाद में उतारने का दावा भी नहीं करता। लेकिन अनुवादक से बेशक यह उम्मीद की जाती है कि अनुवादक मूल लेखन के भावों को उसकी शैली के साथ अभिव्यक्त करें।

कवि अनुवादक :

अधिकांश रूप में वे काव्यानुवाद ही सफल हो पाए हैं जो किसी कवि द्वारा किए गए हैं। एक कवि ही किसी दूसरे कवि के विचारों-भावों के साथ न्याय कर सकता है। कविता का अनुवाद एक प्रकार का पुनः सृजन होता है। शास्त्रसामग्री का अनुवाद दस अलग-अलग लोग करें तो भी उसके आशय में विशेष अंतर नहीं होगा लेकिन काव्य का अनुवाद उतने प्रकार का होगा जितने अनुवादक होंगे। हर अनुवादक अपने-अपने ढंग से पुनः सृजन करता है। स्वाभाविक है कि इस पुनः सृजन में कवि का सर्जनात्मक दृष्टिकोण शामिल होता है।

अनुवादक का व्यक्तित्व :

अनुवादक का व्यक्तित्व भी काव्यानुवाद में से झाँकता है। कोई भी सर्जक व्यक्ति दूसरे के भाव व्यक्त करते समय अपने सर्जकत्व का त्याग नहीं कर सकता। जाने-अनजाने उसका व्यक्तित्व अनुवाद में झाँकता ही है। अब यह बहस का मुद्दा हो सकता है कि यह बात कहाँ तक ठीक है। ऐसा अनुवाद सुंदर भी रहा तो आलोचना

का विषय हो सकता है। फिट्जजेराल्ड उमर खैयाम की रुबाइयों का अनुवाद करते समय अपने व्यक्तित्व को अनुवाद में झाँकने से रोक नहीं पाए तभी तो उनके अनुवाद को 'खूबसूरत' कहा जाता है लेकिन 'वफादार' नहीं।

सूक्ष्म और जटिल अर्थ धारण करने वाली कविता स्रोतभाषा में अत्यधिक सुंदर प्रतीत होती है लेकिन अनुवाद की दृष्टि से वह अत्यंत कठिन सिद्ध होती है। स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा में सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषिक आदि दृष्टियों से जरा भी निकटता है, तो अनुवाद अत्यंत आसान बन जाता है। जैसे हिंदी-मराठी अनुवाद में उतनी कठिनाइयाँ नहीं आएँगी जितनी फ्रेंच-हिंदी अनुवाद में आएगी।

अनुभूति :

काव्यानुवाद में कठिनाई आने का एक महत्वपूर्ण कारण यह है - अनुभूति। कविता ऐसे विशेष क्षणों की उपज होती है जिन्हें कवि ने सच्चे अर्थों में जिया है, अनुभव किया है। अतः इसमें अनुभूति के कई ऐसे तत्व विद्यमान होते हैं जिनका अनुवाद हो ही नहीं सकता।

कविता की भाषा, छंद, शैली, आशय, अनुभूति आदि बातें ऐसी हैं जिन्हें संपूर्णता के साथ दूसरी भाषा में उतार पाना संभव नहीं होता। लेकिन अनुवाद में इन सभी बातों के अंतरण का आग्रह किया जाता है। इस प्रकार के आग्रहों को दुराग्रह ही कहना चाहिए। इस दुराग्रह का कारण संभवतः यह होता है कि हम अनुवाद को मूल कृति के स्थान पर रखकर ही उसका मूल्यांकन करते हैं। हमें यह सदैव याद रखना होगा कि अनुवाद विशेषतः काव्य का अनुवाद मूल कृति की जगह कभी नहीं ले सकता। हमारी अनुवादक से उतनी ही उम्मीदें होती हैं जितनी मूल कृति से स्रोतभाषा भाषियों को होती हैं। अनुवाद मूल कविता का विकल्प नहीं बल्कि मूल काव्य की भावनाएँ प्रातिनिधिक रूप में व्यक्त करने वाली कृति होती है। यदि हम ये सारी बातें सोचकर अनुवाद को पढ़ेंगे, तो निश्चित रूप से वह काव्यानुवाद हमें मूल काव्य से परिचित कराएगा, लगभग मूल-सा आनंद देगा।

प्रश्न उठता है कि कविता का अनुवाद पद्य में करें या गद्य में । यथासंभव कविता का अनुवाद पहले तो पद्य के रूप में करने का प्रयास करें, यदि ठीक अनुवाद न हो पा रहा हो तो मुक्त छंद में अनुवाद करें और यदि उसमें भी कठिनाई हो रही हो तो गद्य में अनुवाद करें।

25. नाट्यानुवाद
स्वरूप एवं समस्याएँ

प्रायः सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद एक कठिन कार्य है। नाटक एक गद्यात्मक विधा है अतः लग सकता है कि इसका अनुवाद सरल कार्य है ; लग सकता है कि काव्यानुवाद जैसी पेचीदगी नाटक के अनुवाद में नहीं होगी। लेकिन यह सर्वथा गलत है। नाटक का अनुवाद भी उतना ही कठिन है जितना काव्य का अनुवाद। नाटकों में दो बातें महत्वपूर्ण हैं : एक तो 'संवाद' और दो 'मंचन'। हम कह सकते हैं कि "नाटक संवादों पर आधारित मंचविधा है।" यह काव्य, कहानी या उपन्यास से भिन्न है। अतः इसके अनुवाद में आने वाली समस्याएँ भी भिन्न हैं।

विभिन्न भाषाओं में जितने भी प्रकार के नाटक मिलते हैं, उन्हें हम दो वर्गों में रख सकते हैं : 'पठनीय' और 'अभिनेय'। नाटकों की ही तरह अनुवाद भी इन दो प्रकारों में रखा जाएगा।

पठनीय :

नाटक का पठनीय अनुवाद विशेष कठिन काम नहीं है। मूल कृति, कोश, विशेषज्ञ आदि की मदद से किसी भी नाटक का पठनीय अनुवाद किया जा सकता है।

अभिनेय :

कठिनाई वहाँ से शुरू हो जाती है जहाँ नाटककार अपने नाटक को पठनीय के साथ-साथ अभिनेय भी बनाना चाहता हो। इस स्थिति में अनुवादक का केवल अनुवादक होना काफी नहीं है। उसे चाहिए कि वह रंगमंच का अच्छा-खासा ज्ञान रखता हो और रंगमंचीय आवश्यकताओं की पूर्ति भी करता हो। हिंदी में कई नाटकों के अनुवाद हुए हैं। इनमें से कुछ तो हरिवंशराय बच्चन और रांगेय राघव जैसे विद्वानों ने किए हैं। लेकिन नाटक अधिक-से-अधिक पठनीय ही बन पाए हैं। रंगमंचीय क्षमताओं का इनमें अभाव है, अतः कहना पड़ता है कि यह सफल नाट्यानुवाद नहीं है। नाटक का अनुवाद सफल तभी माना जाता है जब वह रंगमंच की दृष्टि से सक्षम होता है, जब अनुवादक रंगमंचीय जानकारी रखता हो।

संवाद :

नाटक संवादों की विधा है। अतः भाषा-शैली को लेकर अनुवादक को अत्यधिक सतर्क रहना पड़ता है। नाटकों के संवाद लंबे-लंबे नहीं होते। बड़े-बड़े वाक्य बोलना भी कठिन है और दर्शकों द्वारा उसे सुनना, समझना भी कठिन है। इसी लिए अनुवादक को प्रयास करना चाहिए कि नाटक के वाक्य छोटे-छोटे वाक्यों में बाँट देने चाहिए। ऐसी भाषा संवादोचित भाषा कहलाती है और नाटक देखने वाले छोटे-बड़े, शिक्षित, अशिक्षित, शहरी, ग्रामीण सभी प्रकार के दर्शक उसे आसानी से समझ सकते हैं। उलझे हुए क्लिष्ट वाक्य नाट्यानुवाद का दोष माना जाएगा। किसी कहानी, उपन्यास या काव्य में भाषिक व्याकरणिक दृष्टि से कोई उलझन हो भी, तो पढ़ने वाला उसे समझने के लिए दस बार पढ़ेगा, कोशों से या किसी और से मदद लेगा, लेकिन मंच पर चल रहे नाटक के वाक्यों को दोहराने का तो सवाल ही नहीं उठता ।

देश, काल, वातावरण के अनुकूल भाषा :

नाट्यानुवाद में जीवंतता को अत्यंत महत्व दिया जाता है। यह जीवंतता मुहावरे, लोकोक्तियाँ, अलंकार आदि के प्रयोग से आती है। ये सारी बातें मूल भाषा की संस्कृति से संबद्ध होती हैं, अतः अनुवादक को उस संस्कृति का अच्छा परिचय होना ही चाहिए जिस संस्कृति से संबद्ध नाटक का वह अनुवाद कर रहा है। नाटकों की भाषा भी विशिष्ट होती है। नाटक में उसका अनुगमन होना अत्यंत आवश्यक है। जैसे - ऐतिहासिक वातावरण निर्मिति के उद्देश्य से प्रसाद अपने नाटकों में संस्कृतगर्भित भाषा का प्रयोग किया करते थे। इस नाटक का, नाटक की भाषा का, भाषा के कारण निर्मित उच्च वातावरण का अनुवाद सहज संभव नहीं हो सकता। अंग्रेजी, फारसी, अरबी आदि में ऐसी भाषा शैली का प्रयोग संभव नहीं होगा। नाटकों में प्रयुक्त संबोधन भी विशिष्ट अर्थ प्रदान करते हैं। प्रसाद के नाटकों में अकसर देवि, देवी, नाथ, आर्यपुत्र, प्रिये, प्रियतम, देव, तथागत, भगवन, वत्स, रमणी आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। ये संबोधन नाटक में उस पात्र का दरजा, उसकी योग्यता, उसका अन्य पात्रों से रिश्ता आदि बातें द्योतित करते हैं। संपूर्ण अर्थवत्ता के साथ इसका यूरोपीय या अरबी-फारसी जैसी भाषाओं में अनुवाद लगभग असंभव है। यह संबोधन जिसके लिए हैं, उसकी स्थिति संबोधन द्वारा स्पष्ट हो जाती है, ठीक इसी तरह वक्ता की (संबोधन करने वाले की) स्थिति भी इससे स्पष्ट हो जाती है। जैसे - कोई शिक्षित-दीक्षित व्यक्ति 'देवि' कहेगा तो अनपढ़, गँवार व्यक्ति 'देवी' कहेगा। शब्द, संबोधन वही है लेकिन वक्ता की स्थिति वह स्पष्ट कर जाता है। इस मात्रा द्वारा दर्शाए गए सूक्ष्म भेद को अनूदित करना कठिन है।

पात्रानुकूल भाषा :

नाटक के पात्र विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परंपरा के, शैक्षिक, व्यावसायिक, आर्थिक स्तरों के तथा विशिष्ट आयु के होते हैं। इन सबकी भाषा-शैली एक-सी नहीं हो सकती। ध्वनि, शब्द, रूपरचना, वाक्यरचना सभी दृष्टियों से पात्रों की भाषा में अंतर पड़ेगा। अनुवादक को पात्रानुकूल भाषा-शैली का प्रयोग करना पड़ेगा।

संवाद और अभिनय का तालमेल :

नाटक के अनुवाद में और एक बात महत्वपूर्ण है, वह बात है - संवादों और अभिनय का सही तालमेल। स्रोतभाषा के नाटक में ऐसा ही तालमेल योग्य प्रभाव निर्माण करता है। एक अच्छा अनुवादक यही प्रयास क रता है कि संवाद और अभिनय का यही तालमेल और उससे उत्पन्न प्रभाव अपने नाट्यानुवाद में आ पाए। आने वाली कठिनाइयों को सोचकर जो अनुवादक नाटक के अनुवाद में लग जाता है वह निश्चित रूप से नाटक का 'अधिकतम निकट' और 'मंचीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला' अनुवाद कर सकता है।

वर्जित और आवश्यक बातें :

हर संस्कृति में नाटक या मंच की दृष्टि से कुछ बातें वर्जित होती हैं और कुछ आवश्यक होती हैं। अनुवादक को इन तथाकथित वर्जनाओं तथा अनिवार्यताओं का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

नाटक संवादात्मक कहानी, कार्यव्यापार और अभिनय का समन्वित रूप होता है। अनुवादक सफल अनुवाद के लिए इन तीनों बातों पर पूरा ध्यान दें।

26. अनुवाद कार्य में शैली विचार

अनुवाद के प्रसंग में 'शैली' का प्रयोग दो अर्थों में प्रायः होता है। अनुवाद की शैलियों से लोग विविध अर्थ लेते हैं - शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद आदि का। इस अर्थ में 'शैली' अनुवाद के प्रकार या भेद का पर्याय है। अनुवाद के प्रसंग में 'शैली' का दूसरा अर्थ लिया जाता है, वह है अनुवाद में अभिव्यक्ति की शैली।

शैली के संबंध में प्रा. सुरेश सिंगल जी के विचार द्रष्टव्य हैं "शिल्प (क्रॉफ्ट) यदि किसी रचना का संपूर्ण अभिव्यक्ति पक्ष कहलाता है, तो शैली (स्टाइल) उस शिल्प की अभिव्यक्ति की भंगिमा विशेष को कहते हैं।

डॉ. भोलानाथ तिवारी जी का मत है कि अनुवाद की शैली के बारे में सामान्य सिद्धांत तो यही है कि अनुवाद में अभिव्यक्ति की शैली ऐसी होनी चाहिए जो मूल कृति या मूल कृति के लेखक की शैली की अनुगामिनी हो।

शैली की विशेषता बताते हुए रामचंद्र शर्मा लिखते हैं "शब्दों का ठीक चुनाव और वाक्यों में उनका उपयुक्त प्रस्थापन, वाक्यों का समुचित प्रतिपादन, थोड़े से शब्दों में अधिक भाव प्रकट करना और पाठकों के मनोरंजन का ध्यान रखते हुए उनपर पूरा-पूरा प्रभाव डालना ही शैली की विशेषताएँ हैं।"

शैली में स्रष्टा के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति सन्निहित है। शैली काव्य की अभिव्यक्ति का कलापक्ष है। रचना में सर्जक की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति प्रतीत होती है। किसी भी साहित्य कृति में फिर वह मौलिक हो या अनूदित, शैली की समस्या और उसका विवेचन करना अनिवार्य हो जाता है किंतु अनूदित और मौलिक रचना की शैली का विवेचन या समीक्षा इसमें अंतर होता है। मौलिक स्रष्टा की शैली का मूल्यांकन, साहित्य को उसका स्थान निर्धारित करने की धारणा से किया जाता है। अनूदित रचना का परीक्षण, आशय और अभिव्यक्ति में अनुवादक मूल स्रष्टा के प्रति कहाँ तक निष्ठावान रहा है, इस प्रयोजन से किया जाता है। अनुवाद की सफलता या विफलता मूल के प्रतिबिंब की स्पष्टता और अस्पष्टता पर निर्भर होती है।

अनुवाद शैली का स्वरूप :-

अनुवाद के प्रसंग में शैली का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है। एक अर्थ में शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद आदि विविध शैलियाँ आती हैं। शैली के दूसरे अर्थ के अंतर्गत अभिव्यक्ति की शैली लक्षित होती है। पहले अर्थ में अनुवाद के प्रकार के अंतर्गत विचार किया गया जाता है। दूसरे अर्थ में शैली को अभिव्यक्ति पक्ष या कला पक्ष की संज्ञा दी जाती हैं। भाषा पक्ष में प्रमुख रूप से शब्दचयन, अलंकार, शब्द शक्ति, गुण, नाद सौंदर्य, ध्वनि, छंद आदि तत्वों के कारण शैली की पहचान होती है।

शैली के इन मुख्य तत्वों को अनुवाद में ठीक उतार पाने में कभी-कभी काफी कठिनाई होती है।

शब्दचयन :

किसी भाषा में पर्यायों का आधिक्य होता है, तो किसी में वे कम होते हैं। जैसे, Earth के लिए पृथ्वी, धरा, धरती, भूमि, जमीन, मिट्टी आदि पर्याय हैं, जिनके संदर्भ अर्थ कभी-कभी एक दूसरे से दूर होते हैं। हिंदी

की चार शैलियाँ हैं - संस्कृतिनिष्ठ, अरबी-फारसी युक्त, हिंदुस्तानी और विदेशी शब्दों से युक्त हिंदी। अनुवाद में रूपचयन की भी कठिनाई होती है। [You] sit के लिए हिंदी में 'बैठ', आदर से 'बैठो', 'बैठिए', 'बैठें'- चार रूप हैं, जिनमें अंतर है।

आलंकारिक शैली :

आलंकारिक अनुवाद में भी कठिनाई होती है। जहाँ स्रोत सामग्री में उपमा, रूपक आदि अर्थालंकारों के चमत्कार हों उन्हें उसी रूप में या थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ लक्ष्य भाषा में अनूदित किया जा सकता है, लेकिन अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि शब्दालंकारों से युक्त शैली का लक्ष्यभाषा में वैसा ही शैली चमत्कार लाकर अनुवाद करना कठिन है। दूसरी ओर, स्रोत भाषा में कोई अलंकार, मुहावरा आदि न होने पर भी कुशल अनुवादक अपने अनुवाद में अलंकार की छटा या मुहावरे का सौंदर्य ला सकता है। सरल भाषाशैली का आलंकारिक शैली में अनुवाद हो सकता है।

शब्द शक्तियाँ, नाद सौंदर्य :

लक्षणा-व्यंजना शब्दशक्तियों, नादसौंदर्य, ध्वन्यात्मकता आदि से युक्त शैली का अनुवाद करना भी कठिन है। 'संध्या हो गई' के अभिधा, लक्षणा, व्यंजना शब्दशक्ति से अलग अर्थ हो जाते हैं। 'कंकण किंकिणि नूपुर धुनि सुनि' या 'मृदु मंद-मंद, मंथर-मंथर' का शैलीगत नादसौंदर्य अनुवाद में ला पाना सरल नहीं है। **छंद** तो विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग होते हैं। इन कारणों से मूल जैसा सार्थक और प्रभावी अनुवाद कम संभव है। कठिनाइयाँ होने पर भी सामान्यतः मूल शैली जैसा अनुवाद अपेक्षित है। प्रयत्न से थोड़ी-बहुत सफलता संभव है।

मूल रचना के अनुरूप :

अनुवाद को सरल, सुबोध बनाने के लिए मूल के निकटतम और हिंदी की प्रकृति के अनुरूप शैली में अनुवाद उपयुक्त होगा। **मूल रचना के अनुरूप अनुवाद की शैली** होगी तो अनुवाद सफल होगा। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, रवींद्रनाथ ठाकुर, मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद की कृतियों के अनुवाद किसी भी भाषा में क्यों न हों, उनकी शैलियों की विभिन्नता स्पष्ट परिलक्षित होनी चाहिए।

विभिन्न शैलियाँ :

अनुवाद भिन्न-भिन्न शैलियों में अनेक प्रकार से किया जा सकता है। मूल कृति, विषय, अनुवाद के उद्देश्य, अनुवाद की व्यक्तिगत रुचि आदि पर शैली निर्भर करती है। परिस्थितियों के कारण भी शैली में अंतर आ सकता है। अनुवादक की व्यक्तिगत भाषिक क्षमता, शैली सौंदर्य और सर्जना शक्ति के कारण शैली उत्तम या अधम कोटि की हो सकती है।

हिंदी में शैली के भेदों या प्रकारों के नाम पर व्यास शैली, समास शैली, अलंकृत शैली, उदात्त शैली, मुहावरेदार शैली, व्यंजक शैली, गुंफित शैली, सरल शैली, सरस शैली, सामान्य शैली तथा सपाट शैली आदि के नाम लिए जाते हैं। पहली स्थिति में अनुवाद अर्थ पर ध्यान देता है और उसके बाद मूल कृति की शैलीगत विशेषताओं पर ध्यान देता है।

विषयवस्तु की दृष्टि से रचनाएँ दो प्रकार की होती हैं : भाव प्रधान और तथ्यप्रधान (सूचना प्रधान)। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, गद्यकाव्य, ललित निबंध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि भाव प्रधान रचनाएँ हैं, तो इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र व नृतत्वशास्त्र, गणित, विज्ञान, विधि, दर्शन, धर्मशास्त्र आदि तथ्य प्रधान रचनाएँ होती हैं। भावप्रधान रचनाएँ ललित शैली में, तो तथ्यप्रधान रचनाएँ अभिधाप्रधान, सरल शैली में होती है। अनुवाद भी उसी शैली में अपेक्षित होता है। उपन्यास, कहानी आदि गद्य विधाओं के अनुवाद की भाषा सामान्यतः जनभाषा होती है, तो काव्य, नाटक आदि की भाषा, साहित्यिक भाषा या शिष्ट व्यवहार की भाषा होती है।

निष्कर्ष :

अनुवाद की शैली के संबंध में विद्वानों में एकमत नहीं है। तात्पर्य यह है कि अनुवाद की कोई विशेष शैली नहीं हो सकती और उसकी एक परिभाषा देना संभव नहीं। हर रचना के अनुवाद संदर्भ में विभिन्न तत्वों, विभिन्न शैलियों का उपयोग करना होता है। विषय के अनुसार, कृति और विधा के अनुसार, अनुवादक के अनुसार शैली भिन्न प्रकार की हो जाती है। सेवरी के मत में अनुवाद को एक संकीर्ण घेरे में बंद करना या उसको किसी शैली विशेष का अनुवाद मानना अनुचित है।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि अनुवादक किसी भी समुचित शैली को अपनाकर स्पष्ट, सरल, बोधगम्य भाषा में सफल अनुवाद प्रस्तुत करें। भाषा और शैली कोई भी हो, परम लक्ष्य कृति का सुरुचिर, सुंदर, सफल अनुवाद होना चाहिए।

27. दुभाषिया (भाषांतरकार) और भाषांतरण

एक दूसरे की भाषा न जानने वाले दो भिन्नभाषी व्यक्ति बातचीत या विचार विनिमय के लिए उनकी भाषाओं को जानने वाले जिस मध्यस्थ की सहायता लेते हैं, उस व्यक्ति को दुभाषिया अथवा भाषांतरकार - 'इन्टरप्रेटर' कहते हैं। भाषांतरकार जो कार्य करता है उसे भाषांतरण कहते हैं। दुभाषिया दो भाषाओं का जानकार होने से वह एक की बात सुनकर उसका तुरंत अनुवाद करके दूसरे व्यक्ति को उसकी भाषा में सुना देता है। फिर दूसरे का उत्तर सुनकर उसका भी तुरंत अनुवाद करके पहले व्यक्ति को उसकी भाषा में सुना देता है। इस तरह दुभाषिया बातचीत का माध्यम बन जाता है।

सीमाएँ : दुभाषिया भी अनुवादक ही होता है, परंतु उसका दायित्व अनुवादक से अधिक होता है। उसे लिखित अनुवादक की सभी सुविधाएँ प्राप्त नहीं होतीं। अर्थ या भाव जानने के लिए शब्दकोश की सहायता, अन्य व्यक्ति से विचार-विमर्श, कई बार पढ़कर समझने का अवकाश, पर्याप्त समय,लिखित भाषा में प्रयुक्त चिह्न, उनसे प्राप्त अर्थ के अंतःसंबंध, अर्थ समायोजन आदि सुविधाएँ जो एक अनुवादक को मिलती हैं, वे दुभाषिए को प्राप्त नहीं होतीं। अतः उसका काम अपेक्षाकृत कठिन है। उसे केवल वक्ता के बोलने, बीचे में रुकने, अनुतान, बलाघात, सुर-तान आदि के आधार पर ही अर्थ-भाव ग्रहण करके भाषांतरण प्रस्तुत करना पड़ता है।

आवश्यकताएँ : आदर्श भाषांतरण के लिए दुभाषिए को कुछ बातों की आवश्यकताएँ होती हैं।

(अ) भाषाज्ञानी : दुभाषिए को दो भाषाओं का अच्छा ज्ञाता होना चाहिए। दोनों भाषाओं के शब्दभंडार, प्रयोग, नियम, व्याकरण, संरचना आदि की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

(आ) श्रवणशक्ति : उसकी श्रवणशक्ति बहुत अच्छी होनी चाहिए, जिससे वह कही हुई बात ठीक तरह से सुन सके। बोलने वाले के शब्द, सुर, अनुतान, अनुस्वार, अनुनासिकता, ह्रस्व-दीर्घता, बलाघात, संयोजन-संधि आदि को ठीक ग्रहण कर भाषांतरण कर सके।

(ई) उच्चारण : दुभाषिए का उच्चारण भी बहुत अच्छा होना चाहिए। स्वर, व्यंजन, संयुक्त स्वर, संयुक्त व्यंजन, अनुतान, बलाघात, संयोजन आदि की दृष्टि से उसका उच्चारण ठीक हो। इसे सुनकर श्रोता पूर्ण, स्पष्ट और सही अर्थ-भाव समझ सके।

(इ) आत्मविश्वास, निर्भयता : दुभाषिए को बिना घबराए, आत्मविश्वास और निर्भयता से भाषांतरण करना चाहिए। घबराने से बोधगम्य बात भी अबोधगम्य होकर अनुवाद गलत हो सकता है।

(उ) निःसंकोच भाव : अगर वक्ता के कथन के दौरान कोई बात दुभाषिए की समझ में स्पष्ट रूप में न आ रही हो, तो आवश्यकतानुसार वह निःसंकोच होकर वक्ता से स्पष्ट कर ले, ताकि गलत अर्थ या अनर्थ न हो।

(ऊ) आवश्यक संकेत : अत्यंत आवश्यक हो जाने पर दुभाषिया वक्ता से यह संकेत कर सकता है कि उनके धीरे-धीरे और स्पष्ट बोलने से भाषांतरण का काम सरल और उपयुक्त हो जाएगा।

(ए) धीमी गति, छोटे वाक्य : दुभाषिए का कर्तव्य है कि वह छोटे-छोटे, अर्थपूर्ण स्पष्ट वाक्यों में अनुवाद करे और स्वयं धीमी गति से बोले, ताकि श्रोता सरलता से भाषांतरण को समझे और अपेक्षित उत्तर दे सके।

(ऐ) आवश्यकतानुसार भावानुवाद : दुभाषिए के लिए हमेशा बहुत सटीक, आदर्श, सुसूत्र और सुसंतुलित अनुवाद करना संभव नहीं हो पाता। इस स्थिति में अपेक्षित होने पर वह भावानुवाद अवश्य करे। विशिष्ट स्थिति में उसके लिए भावानुवाद भी एक आदर्श अनुवाद है।

28 . अनुवाद समीक्षा/मूल्यांकन

अनुवाद समीक्षा या मूल्यांकन अनुवाद सिद्धांत का अनुप्रयोगात्मक पक्ष है। अनुवाद समीक्षा का तात्पर्य है मूलभाषा पाठ की तुलना में अनूदित पाठ के गुण-दोष का विवेचन। यह विवेचन समीक्षक के वैयक्तिक मत से नहीं, अपितु अनुवाद सिद्धांत की मान्यताओं से अनुशासित होता है। यह अनुवाद कार्य के स्थितिशील आयाम को विज्ञापित करता है; यह अनुवाद कार्य की निष्पत्ति से संबंधित है। अनुवाद समीक्षा ही वह स्थिति है जिसमें 'अनुवाद एक संबंध है' इस मान्यता का अनुप्रयोग होता है। दो सममूल्य पाठों के बीच समानता के संबंध को 'अनुवाद' कहते हैं। इस संबंध के स्पष्टीकरण, विवेचन से अनुवाद प्रक्रिया के उद्घाटन में सहायता मिलती है। यह अनुवाद कार्य का वैकल्पिक पक्ष है। अनुवाद कार्य एक कौशल है, जिसकी निष्पत्ति का अध्ययन अनुवाद समीक्षा से होता है। अनुवाद समीक्षा एक ज्ञानात्मक विधा है। अनुवाद और अनुवाद समीक्षा ये दोनों अनुवाद प्रक्रिया के दो समस्तरीय पहलू हैं। ये दोनों अन्योन्याश्रित हैं- अनुवाद कार्य से समीक्षा की स्थिति का अस्तित्व बनता है और समीक्षा से अनुवाद कार्य की गुणवत्ता के सरस-नीरस होने के संकेत प्राप्त होते हैं।

अपनी प्रकृति और महत्व के कारण अनुवाद समीक्षा का अपेक्षाकृत स्वतंत्र स्थान है। जिस प्रकार साहित्य समीक्षक के लिए साहित्यसर्जक होना अनिवार्य नहीं, उसी प्रकार अनुवाद समीक्षक के लिए अनुवादक होना अनिवार्य नहीं। ये दोनों 'रोल' परिपूरक वितरण में हैं, अतः प्रायः अनुवादक और अनुवाद समीक्षक, अलग-अलग व्यक्ति होते हैं। यदि ये दोनों 'रोल' एक ही व्यक्ति को करने हों तो दोनों स्थितियों के बीच समय का इतना व्यवधान अवश्य हो कि एक का दूसरे पर विपरीत प्रभाव न पड़े।

अनुवाद समीक्षा एक ओर अनुवाद के कौशल का मूल्यांकन है वह दूसरी ओर लक्ष्यभाषा के अभिव्यक्ति संसाधनों का भी मूल्यांकन है। वह यह देखता है कि उन संसाधनों के द्वारा मूल भाषा पाठ के विभिन्न पक्षों की लक्ष्यभाषा में कितनी शुद्ध तथा उपयुक्त रीति से आवृत्ति हुई है। इस प्रकार अनुवाद समीक्षा में अनुवाद के व्यक्तिपरक और निर्वैयक्तिक (भाषापरक) पक्षों के बीच संतुलन रहता है।

अनुवाद समीक्षा की आवश्यकता/उद्देश्य :-

अनुवाद समीक्षा की आवश्यकता इस प्रकार है -

1. समीक्षा से अनुवाद कार्य के स्तर को ऊँचा उठाने में सहायता मिलती है। अनूदित पाठ के गुण-दोष विवेचन से अनुवाद कार्य की त्रुटियों का ज्ञान होता है जिन्हें दूर करने का प्रयत्न किया जाता है। इसके फलस्वरूप अनुवाद कार्य के स्तर में सुधार होता है।

2. इससे अनुवादकों के सामने श्रेष्ठ अनुवाद का मानक (स्टैन्डर्ड) उपस्थित होता है। गुण-दोषविवेचन के उपरांत सुधरे हुए अनुवाद को अनुवादक अपना आदर्श मानकर अपने कार्य में प्रवृत्त होता है।

3. अनुवाद समीक्षा से विशिष्ट कालखंड में और विशिष्ट ज्ञानक्षेत्र में अनुवाद संबंधी विचारों पर प्रकाश पड़ता है। उदाहरण के लिए बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने एलेग्जेंडर पोप की पद्यबद्ध रचना 'एसे ऑन क्रिटिसिज्म' का 'समालोचनादर्श' (1919) शीर्षक से रोला छंद में

अनुवाद किया। उसकी आज हम समीक्षा करें तो हमें अनुवाद चिंतन संबंधी तत्कालीन प्रवृत्तियों का ज्ञान होता है।

4. अनुवाद समीक्षा के द्वारा हमें महत्वपूर्ण लेखकों की रचनाओं तथा महत्वपूर्ण अनुवादकों के अनुवाद कार्य के विवेचन और मूल्यांकन में सहायता मिलती है। 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' के राजा लक्ष्मणसिंह कृत अनुवाद 'शकुंतला नाटक' (1863) की समीक्षा से मूलकृति के विषय में हमारी समझ में वृद्धि होती है। इसी के साथ हम राजा लक्ष्मणसिंह का एक प्रतिष्ठित अनुवादक के रूप में मूल्यांकन कर सकते हैं, जिससे आनुषंगिक रूप में तत्कालीन अनुवादकार्य संबंधी आदर्शों का भी हमें परिचय प्राप्त होता है।

5. अनुवाद समीक्षा के द्वारा हम मूलभाषा और लक्ष्यभाषा के शब्दकोश का, व्याकरण का, भाषाशैली एवं पाठप्रारूप संबंधी असमानताओं का समीक्षात्मक विवेचन कर सकते हैं। इस प्रकार दोनों भाषाओं के व्यतिरेकात्मक संबंध के विषय में अपनी जानकारी बढ़ा सकते हैं।

6. अनुवाद समीक्षा का शिक्षणात्मक आयाम भी है। अनुवाद समीक्षा की शिक्षा द्वारा हम अनुवादक शिक्षार्थी की अनुवाद सिद्धांत संबंधी चेतना को व्यावहारिक स्तर पर पुष्ट कर सकते हैं।

निकष :-

अनुवाद समीक्षा अनुवादकार्य की सूचनाओं का संकलन मात्र नहीं है। उसे अनुवाद में प्रयुक्त भाषा की मोटी विशेषताओं तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। अनुवाद की सफलता या विफलता संबंधी अतिसंक्षिप्त टिप्पणियाँ भी अनुवाद समीक्षा नहीं हैं। अनुवाद समीक्षा अनुप्रयुक्त कार्य का बहुपक्षीय विश्लेषण, विवेचन तथा मूल्यांकन है जिसमें अनुवाद के समस्त कारकों की शक्ति एवं सीमा को उजागर करने का पर्याप्त अवसर है।

अनुवाद समीक्षा में अपेक्षित उपरोक्त समस्त पक्षों को समाहित तथा सुव्यवस्थित करने के लिए अनुवाद समीक्षक के पास पैनी समीक्षा दृष्टि, विश्लेषण क्षमता, भाषा संबंधी अवधारणाओं का बोध, दोनों भाषाभाषी समाजों में सांस्कृतिक अंतर की पहचान तथा दो पाठों में साम्य-वैषम्य को अधोरेखित करने की निश्चयात्मक बुद्धि होनी चाहिए। दोनों पाठों के प्रभाव को समझ लेने के लिए अकेले अनुवाद-समीक्षक का अभिप्राय पर्याप्त नहीं होगा। इस सोपान पर उसे विभिन्न पाठकों से मिलकर सर्वेक्षणात्मक कार्य भी करना होगा। इस दृष्टि से अनुवाद समीक्षा धैर्य एवं परिश्रम की माँग करती है। इन तमाम योग्यताओं से युक्त अनुवाद समीक्षक यदि वस्तुनिष्ठ भूमिका अपनाते हुए, अनुवादक द्वारा स्वीकृत उद्देश्यों एवं अनुवाद प्रणालियों पर ध्यान देते हुए अनुवाद समीक्षा में प्रवृत्त होता है तो अनुवाद समीक्षा न केवल बहुपक्षीय होगी अपितु अनुवाद को स्तरीय बनाने में भी उपयोगी सिद्ध होगी।

अनुवाद प्रश्नमंजूषा

दीर्घोत्तरी प्रश्न :-

1. अनुवाद की परिभाषा लिखते हुए अनुवाद के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
2. अनुवाद की व्याप्ति बताकर उसकी आवश्यकता विशद कीजिए।
3. अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ देकर समझाइए कि आप किस परिभाषा को उचित मानते हैं? क्यों?
4. अनुवाद की दो मानक परिभाषाएँ देते हुए अनुवाद के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए।
5. अनुवाद के महत्व और उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
6. अनुवाद को विज्ञान कहना कहाँ तक तर्कसंगत है? स्पष्ट कीजिए।
7. अनुवाद कला है, विज्ञान है या शिल्प है? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
8. "अनुवाद अपनी विशिष्ट सीमा में कला भी है, विज्ञान भी है और शिल्प भी।" कथन के आधार पर अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
9. "अनुवाद अंशतः कला, अंशतः विज्ञान तथा अंशतः शिल्प है।" विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
10. अनुवाद प्रक्रिया को सोदाहरण समझाइए।
11. "अनुवाद प्रक्रिया में स्रोत भाषा का पाठबोधन और लक्ष्य भाषा में उसकी अभिव्यक्ति दोनों का समान महत्व है।" सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
12. अनुवाद प्रक्रिया के विविध सोपानों या चरणों का परिचय दीजिए।
13. अनुवाद की प्रक्रियागत स्थितियों का विवेचन कीजिए।
14. अनुवाद की प्रक्रियागत स्थितियों (अर्थयोग, अर्थहानि, अर्थांतरण और पुनःसर्जन) को समझाइए।
15. "अनुवाद पुनःसर्जन है।" स्पष्ट कीजिए।
16. अनुवाद के लिखित तथा मौखिक स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
17. वर्तमानकाल में मौखिक अनुवाद का महत्व सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
18. अनुवाद के उद्देश्यों पर विचार करते हुए आदर्श अनुवाद की विशेषताओं को समझाइए।
19. अनुवाद के विविध उद्देश्यों को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
20. अनुवादक के लिए किन गुणों की आवश्यकता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
21. सफल अनुवादक की योग्यता पर प्रकाश डालिए।
22. अनुवाद के विविध प्रकारों का परिचय दीजिए।
23. अनुवाद के प्रकारों का उल्लेख करते हुए गद्य-पद्य के आधार पर अनुवाद के प्रकारों का विवेचन कीजिए।
24. अनुवाद के प्रकारों का उल्लेख करते हुए प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद के प्रकारों का परिचय दीजिए।

25. शब्दानुवाद, भावानुवाद और रूपांतरण का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
26. शब्दानुवाद, छायानुवाद और भावानुवाद पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
27. अनुवाद कार्य में सहायक साधनों की चर्चा कीजिए।
28. अनुवाद कार्य में प्रयुक्त सहायक साधनों का परिचय दीजिए।
29. अनुवाद कार्य में सहायक साधनों की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
30. अनुवाद कार्य में कोश ग्रंथों का महत्व स्पष्ट कीजिए।
31. अनुवाद में लिप्यंतरण की आवश्यकता को विशद करते हुए उसकी समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
32. लिप्यंतरण का स्वरूप स्पष्ट करते हुए अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद में आने वाली लिप्यंतरण की समस्याओं की चर्चा कीजिए।
33. अनुवाद और भाषाविज्ञान के संबंध को स्पष्ट कीजिए।
34. अनुवाद और रूपविज्ञान के संबंध को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
35. अनुवाद और वाक्यविज्ञान के संबंध को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
36. अनुवाद और अर्थविज्ञान के संबंध को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
37. अनुवाद के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
38. सामाजिक-सांस्कृतिक साहित्य के अनुवाद की समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।
39. सामाजिक एवं सांस्कृतिक सामग्री का अनुवाद करते समय क्यों और कौन-सी सावधानी बरतनी पड़ती है?
40. रचनात्मक साहित्य के अनुवाद का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी समस्याओं का विवेचन कीजिए।
41. रचनात्मक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ और सीमाएँ स्पष्ट कीजिए।
42. वाणिज्य और व्यवसाय क्षेत्र की सामग्री के अनुवाद का स्वरूप बताते हुए उसकी समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
43. बैंकों में हिंदी अनुवाद की आवश्यकता को प्रतिपादित कीजिए।
44. बैंक तथा अन्य कार्यालयों में हिंदी अनुवाद की समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।
45. वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री के अनुवाद का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी आवश्यकता को समझाइए।
46. वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों के अनुवाद में उपस्थित होने वाली समस्याओं का परिचय दीजिए।
47. कंप्यूटर अनुवाद की आवश्यकता और सीमाओं पर प्रकाश डालिए।
48. कंप्यूटर अनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
49. मुहावरों के अनुवाद का स्वरूप बताकर उसमें आने वाली समस्याओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
50. मुहावरों का अनुवाद करते समय कौन-कौन-सी समस्याएँ आती हैं? उनका समाधान कैसे किया जा सकता है?

51. कहावतों (लोकोक्तियों) के अनुवाद का स्वरूप बताकर उसमें आने वाली समस्याओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
52. कहावतों का अनुवाद करते समय कौन-कौन-सी समस्याएँ आती हैं? उनका समाधान कैसे किया जा सकता है?
53. काव्यानुवाद का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
54. काव्यानुवाद में आने वाली समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।
55. अलंकारों के अनुवाद में आने वाली समस्याओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
56. नाटक के अनुवाद का स्वरूप बताकर उसमें आने वाली समस्याओं का सविस्तार विवेचन कीजिए।
57. अनुवाद की शैली के स्वरूप का विवेचन करते हुए उसकी विशेषताओं को बताइए।
58. अनुवाद में शैली विचार का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
59. दुभाषिए के कार्य का स्वरूप,आदर्श भाषांतरण के लिए आवश्यक बातें तथा उसकी सीमाएँ स्पष्ट कीजिए।
60. अनुवाद समीक्षा की आवश्यकता बताकर उसके स्वरूप का विवेचन कीजिए।
61. आदर्श अनुवाद की विशेषताओं पर सविस्तार प्रकाश डालिए।

टिप्पणियाँ :-

1. अनुवाद की परिभाषाएँ।
2. अनुवाद का स्वरूप।
3. अनुवाद का महत्व।
4. अनुवाद शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ।
5. अनुवाद की आवश्यकता।
6. अनुवाद : एक कला।
7. अनुवाद : कला या विज्ञान।
8. अनुवाद कला या शिल्प।
9. अनुवाद विज्ञान या शिल्प।
10. अनुवाद की उपयोगिता।
11. काव्यानुवाद।
12. छायानुवाद।
13. भावानुवाद।
14. कथानुवाद।
15. शब्दानुवाद।
16. अनुवाद के लिखित रूप का महत्व।
17. अनुवाद के लिखित रूप की उपयोगिता।
18. अनुवाद का मौखिक स्वरूप।
19. अनुवाद के मौखिक रूप की उपयोगिता।
20. अनुवादक की योग्यता।
21. अनुवादक के गुण।
22. अर्थयोग, अर्थहानि तथा अर्थांतरण।
23. अनुवाद में पुनःसर्जन।
24. सफल अनुवाद के तत्व।
25. अनुवाद कार्य में सहायक साधन।
26. अनुवाद कार्य में कोशों की सहायता।
27. अनुवाद और लिप्यंतरण।
28. लिप्यंतरण की आवश्यकता।

29. लिप्यंतरण की समस्याएँ।
30. अनुवाद और भाषाविज्ञान।
31. अनुवाद और रूपविज्ञान।
32. अनुवाद और वाक्यविज्ञान।
33. अनुवाद और अर्थविज्ञान।
34. अनुवाद का सामाजिक पक्ष।
35. अनुवाद का सांस्कृतिक पक्ष।
36. साहित्यिक अनुवाद।
37. रचनात्मक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ।
38. वाणिज्य और व्यवसाय क्षेत्र के अनुवाद का स्वरूप।
39. वाणिज्य और व्यवसाय क्षेत्र के अनुवाद की समस्याएँ।
40. कार्यालयों में हिंदी अनुवाद की समस्याएँ।
41. बैंक कार्यालयों में हिंदी अनुवाद।
42. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की आवश्यकता।
43. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की सीमाएँ।
44. कंप्यूटर अनुवाद।
45. कंप्यूटर अनुवाद की आवश्यकता।
46. कंप्यूटर अनुवाद की सीमाएँ।
47. कंप्यूटर अनुवाद की समस्याएँ।
48. मुहावरों का अनुवाद।
49. कहावतों का अनुवाद।
50. लोकोक्तियों का अनुवाद।
51. अलंकारों का अनुवाद।
52. अलंकारों के अनुवाद की समस्याएँ।
53. नाट्यानुवाद।
54. नाटकानुवाद की समस्याएँ।
55. अनुवाद में शैली का महत्व।
56. अनुवाद की शैली की विशेषताएँ।
57. अनुवाद समीक्षा की आवश्यकता।
58. दुभाषिए का महत्व।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेशकुमार
2. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. अनुवाद विज्ञान - सिद्धांत और अनुप्रयोग - संपादक - डॉ. नगेन्द्र
4. अनुवाद सिद्धांत और और प्रयोग - डॉ. जी. गोपीनाथन्
5. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ - डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी
6. अनुवाद भाषाएँ : समस्याएँ - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
7. अनुवाद और मशीनी अनुवाद - वृषभ प्रसाद जैन
8. अनुवाद विज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति - संपादक- मु. ब. शहा, डॉ. पीतांबर सरोदे
9. अनुवाद : विविध आयाम, डॉ. मा. गो. चतुर्वेदी, डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी
10. अनुवाद प्रक्रिया - डॉ. रीतारानी पालीवाल